THE BOOK WAS DRENCHED

TEXT FLY WITHIN THE BOOK ONLY

UNIVERSAL
LIBRARY
OU_182236
UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—881—5-8-74—15,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 81/N92B Accession No. H 280

Author

Title

This book should be returned on or before the date last marked below.

॥ श्रीः ॥

श्रीव्रजविहार ।

श्रीयुत महाराज मुकुन्द स्वामीजीके चरण-कमल-सेवी श्रीवृन्दावन निवासी परमानुरागी श्रीनारायणस्वामीजी कृत ।

दोहा—प्रकट भये पंजाबमें, सारस्वत द्विज वंश ।
संन्यासी व्रजरसगमन, सारग्रहण जिमि हंस ॥

जिसमें

श्रीकृष्णचंद्र-आनन्दकन्द श्रीव्रज... ...की
विचित्र लीलाएं वर्णित ...

जिसको

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बम्बई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेसमें

मुद्रितकर प्रसिद्ध किया ।

संवत् १९७९, शक १८४४.

इस पुस्तकका रजिस्टरी हक 'श्रीवेङ्कटेश्वर' यन्त्राध्यक्षने स्वाधीन रक्खा है.

हिंदी पुस्तकालय ... हैद्राबाद

धन्यवाद ।

श्रीवृन्दावन धाम पुण्यस्थल निवासी श्रीमन्महाराज श्रीकृष्णचरणारविंदपरायण भवभयनिस्तारण परिव्राजकाचार्य गोस्वामि श्रीनारायण स्वामि [illegible] धन्यवाद तनमनसे देते हैं कि जिन्होंने अपने [illegible] ल बुद्धिसे कलिग्रस्त [illegible] भागी यह "[illegible] ग्रंथ रत्नकर जगतमें [illegible] किया और अतुल यश कीर्तिके भागी हुये इसके अतिरिक्त पांचवार सहस्रों ग्रंथ छपाकर परम दयालु श्रीस्वामीजीने परमार्थ ही साधुसंतों और कृष्णकथामृताभिलाषियोंको समर्पण करदिये जिस किसी महात्माने इस अतुल प्रशंसनीय अनुपम ग्रंथ पानेके निमित्त स्वामीजीसे निवेदन किया उसीकी इच्छा पूर्ण की जब इस ग्रंथका माहात्म्य इतना बढ़ा कि, सभी भारतवर्षनिवासी कृष्णकथामृतअभिलाषी इस पुण्यग्रंथके दर्शनार्थ उत्सुक हुये और पानेकी इच्छा करने लगे तब श्रीस्वामीजी महाराजने अपने उदार स्वभावसे प्रसन्नतापूर्वक इस ग्रंथके छापनेका और रजिस्टरी करनेका हक हमको प्रदान करदिया हमने महाराजकी आज्ञा शिरोधार्य की आजकलके समयमें ऐसा दानशील और परोपकारी होना विशेष प्रशंसाका पात्र जगतमें दुर्लभ है हम सहर्ष अन्तःकरणसे ईश्वरसेयही मनातेहैं कि "जबतक रवि शशि तपहिं अकाशा । तब तक ग्रंथ करहि परकाशा" ॥

आपका कृपाकांक्षी—खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेंकटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्ष—बंबई.

श्रीनारायण स्वामी कर्ता ब्रजविहार श्रीवृन्दावन,

श्रीराधारमणो जयति ।

"श्रीश्री नारायणस्वामीजीकी जीवनी"

दोहा--प्रकट भये पञ्जाबमें, सारस्वत-द्विज बंश ।
संन्यासी ब्रजरसगमन, सार ग्रहण जिमि हंस ॥

श्रीनारायण स्वामीजीका जन्म लगभग संवत् वैक्रमीय १८८५ में रावलपिंडी (पञ्जाब) जिलेमें हुआ । यह सारस्वत ब्राह्मण थे । संवत् १९१६ के लगभग श्रीवृन्दावनधाममें आकर अपने श्रीलाला-बाबूजीके मंदिरमें दफ्तरकी नौकरी कर ली । दिनमें नौकरी बजाते और रात्रिके समयमें रासविलास देखते तथा सत्संगमें लगे रहते । उस समय गृहस्थ आश्रममें थे परन्तु साथमे स्त्री पुत्र नहीं रखते थे । सबसे पहिले आपने भगवत् सबन्धी गजलोंकी एक पुस्तक छपवायी है । रेखता और पद भी जब कभी रच लिया करते थे । श्रीमती महारानी टिकारीके मंदिरमें जो मडली रास करती थी उसके द्वारा ये अपने पदोंका अभिनय कराते थे । प्रेमरंग कुछ ऐसा चढ़ गया कि आपने नोकरी छोड़कर संन्यास ग्रहण कर लिया । इधर आपके पदोंकी ओर रसिक प्रेमियोंका प्रेम दिन दिन बढ़ने लगा । स्वामीजी नीरस अद्वैतवादी संन्यासी नहीं थे । आपने दंड आदि भी कभी धारण नहीं किया, आप केशीघाटपर खटपटियाबाबाके घेरेमें श्रीयमुनातटपर निवास करते थे । स्वामीजीका स्वभाव बडा सरल और दयालु था । पर-उपकारपर सदैव दृष्टि रखते थे । हृदयमे यह भाव सदा जागता रहता था कि किसी तरहसे जीव लालजीकी ओर लगे जिससे उसका कल्याण हो । श्यामसुन्दरका नाम लालजी रख लिया था, इसीसे जो कोई भी आपके पास आता सबको लालजी ही कहकर बोलते थे । श्रीमहाराजकी वाणी बड़ी मनोहर थी, मधुर वाणी होनेसे सबका चित्त मोह जाता था । आपके रचे हुए पदोमे भी ऐसा लालित्य था कि सुनते ही आदमी गद्गद हो जाता था जेसा कि श्रीयुत गोस्वामी शिरोमणि श्रीराधाचरणजी महाराज निज रचित नव-भक्तमालमे लिखते है:-

छप्पय-

अक्षर अर्थ अनूप अलङ्कारन सुअलंकृत ।
भाव हृदय गम्भीर अनुप्रासन गुन गुम्फित ॥
राग नवीन नवीन प्रवीननको मन मोहे ।
नृत्य करत गति भरत रासमंडल अति सोहे ॥
देश विदेश प्रचार श्रीवृन्दावन विश्राम ।
श्रीनारायणस्वामी नवल, (पद) रचना ललित ललाम ॥

जीव प्रति उपदेश साधन श्रीहरिनामका था । आप कहा करते थे कि भाई कलियुगमें केवल हरिनाम जपनेसे ही सिद्धि है, कलियुगी पापीजीवको सिवाय श्रीहरिनामके अन्य कोई भी साधन उद्धार करनेवाला नहीं । आपके उपदेशमें यह बात भी थी कि कभी घर बार छोड़कर ही नामका भजन करे सो नहीं किन्तु जो जैसे कारमें लग रहा हो उसीमें भजन करता रहे । एक दिन पञ्जाबका एक मनुष्य आपके दर्शनोंको आया तो आप पूछने लगे कि लालजी ! आप घरमें कौन धन्धा करते है ? उसने उत्तर दिया श्रीमहाराज ! मै बजाजी करता हूँ । इस पर आप बड़े प्रसन्न होकर बोले आपका काम तो बड़ा ही उत्तम है, कपड़ा फाड़ते गये और "श्रीराधाकृष्ण श्रीराधाकृष्ण" बोलते गये, आपके दोनों लोकोंका काम हो गया । इसी प्रकार जिस जीवको जैसी अवस्थामें देखते उसीमें उसका उद्धार साधन

श्रीस्वामीजी महाराजके चरणकमलानुरागी परमसेवक सेठगंगाप्रसाद रईस आगरा–व ठाकुर महाचंद रईस अमृतसर वालिये कृष्णकोट–लाला नाथूराम हेडमास्टर रईस रिवाड़ी बाबू भक्तराम रईस लाहोरने रसिक जनोंके आनंदार्थ चतुर्थ बार मुद्रित कराई ॥

श्रीस्वामीजी महाराजकी आज्ञानुसार चौधरी महादेव प्रसाद रईस प्रयागने पंचमबार छपवाई ॥

अब हजारों रसिकजनों और प्रेमियोंकी अत्यन्त चाहना देख कर श्रीस्वामीजी महाराजने उक्त सेवकोंसे पुस्तकें छपवा कर बाँटनेका प्रबन्ध न देखा–क्योंकि इस पुस्तककी चाहना प्रतिदिन जगत्में बढती जाती है–इसलिये हम सेवकोंने परमदयालु श्रीस्वामीजी महाराजसे प्रार्थना करके पुस्तकके छापने और बेंचनें का अधिकार खेमराज श्रीकृष्णदास "श्रीवेंकटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्ष मुम्बईको दिला दिया है आशा है कि, उक्त महाशय सब प्रकार सुंदर पुस्तक छाप-कर अभिलाषियोंका मनोरथ पूर्ण करेंगे ॥

सेवक–

बाबू–रामनारायण सिंह, बाबू भक्तराम व ठाकुर महाचंद.

श्रीः।

अथ श्रीब्रजविहारका सूचीपत्र प्रारंभ।

आशय.	पृष्ठ.	आशय.	पृष्ठ.
मंगलाचरण	७	युगल छद्म लीला ...	१२३
सिद्धान्त के पद ...	७	प्रथम अनुराग लीला	१३१
बधाई के भजन ...	१०	चौसर लीला ...	१४०
स्तुति यमलार्ज्जुन ...	१२	सखीखण्डिता लीला	१४५
माखन चोर लीला ...	१४	बंशी लीला ...	१५३
उराहनो लीला... ...	२०	निकुञ्ज हिंडोरा लीला	१५७
आँखमिचौनी लीला ...	२७	शयन लीला ...	१६१
उत्थापन लीला ...	३१	साँवरीछद्मझूलनलीला	१६५
पनघट लीला ...	३७	वन झूलन लीला ...	१६९
नवलसखी की दानलीला	४६	वसन्त लीला ...	१७७
छद्म दान लीला ...	५५	होरी लीला	१८२
श्रीदेवी पूजन लीला ...	६०	गली होरी लीला ...	१८७
नवदुलहिनि लीला ...	६४	छद्म होरी लीला ...	१९२
मानलीला दोहावली ...	६९	प्रेमपरीक्षा लीला ...	१९९
खण्डिता मानलीला ...	८५	रासपञ्चाध्यायी लीला	२०६
संभ्रम मान लीला ...	८९	सखीअनुरागलीला ...	२१४
रूपगर्विता मानलीला...	९६	साँझीलीला... ...	२१८
नवपनिहारी लीला ...	१०३	फुटकर पद	२१९
श्रीश्यामबिरहिनीलीला	११५	इति.	

जलधर बर श्यामं पूरणकामं
अतिसुखधामं दुःख हरम् ।
बृन्दावन क्रीडित असुरन पीडित
ब्रजतिय व्रीडित रसिकवरम् ॥
नूपुर ध्वनि चरणं मुनिमनहरणं
तारण तरणं तुष्टतरम् ।
भज श्रीगोपालं दीनदयालं
वचन रसालं ताप हरम् ॥ ३ ॥
राधा उर हारं रूप अपारं
नीर विहारं चीर हरम् ।
कुंचित वरकेशं मुकुट विशेषं
गोपसवेषं निगम वरम् ॥
कोमल अतिचरणं वेदविवरणं
जगदुद्धरणं मृदुलतरम् ।
भज श्रीगोपालं दीनदयालं
वचन रसालं तापहरम् ॥ ४ ॥
अलकन मुखराजत मन्मथलाजत
किंकिणि बाजत मधुर स्वरम् ।
वंशीकृत नादं हरत विषादं
युगवरपादं तिमिर हरम् ॥
भक्तन आधीनं चरित नवीनं
परम प्रवीणं प्रेम परम् ।

भज श्रीगोपालं दीनदयालं
वचन रसालं ताप हरम् ॥ ५ ॥
अति नृत्यप्रवीरे धीरसमीरे
यमुना तीरे रास करम् ।
कलगान अनूपं श्यामस्वरूपं
त्रिभुवन भूपं मोद भरम् ॥
राधागुणगायक ब्रजसुखदायक
सुरवर नायक वेणु धरम् ।
भज श्रीगोपालं दीनदयालं
वचन रसालं ताप हरम् ॥ ६ ॥
सुन्दर मृदुहासं विपिन विलासं
कुञ्ज निवासं केलि करम् ।
युवतीदृगअञ्जन जनमनरञ्जन
केशी भञ्जन भार हरम् ॥
भूषणनिजभवनं गजगतिगमनं
कालिय दमनं नृत्य करम् ।
भज श्रीगोपालं दीनदयालं
वचन रसालं ताप हरम् ॥ ७ ॥
गोरजमुखशोभित सुर [illegible]लोभित
मन्मथ क्षोभित हृदय परम् ।
गोपनसहभुञ्जे विपिननिकुञ्जे
वत्सनपुंजे दुहिण हरम् ॥

यहछबितारायण लखिनारायण
भयेपारायण अखिल नरम् ।
भज श्रीगोपालं दीनदयालं
वचन रसालं ताप हरम् ॥ ८ ॥

इति श्रीनारायण स्वामिजी विरचितं
श्रीगोपालाष्टकं सम्पूर्णम् ।

स्थान वृन्दावन केशीघाट छत्री.

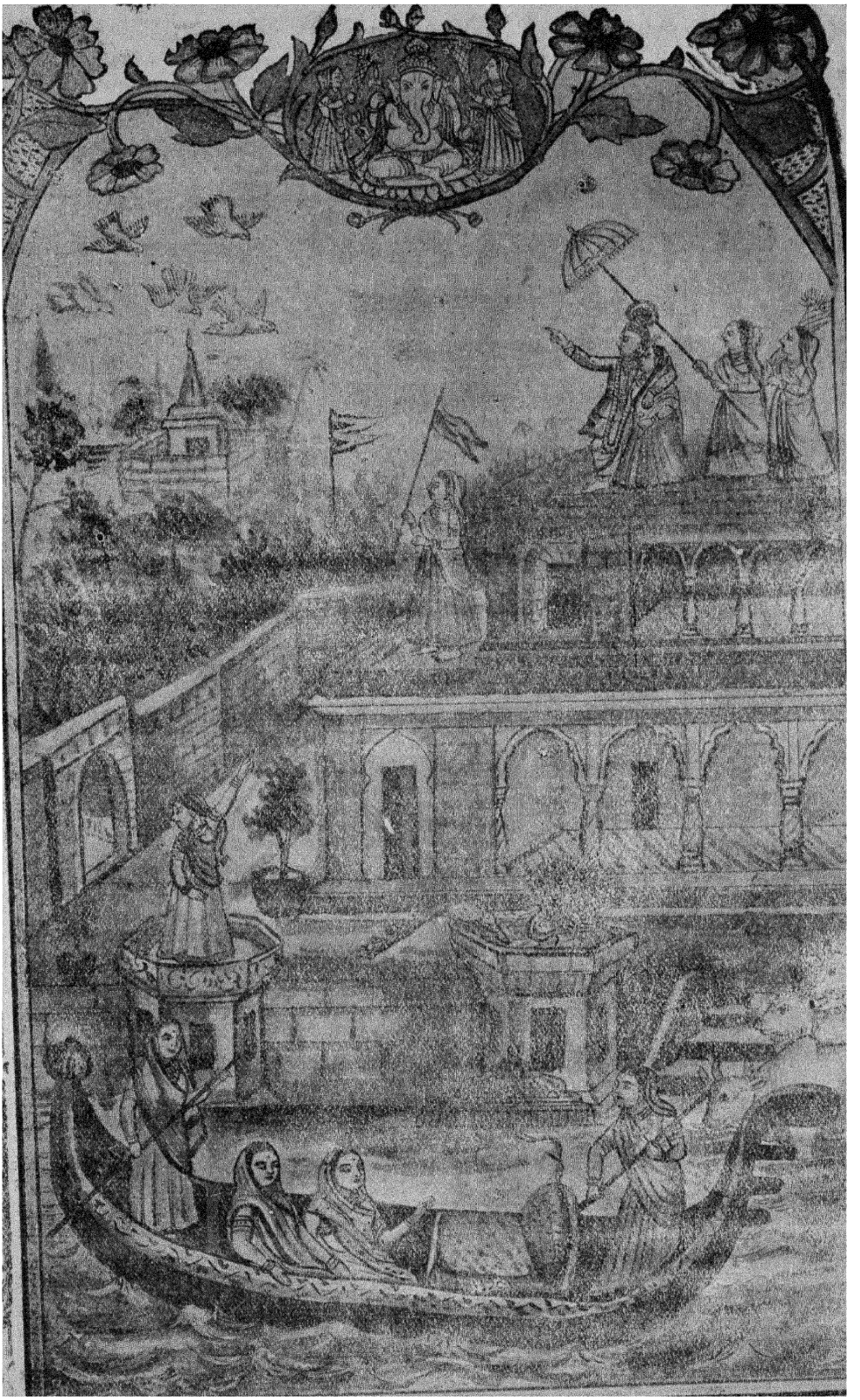

॥ श्रीः ॥

श्रीनिकुञ्जविहारिणे नमः ।

अथ श्रीब्रजविहार.

श्रीनारायण स्वामीजीकृत ।

राग शहानौ ।

वन्दौ श्रीगुरु चरण कमलवर ॥ आस्ताई ॥ जिन को नाम सकल मंगलनिधि, ध्यान धरत अघ रहत न पलभर ॥ परम उदार सार निगमागम, भक्ति ज्ञान की खान मनोहर ॥ नारायण मोहिं दीन जानिके, वास दियो वृन्दावन गहि कर १॥

राग शहानौ ।

धनि धनि श्रीवृन्दावन धाम ॥ आस्ताई ॥ जाकी महिमा बेद बखानत, सब विधि पूरण काम ॥ आश करत हैं जाकी रजकी, ब्रह्मादिक सुर ग्राम॥लाडिलीलाल जहाँ नितविहरत, रतिपति छवि अभिराम ॥ रसिकनको जीवन धन कहियत, मंगल आठों याम ॥ नारायण बिन कृपा जुगलवर, छिन न मिलै विश्राम ॥ २ ॥

राग शहानौ ।

वन्दों श्रीराधा ब्रजचन्द ॥ आस्ताई ॥ जिनके गुणगण अति अपार हैं, गावत वेद भेद बहु छन्द ॥ करत अनेक भाँति सों लीला, भक्तजनन मन देत अनंद ॥ एक वदनसों कहाँ लगि वरणें, नारायण मो सम मतिमंद ॥ ३ ॥

भजन कालिंगडा ।

करि मन जुगलचरण अनुराग ॥ आस्ताई ॥ बहुतदिवस तोहिं सोवत बीते, जागरे मूरख जाग ॥ बेमुखियन की संगतिसों तू, जैसे बनै त्यों भाग ॥ उनको साथ सदा दुखदाई, जिमिढिग कारेनाग ॥ है वैरी पुनि मीत ह्वै मारै, मृग को बरुवा राग ॥ या विधि तोहिं विषै दुख देंगे, चेतरे मन्द अभाग॥बस वृन्दावन भज राधावर,भूलिके अन्त न लाग ॥ नारायण बनि जायगी तेरी, अब तू भ्रमना त्याग ॥ ४ ॥

राग काफी ।

मन चेति नहीं पछितावैगो ॥ आस्ताई ॥ भजिलेरे श्रीनन्दनँदनको, जो तोहि पार लगावैगो ॥ झूठ सांचके व्यौहारन सों,कहाँ लग द्रव्य कमावैगो ॥ निशि वासर याहीचिन्तामें, रोरो के मरिजावैगो ॥ जिनके काजअनीति करतू,काउ काम नहिं आवैगो ॥ जब यमदूत तोहिं पकरेंगे,तब न कछू बस्या वैगो॥नारायण यामें मेरीमें, योंहीं उमरि गमावैगो ॥ अन्त समय ढिग आयगयो अब,फिरि कब हरिगुण गावैगो ॥५॥

कालिंगडा ।

मूरख छाँडि वृथा अभिमान ॥ आस्ताई ॥ औसर बीति चल्यो है तेरो, दोदिनको महमान ॥ भूप अनेक भये पृथिवी पै, रूप तेज बलवान॥कौन बचे या काल व्यालतें,मिटिगये नाम निशान ॥ धवल धाम धन गज रथ सेना, नारी चंद समान॥ अंत समय सबहीको तजिके,जाय बसे शमशान ॥ तजि सतसंग भ्रमत विषयनमें, जाविधि मरकट श्वान ॥ छिनिभरि बठि न सुमिरन कीनो, जासों होय कल्यान ॥

रेमन मूढ अन्त जिन भटकै,मेरो कह्योअब मान ॥ नारायण ब्रजराज कुँवर सों, वेगहि कि पहँचान ॥ ६ ॥

सोरठ-धीमाताल।

टेर सुनो ब्रजराज दुलारे॥आस्ताई॥दीन मलीन हीन शुभ गुण सों,आय परयोहूं द्वार तिहारे ॥ काम क्रोध अति कपट लोभ मद,सोइ माने निज प्रीतम प्यारे॥भ्रमत रह्यो इन सँग विषयन में, तो पद कमल न मैं उरधारे ॥ कौन कुकर्म किये नहिं मैंने, जोगये भूलि सो लिये उधारे॥ यहाँलों खेप भरी रचि पचिके, चकितरहे लखिके बनजारे ॥ अबतौ एकबेर कहौ हँसिके, आजहीसों तुम भये हमारे ॥ याही कृपाते नारायण की, वेग लगेगी नावकिनारे ॥ ७ ॥

कालिंगडा धीमाताल।

गोविंद गोविंद गोविंद भजरे ॥ आस्ताई॥आदि अनन्त सार निगमागम,जाहि नवत सुर नर मुनि अजरे ॥ दंभ कपट कामादि मान मद,इन वैरिनको तुरतहि तजरे॥नारायण मनकि सत संगति, काल व्यालते निर्भय गजरे ॥ ८ ॥

बिहाग धीमाताल।

करिमन नन्दनदनको ध्यान ॥ आस्ताई ॥ यह अवसर तोहिफिरि न मिलैगो, मेरो कह्यो अब मान ॥ घूँघर वारी अलकें मुखपर, कुण्डल झलकत कान ॥ नारायण अलसाने नैना; झूमत रूपनिधान ॥ ९ ॥

रागकालिंगडा तीनताल।

भजमन श्रीराधा गोपाल॥आस्ताई॥गोल कपोल अधर बिंबाफल, लोचन परम विशाल ॥ शुक नासा भौं दूज चन्द्रसम, अति सुन्दर हैं भाल॥ मुकुट चन्द्रिका शीश

लसतहै, घुघरारे बरबाल ॥ रतन जटित ण्डल कर कंकण, गल मुतियनकी माल ॥ पग नूपुर मणि खचित बजत जब, चलत हंसगति चाल ॥ गौर श्याम तन बसन अमोलिक, कर महँदीसों लाल ॥ मृदु मुसिक्यान मनोहर चितवन, बोलन अधिक रसाल ॥ कुंज भवनमें बैठ दोऊ जन, गावत अद्भुतख्याल ॥ नारायण या छबिको निरखत, पुनि पुनि होत निहाल ॥ १० ॥

कवित्त ।

चाहे योगकरि भ्रुकुटीके मध्य ध्यान धरि, चाहे नाम रूप मिथ्या जानिके निहारलै ॥ निर्गुण निर्भय निराकार ज्योति व्यापरह्यो, ऐसो तत्त्वज्ञान निज मनमें तू धारलै ॥ नारायण अपने को आपही बखान करि, मोतें वह भिन्न नहीं याविधि पुकारलै ॥ जौलों तोहिं नन्दको कुमार नहिं दृष्टि परै; तब लों तू भले बैठि ब्रह्मको विचारिलै ॥ ११ ॥

इति श्रीपदसिद्धान्त समाप्त ॥

अथ बधाईके भजन ।

ध्रुपद सारङ्ग ।

आजतौ बधाई माई भवन भवन बाजि रही, महाराज दशरथ गृह प्रगटे सुखधाम॥आस्ताई॥रनवासे अति आनन्द, निरखि वदन अवधचन्द, पुनिपुनि उर लावत, सुख पावत सब बाम ॥ पुरजन मनअति उमंग, जहांतहां ह्वै राग रंग, देत ना प्रतीत बीतजात अष्टयाम॥विप्र करत वेदगान, पावत सनमान दान, नारायण लोगनके पूरण भये काम ॥ १ ॥

जँगलेका जिला ।

आज अवधपुरी आनन्द छायो ॥ आस्ताई ॥ घर घर मंगलाचार बधाई, कौशल्या रानी सुत जायो ॥ शुभ नक्षत्र पुनर्वसु नौमी, चैत्रमास सब भाँति सुहायो ॥ भौमवार बर मध्य दिवसके, श्रीरघुवीर जनम तब पायो ॥ निगमागम जाकी महिमा को, गावत गावत पार न पायो ॥सो महाराज काज भक्तन के, नृप दशरथको कुँवर कहायो ॥ जाके दरशन को सुर तरसें, ताहि धायलै कंठ लगायो॥ नारायण अपनी भक्ती को, जगमें प्रगट प्रभाव दिखायो ॥ २ ॥

बधाई जँगलेका जिला ।

आज महरि घर देउरी बधाई ॥ आस्ताई ॥ शुभ लक्षण सुन्दर सुतजायो बड़ भागिनि है यसुमति माई ॥ वृद्ध वधू सब जुरि मिलि आईं,यथायोग्य कुलरीति कराई ॥दानमान विप्रनको दीनों, मणि मुक्ता पट भूषणताई ॥ मृगनयनी कल कोकिलबयनी, करि शृँगार बैठीं अँगनाई ॥ लैलै नामनंद यशुमति को, गावत गारी परम सुहाई ॥ ध्वज पताक तोरण मणिजाला, द्वारन बन्दनवार बँधाई ॥ नारायण ब्रज आनँ छायो, प्रगट भये जहां कुँवर कन्हाई ॥ ३ ॥

बधाई ध्रुपद ।

धन्य धन्य तू हैरानी कियो उपकार घनो, ऐसो सुत जा यो जासों जगतहू तरैगो ॥ आस्ताई ॥ जाको मुख निरखत ही दूरहोत कालरोग, कौतुक कि गिरिवर निज करपै लै धरै गो ॥ पूतना प्रलम्ब तृणावर्त्त केशि कंस आदि, महाबीर असुरन के प्राणन हरैगो ॥नारायण ऐसे कुछ परेहैं नक्षत्रयाके, सुरपति को गर्व छिन में दूरि सब करैगो ॥ ४ ॥

बधाई राग शहानी ।

देखि चरित मोहि अचरजआवै ॥ आस्ताई ॥ जो कर्त्ता जगपालक हर्त्ता, सो अब नंद को लाल कहावै ॥ बिन कर चरण श्रवण नासा दृग, नेति नेति जाको श्रुति गावै ॥ ताकूँ पकरि महरि अँगुरीतें, आँगन में चलिबो सिखरावै ॥ ब्रह्म अनादि अलक्ष अगोचर, ज्योति अजन्म अनंत कहावै ॥ सो शशि वदन सदन शोभा को, नँदरानीनिज गोद खिलावै॥ जाके डर डोलत नभ धरनी, काल कराल सदाभय पावै ॥ सो ब्रजराज आज जननी की, भौंह चढ़ीको निरख डरावै ॥ जाके सुमरणते जीवन को, भवबंधन छिन में छुटि जावै ॥ सोई आज बँध्यो ऊखलते, निरखन को सगरी ब्रज धावै ॥ पूरण काम क्षीरसागर पति, माँगि माँगि दधि माखन खावै ॥ भक्ताधीन सदा नारायण, प्रेम की महिमा प्रगट दिखावै ॥ ९ ॥

इति श्रीबधाईके भजन सम्पूर्ण ॥

अथ स्तुति यमलार्जुनकी ।

गातका छंद ।

पारब्रह्म परमेश्वर अवगति, भवन चतुर्दश नाथ हरी ॥
जब जब भीर परी सतन पै, प्रगट होय प्रतिपाल करी ॥
आदि अंत सब के तुम स्वामी, ब्रह्मादिक अनुगामी ॥
कृष्ण नमामि नमामि नमामी,दया सिंधु अन्तर यामी ॥
जाको ध्यान धरत योगी जन, शेष पत नित नाम नये ॥
सो भवतारन दुष्ट निवारण, संतन कारण प्रकट भये ॥

जिनको नाम सुनत यम डरपत, थरथर काँपत काल हियो॥
तिनको पकरि नंद की रानी, ऊखल सो लै बाँधि दियो॥
जैं दुख मोचन पंकजलोचन, उपमा जाय न कहत बनी॥
जैं सुखसागर सब गुण आगर, शोभा अंग अनंग घनी॥

नारदको हम अति गुण मानें, शाप नहीं वरदान दियो॥
जा कारणते प्रभू आपने दर्शन दियो सनाथ कियो॥
जो हरहूके ध्यान न आवत, अपर अमर हैं किहि लेखे॥
सो हरि प्रगट नंदके आँगन, ऊखल संग बँधे देखे॥

जिनकी पदरजको सुर तरसें, अगम अगोचर दनुजारी॥
त्राहि त्राहि प्रणतारत भंजन, जन मन रंजन सुखकारी॥
तुमरी माया जीव भुलानो किहि बिधि नाथ तुमें जाने॥
तुमही कृपा करौ जब स्वामी, तबहीं तुमको पहिंचाने॥

हे मुकुंद मधुसूदन श्रीपति, कृपानिवास कृपा कीजै॥
इन चरणन में सदा रहै मन, यह वरदान हमैं दीज॥
जैकेशव जै अधम उधारण, दयासिंधु हरि नित्य मगन॥
जै सुन्दर ब्रजराज शशीमुख, सदा बसो मम हृदय गगन॥

रसना नित तुम्हरे गुणगावैं, श्रवण कथा सुनि मोद भरैं॥
कर नित करैं तुम्हारी सेवा, नैन संत जन दरश करैं॥
नेम धर्म व्रत जप तप संयम, योग यज्ञ आचार करैं॥
नारायण विन भक्ति न रीझौ वेद संत सब साख भरैं १३॥

इति श्रीयमलार्जुन की स्तुति समाप्ता॥

अथ माखन चोर लीला प्रारंभः ।

(समाजी वचन)

दोहा–नारायण इक ब्रजवधू, चली न्हायबे प्रात ॥
ढिग की सखी बुलायके, कही तासु यह बात ॥१॥
दोहा–बीर यहांपै तनक तू, बैठि चौकसी काज ॥
मेरे घर आवे नहीं, चोरना यो शिरताज ॥ २ ॥

कालिंगडा ।

यमुना न्हान चली ब्रजगोरी ॥ आस्ताई ॥ सजनी एक चौकसी कारन, बैठारा निज घर की पौरी ॥ ताके भवन धसे मनमोहन, कियो चहत माखनकी चोरी ॥ रूप ठगौरी डारि सखीप, आप गये जहाँ धरी कमोरी ॥ कछु खांयो कछु भूमि गिरायो, आँगन माँहि मटुकिया फोरी ॥ नारायण या बिधि कुचाल करि, भाजि गये निधिवन की खोरी ॥ ३ ॥

दोहा–जब द्वारे आई सखी, छींक भई ततकाल ॥
पुनि आँगनमें जायके, देखी अधिक कुचाल ॥४॥

सखी वचन सखी प्रति परस्पर ।

कालिंगडा ।

किन मेरो माखन बिखरायो ॥ आस्ताई ॥ फूटी परी मटुकिया आँगन, कहा भयो भीतर को आयो । मैं निज हितू जानके तोको, रखवारी करिबे बैठायो । अरी भटू तुमहूँ रहि सोवत, भलो चोरते भवन रखायो ॥ आवत छींक

भई मो सन्मुख, उन अपनो फल प्रगट दिखायो ॥ नारायण तैं प्रेमिनि बनिके मेरो घर सबरो लुटवायो ॥ ५ ॥

सखीको उत्तर ।

आसावरी ।

वाकी चौकसी कैसे करूं मैं ना जानूं कितसों वह आवै॥ आस्ताई ॥ अचक अचक पग धरत द्वारपै नूपुर की धुनि होन न पावै ॥ उझकि उझकि इत उतमें झाँकिके, फिर सैनन निज सखा बुलावै ॥ छींके धरी कमोरी माखन, अँगुरी सो पुनि तिन्हें बतावै ॥ वस्तु चोर हो ताकूं पकरे, चाहै जितौ बलवान कहावै ॥ नारायण वा चितके चोर सों, काहू कीन कछू बसियावै ॥ ६ ॥

पुनि सखीवचन ।

दोहा–तोहि चतुर जानूं जबी, चोर न जावे भाज ।
हाथ पकरि पुनि लैचलें, यशुमतिके ढिगआज ॥७॥

समाजी वचन ।

दोहा–कुलदेवी पूजन चलीं, इतनी कहि ब्रजनार ॥
पुनि ताके घरमें गये, चोरनके सरदार ॥ ८ ॥

दोहा–झट किंवारकी ओटते, निकसि नबेली बाल॥
लपकि झपकि निज अंक भरि,पकरि लिये गोपाल॥९॥

सखी वचन लालजी प्रति ।

राग भैरव ।

मोहन अब कित भाजिके जैहौ ॥ आस्ताई ॥ बहुत अनीति करौ तुम ब्रज में, आज सबी फल पैहौ ॥

राखूंगी तोहि पकरि भवन में, कौन सहाय बुलैहौ ॥ चंचल चपल चोर चूड़ामणि, पुनि माखन न चुरैहौ । नाच माय कछु करौ वीनती, गहरी भेट चढैहौ ॥ नारायण जबही छूटौगे, फिर न टेढ़े बत रैहौ ॥ १० ॥

लालजी वचन सखी प्रति ।

कालिंगड़ा ।

सखी मोहि चोर चोर मति भाख ॥ आस्ताई ॥ तुही कहै मेरौ दधि नीकौ, तनक श्याम लै चाख ॥ निशि दिन मेरे नन्द-बबा घर, तोसी आवत लाख ॥ मैं चोरीको नाम न जानूं, बूझि ले मेरी साख॥ मोहिं कहा तेरे गोरस सों, चाहे गैल में नाख ॥ नारायण जो हमें देय तू, सो अपने घर राख ॥११॥

सखी वचन लालजी प्रति ।

राग खट ।

अब तुम कहां जावौगे भाज ॥ आस्ताई ॥ चोरी करत फिरत नित घर घर, तनक न आवत लाज ॥ बांधूंगी मैं हाथ तिहारे, भले मिले हौ आज ॥ नारायण निज भवन होयगो नन्दराय को राज ॥ १२ ॥

बातक ।

यों कहके सखी श्रीलालजी के हाथ बांधवेलगी, तब लालजी बोले, अरी तोहि हाथ बांधवौंऊ नाहिं आवै; देख हम तोहि सिखावैं ॥ १३ ॥

दोहा—छैल छली छल कपटसों, बाँधि सखी के हाथ ॥
माखन ताहि दिखायके, जेंवत ग्वालों साथ ॥१४॥

दोहा–गिरितनयाकूं पूजिके, घर आई ब्रजनार।
मगन भई निज हीय में, कौतुक नयो निहार ॥ १५ ॥

सखी वचन लालजी प्रति।

कालिंगडा।

आज यहां कैसे तुमआये ॥ आस्ताई ॥ सूने भवन धसत नहिं डरपत, ऐसे निडर कौन के जाये ॥ छींके सो मटुकी उतारते, नेक नहीं मन में सकुचाये ॥ भले सपूत भये निज कुल में, लाज शरम के खोज मिटाये ॥ काहेको यह ग्वाल बाल सब, और पास तुमने बैठाये॥ नारायण याही विधि घर घर, जेंवत हो नित माल पराये ॥ १६ ॥

लालजी वचन।

राग खम्माच।

मैं कहा कहूं कछु कहीं न जावै ॥ आस्ताई ॥ऐसो समौ कबू नहिं देख्यो,कीजै भलौ बुराई आवै॥ तो छींके यक चढी बिलैया, माखन मटकी भूमि गिरावै ॥ ताहि बिडारि करूं रखवारी, याहूपै मोहिं दोष लगावै ॥ यही समझकै सखा बुलाये, मति कहूं ग्वालिन फैल मचावै॥ नारायण यह साख भरेंगे, घर बुलायके चोर बनावै ॥ १७ ॥

वार्त्तिक।

यह वचन रसीले सुनिके सखी मुसक्याय गई, अरु शोभा धाम की शोभा निरखिके बोली, बलिहार या चतुराई पै, तब आप बोले अरी सखी ! घबरावै क्यों है अभी तौ कई बेर बलिहार होयगी ॥ १८ ॥

दोहा–नारायण मैं सत्य कहुं, विना कपट छलछंद ।
ये लीला जो नित पढैं, पावै परमानन्द ॥ १९ ॥
इति श्रीमाखनचोर लीला श्रीनारायण स्वामीजीकृत समाप्ता ॥ १॥

अथ उराहनो लीला प्रारंभः ।

(समाजी वचन.)

दोहा–विधु वदन शोभा घनी, मृगनैनी वरबाम ।
सहजहिं नन्द भवन गईं, देखे सुंदरश्याम ॥ १ ॥
दोहा–निरखि रूप अति मुदितमन, घर आईं ब्रजनारि ।
अपर सखी बूझन लगी, याकी दशा निहारि ॥ २ ॥
दोहा–अरी सखी तू प्रात सों, नहिं भाषत मुख बैन ।
कियो न कछु शृंगार तन, दियो न कारज नैन ॥ ३ ॥

उत्तर सखीको सखी प्रति ।

राग सिन्दूरा ।

एरी मैं तो सहज सुभाव गई नन्दजू के, तहां देख्यो सुख और ॥ आस्ताई ॥ इकले श्याम नईसी धजमों, ठाढे भवन की पौर ॥ रतन शृंगार बहार हँसन की, माथे केशर खौर ॥ नारायण सो छबि दृग छाई, रही न काजर ठौर ॥ ४ ॥

वार्त्तिक ।

यह सुनिके सखी आपसमें कहने लगीं ॥ ५ ॥

राग परज ।

अब नन्द भवन में चलौ री बीर ॥ आस्ताई ॥ साँवरे कन्हाई बिन कल न परत, घरी पल छिन मन न धरत है धीर ॥ दृग अति अकुलावे, नहिं पलक लगावें, पुनि उतही

को धावें, परी इनपै भीर ॥ तन सुरत विसारी, लगी चटपटी भारी, नारायण हमारी, को जानत पीर ॥ ६ ॥
दोहा—जुरि मिलकें पुनि सब गईं, नवगोरी ब्रज बाल ॥
मिस उराहनो करि सुघर, निरखत मोहन लाल ॥७॥

सखी वचन यशोदा प्रति।

खम्माचका जिला।

हमारी पुकार सुनों नन्दरानी ॥ आस्ताई ॥ तेरो छैल गैल नित रोकै, नयो भयो दधि दानी ॥ और कुचाल करत जो हमसों, सो हम कहत लजानी ॥ नारायण ताकूं तुम बर जो, बोलत अटपटि बानी ॥ ८ ॥

अपर सखी वचन यशोदा प्रति।

जोगिया आसावरी।

हमारो न्याव करो महतारी ॥ आस्ताई ॥ या ब्रज में प्रगट्यो उतपाती, तेरो छैल विहारी ॥ विना बात हमसों नित अटकै, ढीठ बड़ो है भारी ॥ अचरा झटकि पटकि शिर गागरि, पुनि ठाढो दे गारी ॥ तुम वाको घर में नहिं बरजति, कुल की रीति बिगारी ॥ नारायण कछु जान परत है, एक सलाह तिहारी ॥ ९ ॥

अपर सखी वचन यशोदा प्रति।

ब्रज में कैसे बसें री माई ॥ आस्ताई ॥ जहाँ नित प्रति उत्पात करत है, तेरो कुँवर कन्हाई ॥ भोरही मैं सोवत अंगना में, अचकही आय जगाई ॥ उठरी सखी तोहि द्वारे पै, टेरत कोउ लुगाई ॥ मैं तौ द्वार पै देखिवे निकसी, कोई कहां ते आई ॥ पीछे ते इन घर भीतर सों, सांकर तुरत लगाई ॥ मैं

बाहर ये भवन माहिं मन, मानत धूम मचाई ॥ बासन फोरि तोरि सब छीके, दधि गोरस ढरकाई ॥ यह कौतुक सुनिके ब्रजवनिता, निरखतको सब धाईं ॥ हँसि हँसिके मिलि बूझत मोसों, कहा लीला फैलाई ॥ भाँति भाँति की बोली बोलत, जो जाके मन भाई ॥ मैं अपने मन कहूं नारायण, यह कहा कुमति कमाई ॥ १० ॥

यशोदा वचन ।

राग ठोड़ी जौनपुरी ।

ग्वालिन झूठ उराहनो लाई ॥ आस्ताई ॥ कब तेरे घर गयो साँवरो, कब गोरस ढरकाई ॥ याही मिस मेरे मोहन को, तू अब देखन आई ॥ नारायण तेरे मनकी मैं, जानि गई चतुराई ॥ ११ ॥

सखी वचन यशोदा प्रति ।

राग बिलावल ।

यशुमति तेरी भली बनि आई ॥ आस्ताई ॥ पूत सपूत प्रगट भयो जाको, नित उठ करत कमाई ॥ भूषण चीर चुराय हमारे, मानत अधिक बडाई ॥ घर में लाय तोहि पहरावत, भलौ कुँवर सुखदाई ॥ घाट बाट नित माँगत डोलै, निजकुल रीति मिटाई ॥ नारायण सोई करै कौतुक, जो तैं पट्टीपढाई १२ ॥

यशोदा वचन सखी प्रति ।

राग ठोडी जौनपुरी ।

ग्वालिन रूप के मद इतरावै ॥ आस्ताई ॥ तूअति तरुण मेरो सुत बालक नाहक, दोष लगावै ॥ तुही नई भई जोबन वारी नेक लाज नहिं आवै ॥ नारायण अब जा घर अपने, क्यों तू बात बनावै ॥ १३ ॥

सखी वचन यशोदा प्रति।

कालिंगडा।

ब्रजरानी तैंने भलौ सुत जायो ॥ आस्ताई ॥ घर बाहर नित अटकत हमसों; करत जो जियमें भायो ॥ मेरे भवनमें आय अचानक, निज पट आप दुरायो ॥ द्वार निकसि कहि याही चोरटी, मेरो वसन चुरायो ॥ पार परोसिन देखि हँसे सब, मों मन अति सकुचायो ॥ नारायण तुमहीं रहौ ब्रज में, हम बसिबो भरि पायो ॥ १४ ॥

यशोदा वचन सखी प्रति।

खम्माच का जिला।

मेरे सुत पीछे क्यों परीं ब्रजनारियां ॥ आस्ताई ॥ कोऊ तो नचावै, कोऊ चोर लै बनावै, नित झूंठही लगावै, दोष देवें मिल गारियां ॥ दौरी दौरी आवो, नहिं नेक सकुचावो, तुम रूप गरवीली बडे गोप की कुमारियां ॥ कहा मेरो लाल कहां तुम नारायण, अचरज आवै बातें सुनिके तिहारियां १५॥

सखी वचन।

दोहा—नँद रानी तू धन्य है, धन्य तिहारो लाल।
हमहूं ब्रज में धन्य हैं, जो नित सहें कुचाल ॥ १६ ॥

वार्तिक।

भलौ न्याव कियो।

नन्दरानीको बचन लाल जी प्रति।

राग खम्माच।

मोहन तू इतनी कही मान ॥ आस्ताई॥ बाहर मति उरझै काहू सों, मेरे जीवन प्रान ॥ ब्रज वनिता तेरे गुन मोसों नितप्रति

करत बखान ॥ मेरो कह्यो तु सांच न माने, सुनि लै अपने कान ॥ इन बातन सों निंदा उपजै, ठकुरायत में हान ॥ नारायण सुत बडे बाप के, तजि दै ऐसी बान ॥ १७ ॥

लालजी वचन मैया प्रति ।

झंझोटी तीनताला ।

जननी तू इनकी मति माने ॥ आस्ताई ॥ जाविध तू होवै रिस मोपै, सो यह कौतुक ठाने ॥ धोखे सो मोहिं निकट बोलके, उर लगाय लियो याने ॥ जबहि अचक आय पीछेते मुख चूमन कियो वाने ॥ खंजन दृग चंचल चपलाई, अजहुँ कुटिल भौं ताने ॥ नारायण जैसी बे आप हैं । तैसों और को जानें ॥ १८ ॥

यशोदा वचन लालजी प्रति ।

दोहा–लाल कुचाल न तजत तू, समझायो बहुबार ।
चोर कहावै आपको, ह्वैके राजकुमार ॥ १९ ॥

लालजी वचन मैया प्रति ।

झंझोटी तीनताला ।

मैया यह झूंठही दोष लगावैं ॥ आस्ताई ॥ बूझलै मेरे सखा संगके, जो तोहि सांच न आवै ॥ भवन रहूँ तौ तुही कहैगी, गौ चारन नहिं जावै ॥ जो जाऊं तौ यह मग छेडैं, फेर उराहनो लावै ॥ त्रिया चरित्र रचै ढिग तेरे, तोरके हार दिखावे ॥ तू जननी मेरी अति भोरी, याके कहे पतिआवै ॥ कित गजराज कहां मृग छौना, अनगढ मेल मिलावै ॥ नारायण मोहन मुख बातें, सुनि यशुमति मुसिक्यावै ॥ २० ॥

यशोदाजी वचन सखीप्रति।

राग मल्हार।

देतउराहनो लाज न आई॥आस्ताई॥ मेरो लाल ब्रज भर में भोरो, नेक नहीं जानत चतुराई॥ सुनि यशुमति के वचन हँसीं सब, निज निज भवन चलीं हरखाई॥ नारायण लखि चरित श्याम के, ब्रह्मादिक की मति बौराई॥ २१॥

दोहा—नारायण जो प्रीति सों, यह लीला सुनि लेत।
ताको सुन्दर साँवरो, धाम आपनो देत॥ २२॥

इति श्रीउराहनो लीला श्रीनारायण स्वामीजी कृत समाप्ता॥२॥

अथ आँखमिचौनी लीला प्रारंभः।

(लालजीको वचन.)

राग खट।

हलधर के कांधे पै कर धर यों बोले गोपाल॥ आस्ताई॥ बलदाऊ मेरी कही मानो, टेर लेउ सब ग्वाल॥ गोवर्द्धन की सुभग तरहटी, सघन कदम्ब तमाल॥ कुहकत मोर भूमि हरियाली, भरे मधुर जल ताल॥ रुचिसों तहां चरैंगी गैय्या, देंगी दूध विशाल॥ नारायण इत हम तुम खेलें, आँखमिचौनी ख्याल॥ १॥

दाऊजी वचन।

राग भैरव।

यह बात भली कही लाल॥ आस्ताई॥ आवौरे मिल सखा हमारे, गायनके चरवाल॥ निज निज धेनु लिवाय चलौ अब, जहाँ कहत गोपाल॥ नारायण हलधरके मुख सों, सुन हरषे सब ग्वाल॥ २॥

वार्तिक।

सखा आपसमें बोले, अरे भैया! यह सलाह कन्हैयाने अच्छी बताई, वेग चलौ, फिर वा ठौर प जायके गैया तौ चरवे छोड दई और आप सब मिलके आँखमिचौनी खेलवे लगे ॥ ३ ॥

समाजी वचन।

कालिंगड ।

आँखमिचौनी खेलें दोऊ भाई ॥ आस्ताई ॥ भाजत में बाजत पग नूपुर, मुख पर श्रम बिन्दू छबि छाई ॥ खेलत सखा परस्पर पकरत, हलधर के जियमें कछु आई॥ बेरिबेरि हरिही को छूवत, निज मन खीजत कुँवर कन्हाई ॥ रिस ह्वैके पुनि गये मात ढिग, अँसुवन भरि सब बात सुनाई॥नारायण मोसों बल भैया, राखत आंट ये कौन भलाई ॥ ४ ॥

यशोदा वचन लालजी प्रति।

राग आसावरी ।

तुम उदास जिन होवो मेरे खेलौ याही ठौर ॥ आस्ताई ॥ हलधर को घर धसन न दूंगी, ढ़ीठन को शिर मौर ॥ तेरे काज मनोहर गैया, आज लई है और ॥ नारायण चलि तोहि दिखाऊं, बँधी भीतरी पौर ॥ ५ ॥

वार्त्तिक ।

ये वचन जननीमुख सुनके, अति उमंगसो लालजी मैया को अँगुरी पकड़ जब पौरीमें जायके गैया कू देख्यो–तब आप बोले–अरी मैया! यह गैया तो बड़ी सुंदरहै और दूध भी घनों देयगी–तब जननी लाल मुख चूमके बोली–अरे लाला! बाबाने तेरे ही लिये मँगवाई है–दाऊको

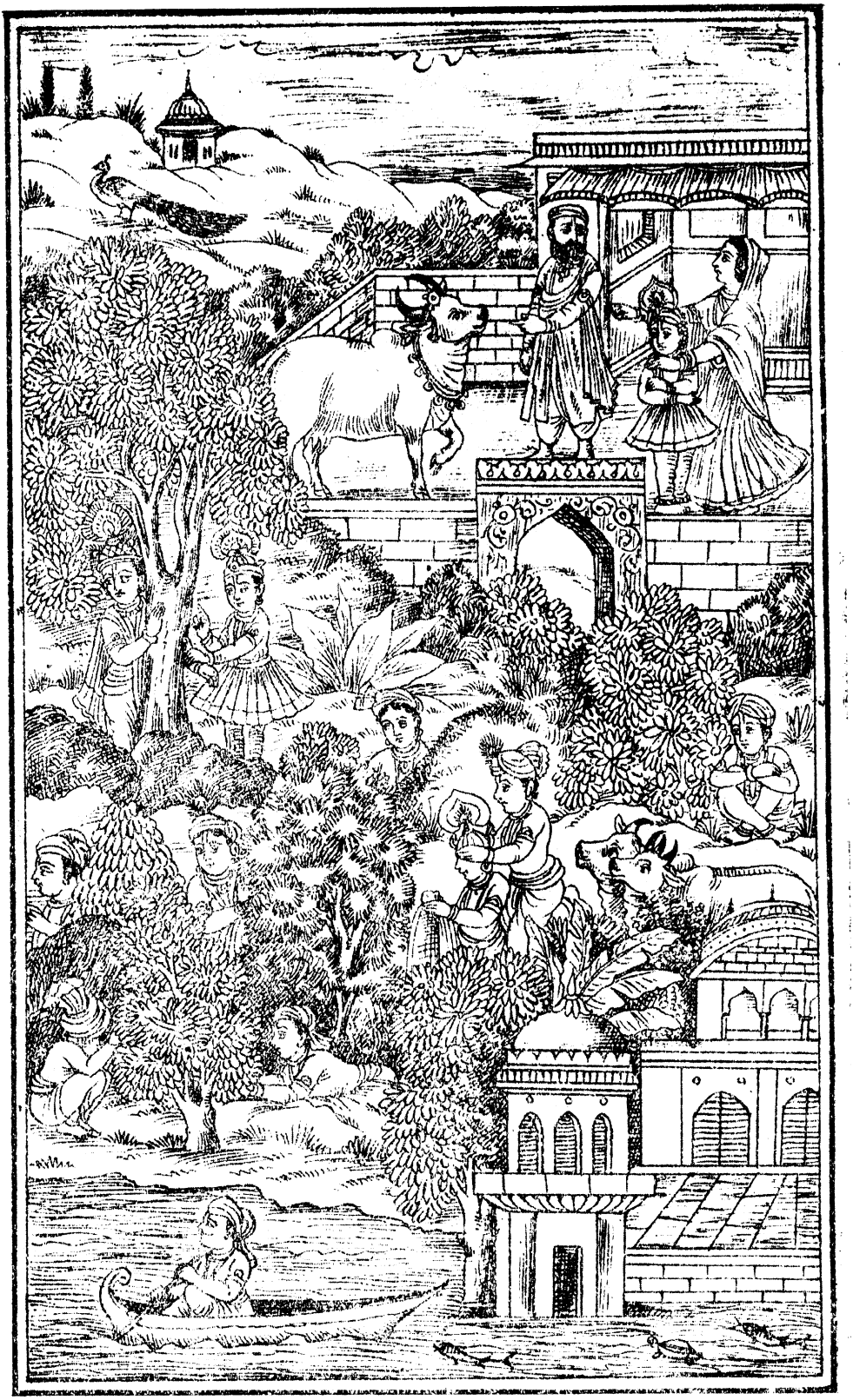

यामें कछु साझोनहीं. तब आप बोले--याको नेक सों दूध दाऊको भी दियो करेंगे--तब नंदरानी हँसके बोली--लाला! तेरी राजी ॥ ६ ॥

दोहा—ताही छिन श्रीनंदजू, आये भवन मँझार ॥
निजगोदी ले लाल कूं, बाढ्यो हरष अपार ॥७॥
लीला पूरण ब्रह्मकी, भक्तजननके प्रान ।
नारायण जे दुष्टजन, करें तर्कना आन ॥ ८ ॥

इति श्रीआँखमिचौनी लीला श्रीनारायण स्वामीजी कृत समाप्ता॥३॥

अथ श्रीलालजीकी उत्थापनलीला ।

यशोदा वचन ।

राग रामकली ।

लालन अब भोर भयो जागो बलिहारी ॥ आस्ताई ॥ घर घर उठि दधि बिलोवें ब्रजकी नवनारी ॥ मैं तिहारे काज रखी लौनी धर न्यारी ॥ नारायण वनकूं चलीं धेनुहू हमारी ॥ १ ॥

समाजी वचन ।

राग खट ।

एक सखी उठि बडे भोरही नंदरायके भवन गई ॥ आस्ताई ॥ ताही समय जगे मनमोहन, आलसवश मुख कांति नई ॥ नैन उनींदे झुमत पलकें शिथिल वचन अति मोद मई ॥ नारायण यह छबि लखि ग्वालिन, मनों भीतको चित्र भई ॥ २ ॥

सखी वचन नवगोपवधू प्रति ।

ध्रुपद राग भैरों ।

आज सखी प्रातकाल,दृग मीडत जगे लाल,रूपके विशाल, सिंधु गुणनके जहाज ॥ आस्ताई ॥ कुंडलसों उरझी माल, मुखपर अलकनको जाल, भई मैं निहाल, निरखि शोभाको समाज ॥ आलस वश झुकत ग्रीव, कबहूं अँगडाई लेत, उपमा सम देत, मोंहिं आवत है लाज ॥ नारायण यशुमति ढिग हों तो गई बात कहन, याही में भयेरी, एक पंथ दोऊ काज ॥ ३ ॥

वार्तिक ।

नवगोपवधू बोली हे सखी ! उनकूं देखिके मेरे नेत्र कब सफल होंयगे ? थोरी देर पीछे लालजीहू बाहर पधारे ॥ ४ ॥

समाजी वचन ।

कालिंगडा ३

भवनते निकसे नन्दकुमार ॥ आस्ताई ॥ पचरंगी चीरा शिर सोहै, चितवनपै बालहार ॥ काननमें मुतियनको चौकडा गल फूलनको हार ॥ नारायण जे आपही सुन्दर, तिनकूं कहा शृंगार ॥ ५ ॥

समाजी वचन ।

दोहा–गोपवधू के भवन ढिग, जब आये गोपाल ।
तब बोली निज सखी सों, गोपवधूटी बाल ॥ ६ ॥

गोपवधू वचन ।

राग खट ।

देखि सखी छैल छबीलौ, प्रात समय इतमों को आवै ॥ आस्ताई ॥ कमल समान बडे दृग जाके, श्याम सलोना मृदु

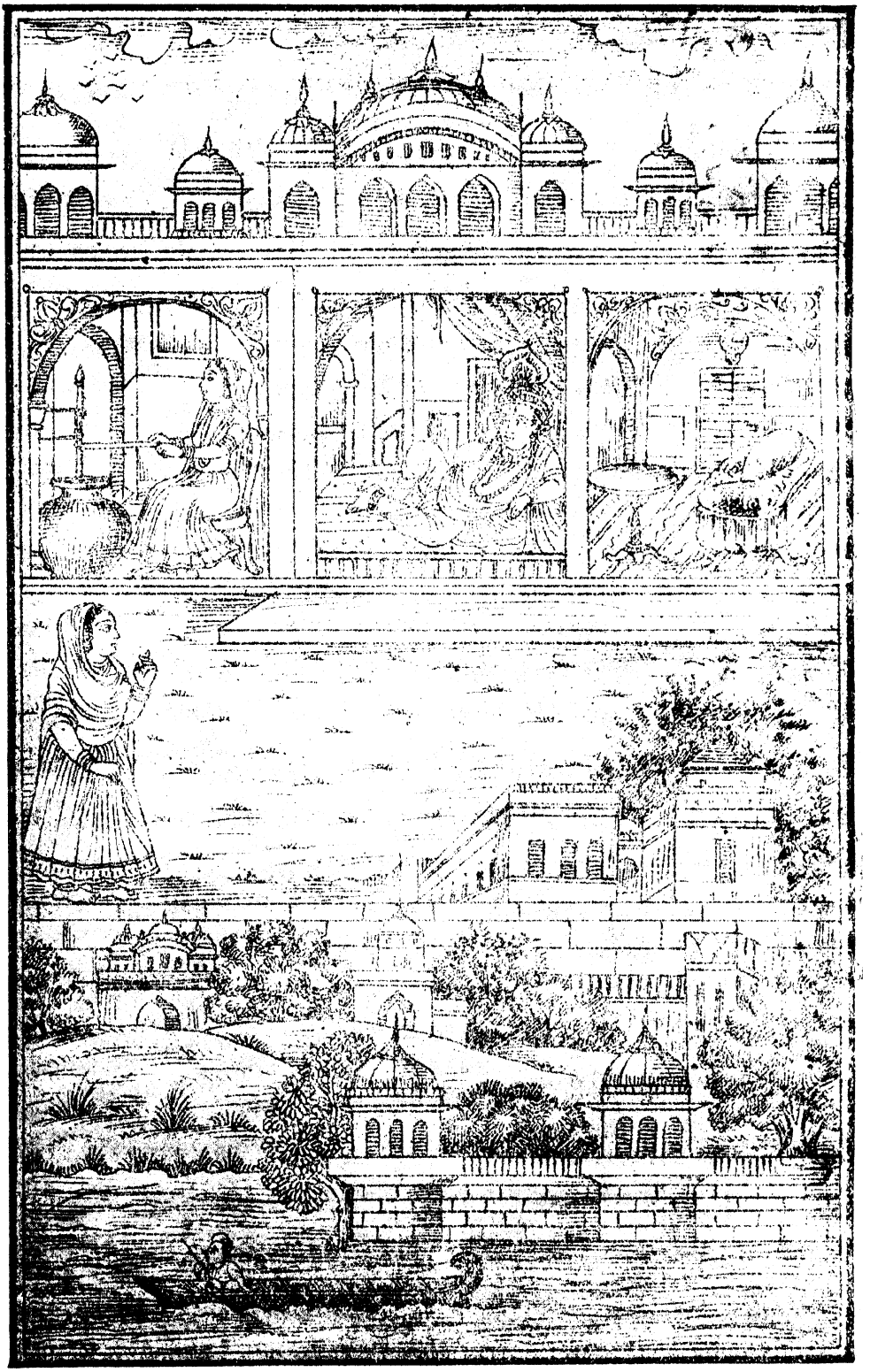

मुसिक्यावै ॥ जाकी सुन्दरता जग बरनत, मुख शोभा लखि चन्द्र लजावै ॥ नारायण यह किधौ वही है, जो यशुमति को कुँवर कहावै ॥ ७ ॥

सखी वचन ।

राग विभास ।

यही मोहन जिन मोही ब्रजबाला ॥ आस्ताई ॥ गजगति चलत बचत पग नूपुर, उर सोहै वनमाला ॥ कमल फिरावत मृदु मुसक्यावत, बोलत वचन रसाला ॥ श्यामवरण लखि लजत नीलमणि, पंकज मेघ तमाला ॥ नैन सैन करि हरत मैन मन, मुख द्युति चन्द्र विशाला ॥ नारायण प्रगट्यो जादूगर, नन्दरायको लाला ॥ ८ ॥

सखी वचन लालजी प्रति ।

दोहा-सुनो लाल इक बृजबधू, धरत तिहारो ध्यान ।
ताहि तनक दीजै दरश, निजदासीकर जान ॥ ९ ॥

वार्तिक ।

जब श्रीलालजी वा गोपवधूके ढिगजायके बतरायवे लगे, ताही समय वाने अपनी सासकूं आवतो देख्यो; तब इतसों लाजहू प्रगट हो आई, सखी तो लाज के अधीन ह्वै गई, वाकी सास निकट आयके इनसों कहबे लगी क्योंरे नन्दके ! हमारे क्यों आयो है ? तब आप बोले, अरी ! हमारी पतंग टूटि के आय परो है ताय लैवे आये हैं, ऐसे बात बनायके निज भवनमें चले आये, ता पीछे गोपवधू अति व्याकुल होय के सखीसों कहिबे लगी ॥ १० ॥

ध्रुपद राग भैरों ।

आज सखी प्रात काल, मेरे गृह आये लाल, भई मैं निहाल, वाके रूपको निहार री ॥ आस्ताई ॥ पूरण शशि सम कपोल,

तिन पै कुंडल किलोल, मधुर मधुर सुनिके बोल, रही ना समार री ॥ नाकमें बुलाक सो है, चितवन चितहीको मोहैं, अद्भुत शृंगार चरण, नूपुर झनकार री, ॥ नारायण हों तो उठी, मिलन इतसों आईलाज, मनकी मनहीमें रही, करन सखी प्यार री ॥ ११ ॥

वार्तिक ।

हे सखी ! अब तू कछू ऐसो उपाय बताय जासों वा चितचोर साँवरेकूं देखूँ ॥ १२ ॥

राग खम्माच का जिला ।

साँवरेके देखे बिन परत न चैन ॥ आस्ताई ॥ छिन छिन में अकुलात सखी री, रूपके प्यासे नैन ॥ वह शोभा वह मन्द हँसनवर, वह तिरछी दृग सैन ॥ नारायण करिगयो बावरी, मधुर सुनायके बैन ॥ १३ ॥

वार्तिक ।

तब वा सखीने एक उपाय बतायो कि, या मिस यशुमति गृह जायके प्राणप्यारे को निरखि आ ॥ १४ ॥

समाजी वचन ।

दोहा–मिसबनायके ब्रज बधू, गई यशोमति तीर ।
निरखिलालको सुखभयो, मिटी विरहकी पीर ॥ १५ ॥

गोपवधू वचन यशोदा प्रति ।

कालिंगडा ।

रानी मैं कछू बूझिवे आई ॥ आस्ताई ॥ प्रात समय काहूके मुखते अचरजसी चरचा सुनिपाई ॥ तो मैं कहूँ जो तू सुनिके पुनि, निजमन बिलग न मानै माई ॥ द्वैबापनको सुत भयो कैसे, तेरो छबि निधि कुवर कन्हाई ॥ हँसि बोली

यशुमति सुनिबहना, तुमही जानत यह चतुराई ॥ नारायण याही मिस ग्वालिन, निरखतनन्दनँदनसुखदाई ॥ १६ ॥

दोहा–ये लीला गोपालकी, जो गावे दिन रैन ।
अन्त समय सद्गति मिलै, जीवत पावे चैन ॥ १७ ॥

इति श्रीलालजीकी उत्थापन लीला श्रीनारायण स्वामीजी कृत संपूर्ण ॥ ४ ॥

अथ पनघटलीलाप्रारंभः ।

समाजी वचन ।

दोहा–पनघटकी लीला नई, कहूं प्रेम सों गाय ।
नारायण जे रसिकजन, श्रवण करें चितलाय ॥ १ ॥

दोहा–निज निज घट लै व्रजवधू, गईं लाडिली पास ।
यमुना जल भरिवे चलो, लली रूपकी रास ॥ २ ॥

वार्तिक ।

तब श्रीजीने कही हे सखी ! हमने अभी किसीके मुखते सुनी है कि, वहां तौ लालजी महाराज ठाढे हैं ॥ ३ ॥

पुनि श्रीजी वचन सखी प्रति ।

राग देश सोरठ ।

कैसे जाऊं री बीर, घट भारवी नीर, ठाढो यमुना तीर, सामरौ अहीर; मारै दृगन तीर; हरै सुधि शरीर ॥ आस्ताई॥ नित यही चितमें चिंता समाजव्रजराज सों कैसे बचैगी लाज; जिया कांपै आज, नहिं धरत धीर ॥ वाको रूप है कै कोऊ जादू यंत्र कैधौं नारायण वशीकरण मंत्र, कैधौं तंत्र कै पलही में, करै फकीर ॥ ४ ॥

सखी वचन श्रीजी प्रति ।

वार्तिक ।

सखी बोली, हे प्यारी ! आप तो पहलेही सो इतनी डरपो हो पधारो तो सही ॥ ५ ॥

समाजी वचन ।

राग खट ।

प्रात समय ब्रजनारि सकल मिल, घट यमुना जल भरन चलीं ॥ आस्ताई ॥ ओरपास तारागण सजनी, बीच चंद मुख भानु लली ॥ पग नूपुर कटि किंकिन बाजैं, पूरी रही धुनि कुंज गली ॥ इत उत तकत चलत नारायण, आय न जावै कहु श्याम छली ॥ ६ ॥

सखी वचन सखी प्रति ।

राग भैरों एकताला ।

देख सखी नंदलाल सन्मुखते आवै ॥आस्ताई॥संग सखा भीर लिये बाँसुरी बजावै ॥ आज याहि समझौ मिल, भलें लाज जावै ॥ नारायण नितप्रति कौन झगरो,नहिंभावै ॥७॥

लालजी वचन सखी प्रति ।

राग मलार ।

ठाड़ी रहौ ब्रजनारि सुन्दर बर ॥ आस्ताई ॥ रूप की घटा छटा नई छबि की, जाहि देखि मोहैं नारी नर ॥ अति चंचल दृग मान लजत लखि, कानन में सोहै मुतियन लर ॥ नारायण हमसों बिन बझ,कहा चलीं गागरिया शीश धर८ ॥

सखी वचन लालजी प्रति ।

दादरा राग आसावरी ।

गैल जिन रोका जोबन मदमाते ॥ आस्ताई ॥ इन बात न शोभा नहिं पावौ, लाजकी गारी गाते ॥ यहां हमें गुरुजन

को डर है, देखत आवत जाते नारायण कहूँ अन्त जो होते, तो याको फल पाते ॥ ९ ॥

लालजी वचन सखी प्रति।

कान्हरा बागेसरी।

गोरी देखिबे में भोरी अलछलमें प्रवीन ॥आस्ताई॥ रति-छबि निन्दित वदन अति सकुचन, भूषण वसन तन वय की नवीन ॥ कुन्दकली दशन विद्रुमसे, अधर लाल दृगन की शोभा लखि लाजें मृग मीन ॥ नेक हँसि हेरि मुख फेरि नारायण, हमसों चतुर कियो अपने अधीन ॥ १० ॥

सखी वचन लालजी प्रति।

राग इमन धीमा ताल।

नेरी डगर न रोको नन्दलाल ॥ आस्ताई ॥ तुम अपने जोबनके मदमें, करत फिरत नितप्रति कुचाल ॥ महा ढीठ बरजो नहिं मानत, नये नये तोहि उपजें ख्याल ॥ नारायण तुम निपट अनीती, प्रगट भये ब्रज आज काल ॥ ११ ॥

लालजी वचन सखी प्रति।

भाँडकी सूरत।

क्यों जल भरिवे आई, इन घाटन पनिहारी ॥ आस्ताई ॥ भोरी भोरी वदन मदन मन मोहै, बातें करत प्यारी प्यारी ॥ अंग अंगमणि भूषण सोहैं, रूपकी खिली फलवारी ॥ मधुर मधुर अधरन मुसिकावत, मन हरिबे की बिचारी ॥ जित चितवत तित करत है घायल, तो सम कौन शिकारी ॥ नारायण जिन देरलगावो, देओ जगात हमारी ॥ १२ ॥

सखी वचन लालजी प्रति ।

झंझोटीका जिला ।

जिन मग रोको नन्दकिशोर ॥ आस्ताई ॥ तोहि उरझन की बानि परी है, साँझ तकत नहिं भोर ॥ देर लगत मोहि सास रिसावै, तुमैं छैल नित रार सुहावै, इन कुचाल कछु हाथ न आवै, गागरि या दई फोर ॥ तुम अति चंचल छैल विहारी, कैसे कूख रखे महँतारी, यह अचरज मोको है भारी, घर घर तेरो शोर ॥ नारायण अब क्यों इतरावो, भई सो भई न बात बढावो, ताही कूं तुम आँखि दिखावो, जो होय तेरी बन्दोर ॥ १३ ॥

समाजी वचन ।

दोहा—झटकि लाल ब्रजबालकर, तोरि मोतियन हार ।
बोले सुनि चंचल चपल, कहा बढावत रार ॥ १४ ॥

सखी वचन ।

राग भूपाली ।

नन्दलाल कुचाल न कर इतनी ॥ आस्ताई ॥ देखत हैं मग नारी नगरकी, और सखी संग की जितनी ॥ जासो कोऊ बुरो नहिं माने, बात कहो मुखसों तितनी ॥ नारायण जापै इतरावो, सो ठकुराई है कितनी ॥ १५ ॥

वार्त्तिक ।

फिर सखी आपसमें कहिबे लगीं चलोरी बीर याकी मैया सों चलिके कहो, यह यों नहीं मानेगो, तब आप बोले तुम भलेही जाय कहो, मेरो कोई कहा करेगो, ऐसे कहिके चले आये, अरु नागरी भेष धरिके मारगमें ठाढे ह्वै रहे, जब थोरी देर पीछे सखी हू आय पहुँचीं, अरु इनको नई रूप

मनोहर निरखिके बूझिवे लगीं, अरी साँवरी सुकुमारी तू यहां कैसे ठाढीहै, तब आप बोले, अरी बीर आज मैं भोरही यमुना जल भरिवे गई हती, तहां नन्दके ढोटाने मोसों कैसी कैसी कुचाल करी हैं ॥ १६ ॥

नवनागरी वचन सबसों।

राग भूपाली।

लँगर मेरी गागरि फोरि गयो ॥ सखी जाने कहां सों अचक आय लंगर। आस्ताई ॥ नई चँदुरिया चीर चीरकर, निपट निडर पुनि आँखि दिखावै, देखि बीर अति कोमल बैयां, दोऊ कर पकरि मरोरि गयो ॥ मोसों कहै सुनि एरी सुदरी, तो समान ब्रज सुघर न कोऊ, नखसिखलों छबि परख निरख मुख, सघन कुंज की ओर गयो ॥ कहांलग कहों कुचाल ढीठ की, नाम लेत मेरो जिय कांपै, नारायण मैं घनो बरजि रही, मुतियन की लर तोर गयो ॥ १७ ॥

कालिंगडा।

आज श्याम मेरी गागर फोरी॥ आस्ताई॥गागर फोरीभला सो तो फोरी; ताहूपै लंगर बहियां मरोरी ॥ लोक लाज कुल रीति मर्यादा, एक साथ उनतृण सम तोरी ॥ आप समान सखा सँग नटखट. कै रोकत मग कै करै चोरी॥मैं वाकी कछु मोल लई हूं, मन चाहै सो करै बरजोरी ॥ नारायण सब बदलो लेउंगी; औरन की सम जाने न भोरी ॥ १८ ॥

सखी बचन नवनागरी प्रति।

राग ईमन कल्याण।

यमुनातट काहेको अकेली गई ॥आस्ताई ॥ रीति भांति

नहीं जाने यहँ की, तू ब्रज आई नई ॥ जो तेरी उन बैयां मरोरी, गागर फोर दई ॥ याहीमें भाग समझ नारायण, और न अधिक भई ॥ १९ ॥

नव नागरी वचन सखी प्रति ।

ठुमरी झंझोटीका जिला ।

एरी मोहि बांसुरी में नाम लैलै टेरैरी॥आस्ताई ॥ ऐसोरी निलज भयो, जोबन के मद कर सबनके आगे हंसि हेरैरी ॥ निपट निडर मेरो अचरा पकर करि, सिरसों गगरिया गेरैरी॥ नगर नारि निरखत नारायण, डगर बगर नित घेरैरी॥२०॥

वार्तिक ।

अरी बीर मैं वाकी कौन कौन सी कुचाल कहूं ॥ २१॥

राग ईमन ।

कलको छोहरा ढीठ लंगर मोहि गारियां देदै जात॥आस्ताई संग की सखी सुनत सब ठाढ़ी, नेक नहीं सकुचात ॥ ज्यों ज्यों बरजतहूं मैं वाको, त्यों त्यों अति इतरात ॥ नारायण ब्रज में रहूं कैसे, जहां नित प्रति उतपात ॥ २२ ॥

वार्तिक ।

हे सखी ! अब ब्रजमें कैसे बसूं;सखीने कही अरी डरै क्यों चलि यशोदापै कहि आवें,फिर वा ढीठ सों निबट लैंगी२३॥

दोहा–नारायण जोगी जिसे, धरत ध्यान दिन रैन ।
ताहि ब्रजवधू संगैल, चलीं उरान्हों दैन ॥ २४ ॥

नवनागरी वचन यशोदा प्रति ।

रेखता ।

सुनिले यशोदा रानी, तू लाल की बडाई ॥ सब लोक लाज वाने, यमुना में धोय बहाई ॥ भोरैंही मैं गई जो, जल भरिवे काज भैना ॥ पीछे सों आय अचानक, उन मूंदे मेरे

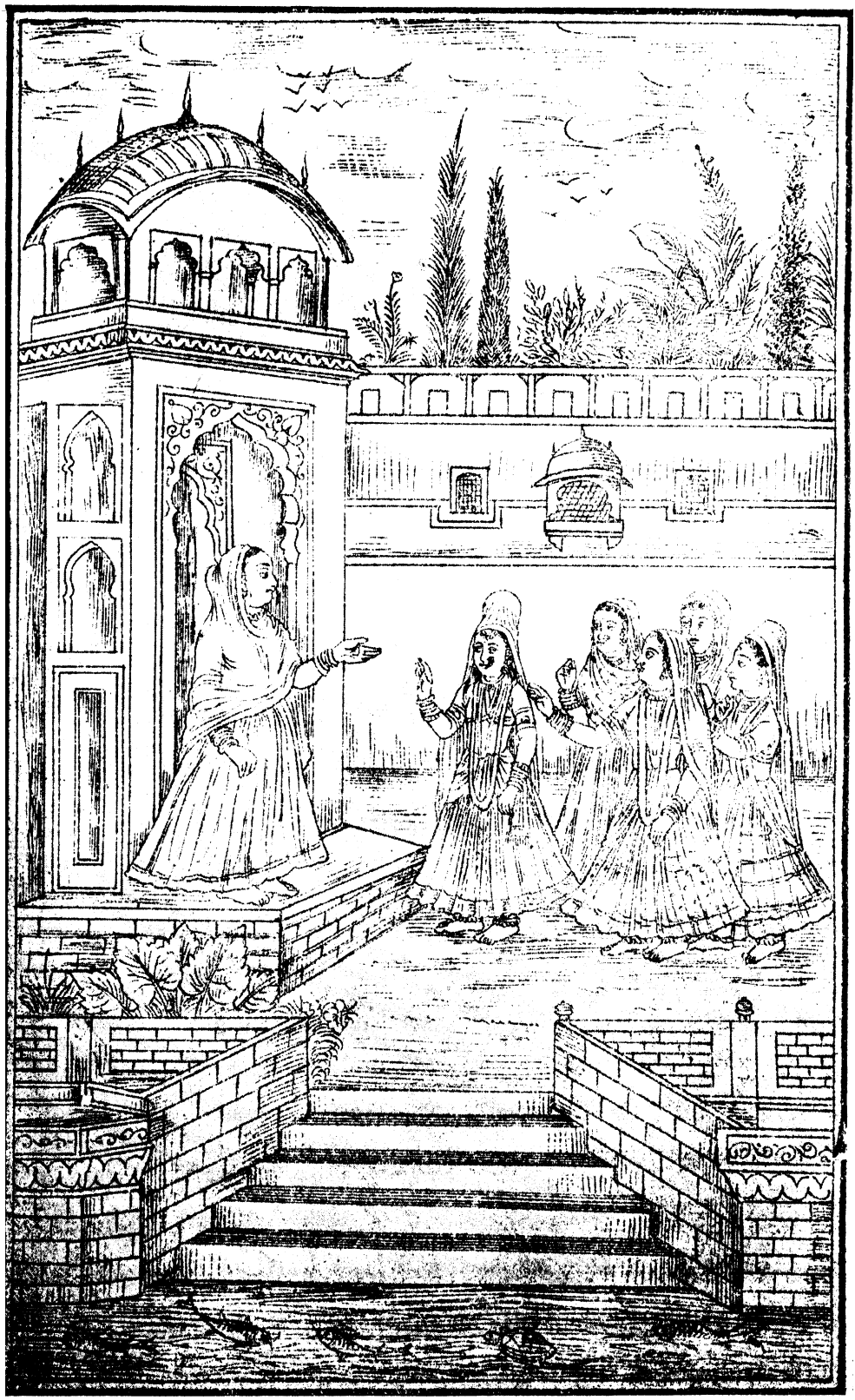

नैना ॥ डरपी मैं हाय को है; तब बोले टेढे बैना॥हौं तौ रही अकेली, वा संग ग्वाल सैना ॥ तब सबने हा हो करिके, तारी मेरी बजाई ॥ सु० ॥ १ ॥हँसि हँसिके छैल मोसों, करिवे लगो ठठोली ॥ यह छबि तिहारे मुख की, अब कासों जावे तोली॥ निरखै कबू बदन कों कबहूँ, वह छुवै चोली ॥ मैं तो सकुचकी मारी, वासों कछु न बोली ॥ पुनि बहियां मेरी झटकी, गागरि धरनि गिराई ॥ सुनिले० ॥२॥ अँगिया के बंद तोरे, चूँदरि झडाक फारी ॥ दुलरी के निरखिवे कों, गलबैह्यां मेरे डारी ॥ यह सब कुचाल देखें, मग ठाढे पुरुष नारी॥ ताहू पै नाम मेरो, लैकर सुनावै गारी ॥ गुरुजन में मेरी वाने,या विधि करी हँसाई ॥सुनिले०॥३॥ज्यों ज्यों कहू मैं हट रे, त्यों त्योंही दूनो अटकै ॥ मुसुक्यावै दृग मिलावै, भ्रुकुटी चलावै मटकै ॥ कर करके सैनाबैनी, तन परसे चीर झटकै ॥ अब और कहा कहूं मैं, गलहार हेके लटकै ॥ एक साथ वानें ऐसी, पकरी निलज्जताई॥ सुनिले० ॥ ४ ॥ कबहूं कहे बता री, तू क्यों अकेली आई ॥ कै घरमें तेरे पति की, तोसों भई लराई ॥ तू चली भवन हमारे, करि मोसों मित्रताई ॥ बिधिनाने तेरी मेरी, जोरी भली बनाई ॥ नारायण वाकी बातें, सुनिके मैं अति लजाई ॥ सुनिले ०॥५॥ २९ ॥

वार्तिक।

तब नंदरानीजी ने कही अरी सखी मेरो लाल तौ जाने कौनसे वनमें गैया चरावत होयगो, तू क्यों वाको वृथा दोष लगावै। तब सांवरी बोली अरी तू वाके गुण कहा जाने कहूं यहांही ऊधम करत डोलत होयगो।जो तू नमानें तौहमदिखायभी देंगी।इतनी कहके पुनि भवनते बाहर आयके आपसमें

कहिवे लगी, क्यों बीर ! अब यशोदा कूँ कैसे सांच आवे, जब सांवरी बोली, मोकू लालजी बनायके दूरिसों यशोदा कूं दिखाय दीजो कि देखले, अब तिहारो श्यामसुंदर कौनसे वन में गऊ चराय रह्योहै, तब सबने कही हंबै सखी यही ठीक है, फिर सांवरीने ओट करिके जब अपनो निज स्वरूप प्रगट कियो, तब एक संग सब सखी अचरज होयके निहारवे लगीं, न सांवरी कहत बने न सांवरो कहत बने फिर हँसि हँसिके कहिबे लगीं, धन्य हो लालजी महाराज अपनी मैया हू सों न चूके, तब आप बोले, अरी सखी ! कहूं चतुरहू चूके हैं ? ॥ २६ ॥

दोहा—ये लीला यदुनाथ की; जो सुनिहैं चितलाय ।
नारायण ताके सदा; श्रीपति रहैं सहाय ॥ २७ ॥

इति श्रीपनघट लीला श्रीनारायण स्वामीजी
कृत सम्पूर्ण ॥ ५ ॥

अथ नवलसखीकी दानलीला प्रारंभः ।

समाजी वचन ।

दोहा—धनि ब्रजवासी नारि नर, धन वृंदावन धाम ॥
नारायण सुरपति जिन्हें, निशि दिन करत प्रणाम ॥ १ ॥

दोहा—प्रात समय ब्रज नागरी, सजि अपनो शृङ्गार ॥
गोरस बेचन को चलीं, गजगामिनि सुकुमार ॥ २ ॥

दोहा—मग में ठाढो साँवरो, रोकि सबन की गैल ॥
रूपसिंधु अरविन्द दृग, रसिक शिरोमणि छैल ॥ ३ ॥

दोहा–जब पहुंची ढिग आयके, मृगनैनी वरबाम ॥
तिनहिं देखि मुसक्यायके, बोले सुन्दर श्याम ॥४॥
दोहा–कहां जाउ ठाढी रहौ, तुम्हैं रूप अभिमान ॥
अब आगे पग जिन धरौ, बिना दिये दधिदान॥५॥
दोहा–सुनत वचन नँदलालके, हँसीं सकल ब्रजबाल ॥
देखोरी अब सांवरो, नई चलत है चाल ॥ ६ ॥
दोहा–एक सखी की भुज पकरि, हँसि बोले ब्रजराज ॥
प्यारी तू आई नई, दही बेंचिवे आज ॥ ७ ॥

लालजी वचन नवलसखी प्रति ।

ठुमरी खम्माच का जिला ।

आज तू नवेली दधि बेंचवे कूं आईरी ॥ आस्थाई ॥ जो बन की उमँग सों झूमत चलत, गजमत्तहू की गति तैं लजाईरी ॥ नैनन के बान भौंह तानके कमान कहौं, कौनपै यह करी है चढ़ाईरी ॥ रूप की निकाई सुघराई नारायण, कहाँलग करूं मैं बड़ाईरी ॥ ८ ॥

बड़ी सखी वचन लालजी प्रति ।

कालिंगड़ा ।

लाल तुम काहेको इतरावो ॥ आस्थाई॥ मोर पंख उरसे पगिया में, यापै बडे कहावो ॥ जब तें प्रगट भये तुम ब्रजमें, घर घर धूम मचावो ॥ माखन छाँछ चुराय हमारी, मिल गोपन सँग पावो ॥ फटी पुरानी कामरि ओढो, वन वन धेनु चरावो ॥ नारायण फिर कौन भरोसे, एते गाल बजावो ॥ ९ ॥

लालजी वचन नई सखी प्रति।

दादरा आड़ा कालिंगड़ा।

हमारो दान देऊ ब्रजनारी ॥ आस्ताई ॥ मद माती गज गामिनि डोलैं, तू दधि बेचनहारी ॥ रूप तोहिं बिधनाने दीनों, ज्यों चंदा उजियारी ॥ मटुकी सीस कटीले नैना, मुतियन मांग सँवारी ॥ हार हमेल गरे में राजैं, अलकैं घूँघर वारी ॥ या ब्रजमें जेती सुंदरि हैं, सब हम देखी भारी ॥ नारायण तेरी या छबि पै, कान्ह जाय बलिहारी ॥ १० ॥

बड़ी सखी वचन।

कालिंगड़ा।

मेरी बात सुनो यदुराई ॥ आस्ताई ॥ याकी दधि अबहीं मति लूटौ, तुमको नंद दुहाई ॥ याकी सास भोरही याको, भवन हमारे लाई ॥ गोरस बेंचन याहि सिखावौ, यों कहि संग पठाई ॥ नई वधू पुनि निपट ही भोरी, नहिं जानत चतुराई ॥ तासों याहि आज मति रोकौ, अबहीं गौने आई॥ लाज करत मुख घूंघट ओढे, तुम्हें देखि सकुचाई ॥ नारायण हठ तजौ सांवरे, निरखत लोग लुगाई ॥ ११ ॥

लालजीको वचन सखी प्रति।

झंझोटी का जिला।

सखी तुम नेक तौ रूप दिखावौ ॥आस्ताई॥ घूंघट पट मुख ओट करौ क्यों, याहि तनक सरकावौ ॥ ब्रजमें लाज करै सो बौरी, हँसि हँसिके बतरावौ ॥ नारायण हम दोऊ बरोबर, क्यों इतनी सकुचावौ ॥ १२ ॥

राग झंझोटी ।

सखी तुम मेरी ओर क्यों न हेरो ॥ आस्ताई ॥ बरसाने में पीहर तेरो, कै कोऊ गांव गमेरो ॥ तू मोसों इतनी क्यों सकुचत, मैं हूँ देवर तेरो ॥ घूंघट खोलि एरी नवनागरि, दान दीजिये मेरो ॥ लाज करो गोरस क्यों बेचौ, घर घर सांझ सबेरो ॥ नारायण नित कुंजगलिन में, रहै कान्हको डेरो १३॥

सखी वचन लालजी प्रति ।

राग झंझोटी ।

याको घूंघट पट न उघारो ॥ आस्ताई ॥ परत्रिय देखि अनीति करौ तुम, नई नई रीति निकारो ॥ बड़े महरि की पुत्रबधू है, नेक तौ बात बिचारो ॥ भले बुरे की लाज न तुमको, मन भावति करिपारो । दधि गोरस पै दान लगावत, मानों राज तिहारो ॥ नारायण है कौन हमारे, मगको रोकनवारो १४॥

वार्तिक ।

लालजी बोले अरीसखी ! तू इतनो क्यों हाथ नचाय रही है, घूंघट तो हम वांको उघारें कछु तिहारो तौ नाहीं उघारें १५॥

दूतीकी चाल ।

तू इतनों क्यों हाथ नचावत, तेरो कछु कोई घूंघट खोलै॥ जो ऐसी कुल लाजवती तू, तौ क्यों भोरही घर घर डोलै ॥ जोबन मांहि फिरै मदमाती, आप समान न औरको तोलै, नारायण दधि बेंचनहार तू, नेक न बात बिचारिके बोलै १६॥

सखी वचन ।

बरवा दूती की चाल ।

आप भले गुणवान बनो तुम, औरन में अति खोट बतावो॥ माखन चोर कहावत हौ नित, तौऊ नहीं मनमाहिं लजावो॥

रतन जडे आभूषण पहरें, छाँछ लिये कर को फैलावो॥नारायण सब लोग हँसेंगे, प्रथम उतारि इन्हें धरि आवो॥ १७॥

लालजी वचन सखी प्रति ।

दोहा–दधि जोबन नवरूपको, जब लग देउ न दान ॥
तब लग जान न पाउगी, कोटिक करो सयान ॥ १८ ॥

सखी वचन लालजी प्रति ।

राग भैरवी ।

मारग दीजै मोहन प्यारे ॥ आस्ताई ॥ इन बातन शोभा नहिं पावो, तुम हौ राजदुलारे ॥ बहुत हँसी जिन करो सांवरे, सुनि हैं कन्त हमारे ॥ तुमरो कोई कछू न करैगो, हमैं मूंदेंगे तारे ॥ देखे सुने नहीं हम कबहूं, तुम सम झगरन हारे ॥ नारायण क्यों रारि बढाओ, रे द्वै बापन वारे ॥ १९ ॥

लालजी वचन सखी प्रति ।

कालिंगडा ।

ग्वालिन दान देत इठलावै ॥ आस्ताई ॥ नित प्रति ही तू या मारग ह्वै, क्यों दधि बेंचन जावै॥हमें कहत तू द्वै बापन को, अपने क्यों न गिनावै । नारायण देओ कौटिक ताने, कर नहिं छूटन पावै ॥ २० ॥

सखी वचन लालजी प्रति ।

राग मल्हार ।

छैल गैल मति रोकै तू हमारी रे ॥ आस्ताई ॥ चाल कुचाल चलौ जिन चंचल, चरचा करें सब पुर नर नारी रे ॥ हम सुकुमार ठाढी काँपत हैं, शिर पर दधिकी मटुकिया भारी रे ॥ नारायण ब्रज कौन बसैगो, ऐसी अनीति जो करनी बिचारी रे ॥ २१ ॥

लालजी वचन सखी प्रति।

मल्हार तीन ताला।

जोबनकी मदमाती डोल री गुजरिया ॥ आस्ताइ ॥ अंग अंग जोबन की उठत तरंग नई, नैना कजरारे भौहें तिरछी नजरिया ॥ हाथन में चूरी नकबेसर करनफूल, मुंदरी ललित छबि देत अँगुरिया ॥ अब लों तोसी नहिं देखी नारायण दधि की बेंचनहारी नन्दकी नगरिया ॥ २२ ॥

सखी वचन लालजी प्रति।

आडा कालिंगडा।

छाँडौ मेरी गैल न तौ गारी मैं सुनाऊँगी ॥ आस्ताई ॥ औरों के भूलेखे कहूँ मोसो जिन अटको, अभी यशुमति पै पकरि लै जाऊँगी ॥ पहलेही सों अपनी बड़ाई कहा करूं मैं, देखिये तौ कैसे तुम्हें नाच नचाऊँगी ॥ जो मैं तोहिं सूधो न बनाऊँ नारायण, तौ मैं निज बापकी न आजसों कहाऊँगी ॥ २३ ॥

लालजी वचन सखी प्रति।

बरवै पीलूका जिला।

पहलै मेरो दान चुकारी, पीछे बतराइयो प्यारी ॥ आस्ताई ॥ तो समान तुहि देत दिखाई, नवजोबन नव सुन्दरताई, और कहां लों करों बड़ाई, मोहनको मन मोहनहारी ॥ अति बांके है नैन तिहारे, सान धरे पैने अनियारे, जिन हमसे घायल कर डारे, इन समान नहिं नाग कटारी ॥ नारायण जिन बीर लगावो, देउ दान अपने घर जावो, क्यों मटुकी पोंट सिर धरी, देख हँसेंगे पुर नर नारी ॥ २४ ॥

सखी वचन सखी प्रति।

कान्हड़ा बागेसरी।

जानेदैरी जानेदै तु यासों मति बोलै ॥ आस्ताई ॥ यह लंगर निवट्यो भयो ब्रजमें, डगर चलत छबि तोलै ॥ जाहि

न लाज सकुच गुरुजन की, हँसि हँसि घूँघट खोलै ॥ नारायण यह दृगन को रोगी, पर त्रिय झाँकत डोलै ॥ २५ ॥

अपर सखी वचन सखी प्रति ।

दरबारी कान्हड़ा ।

सब मिलि चलो नन्दगृह माई ॥ आस्ताई ॥ इनहींके सुत भयो अनोखो, नई नई रीतिचलाई ॥ मांगत दान न कान काहू की, ऐसी कहा लरिकाई ॥ नारायण या ग्राम वास करि, अब हम बहुत अघाई ॥ २६ ॥

लालजी वचन सबसों ।

दोहा–अहो नवेली गुण भरी, धरी मटुकिया शीस ।
दधि जोबनको दान हम, लेंगे बिस्वे बीस ॥ २७ ॥

बडी सखी वचन नवलसखी प्रति ।

दोहा– अरी सुहागनि सुंदरी, नवदुलहिन सुकुमार ।
हठ नहिं छाँडत साँवरो, घूँघट नेक उघार ॥ २८ ॥

समाजी वचन ।

दोहा–घूंघट पट कछु खोलिके, मुसक्याई ब्रजबाल ।
देखि मनोहर रूपको, मगन भये नँदलाल ॥ २९ ॥

सखी वचन लालजी प्रति ।

कालिंगड़ा ।

अपनो दान लेउ नँदलाल ॥आस्ताई॥ रसके भरे वचन अति अटपट, कहन लगी ब्रजबाल ॥ दोऊ ओर दृगसों दृग लागे, हियमें प्रेम विशाल ॥ नारायण या विधिसो हँसि हँसि, कर चुकवत गोपाल ॥ ३० ॥

वार्त्तिक ।

सखी बोली अजी लालजी महाराज ! आप तौ दान मांगते रहे, फिर क्यों न लियो, तब लालजी बोले अरी सखी ! दधि मांगिवे को तौ हमारो मिस रह्यो यह रूप माधुरी निरखिके सबदान भरिपायो ॥ ३१ ॥

दोहा–ये लीला जो नित सुनै, गावै दै दै ताल ।
नारायण तापै कृपा, करैं लाडिलीलाल ॥ ३२ ॥

इति श्रीनवल सखीकी दानलीला श्रीनारायण स्वामीजी कृत सम्पूर्ण ॥ ६ ॥

अथ श्रीछद्मदान लीला प्रारंभ ।

समाजी वचन ।

दोहा–दधिमटुकी शिर पै धरी, चलीं बेचिवे बाल ॥
नारायण ठाढ़े गली, छैलछली नँदलाल ॥ १ ॥

लालजी ।

खम्माच ।

ठाढी रहौ ठाढ़ी रहौ रूप निधान ॥ आस्ताई ॥ बरजोरी कित जावो दौरी, विना दिये दधि दान ॥ काहू भाँति उपमा मैं तेरी, कर नहिं सकत बखान ॥ घूंघटमें मुख दमकत ऐसे, ज्यों बादरमें भान ॥ हम निजकर मांगत रिसात तुम, भली नहीं यह बान ॥ नारायण तुम आजही आई, नई भई पहँचान

सखी वचन लालजी प्रति ।

ईमन कल्याण ।

मनमोहन मोसों मति अटको ॥ आस्ताई ॥ झटकौ न

चीर, मटकौ न छैल, दधि की न गैल मटुकी पटको ॥ जैसे कछु तुम हौ सब जानूं, गुण तुम्हार अब कहा बखानूं, तनक तनक रस काज राजरस, भवन भवन निशि दिन भटको ॥ तुम कबके ब्रजमें भये दानी, रोकत हो मग नारि बिरानी॥ दधि गोरसकी लूट मचाई, तुम्हें न काहू को खटको ॥ नारायण अबहूं कहि मानो, औरन की सम मोहि न जानो ॥ निकसि जायगी सब लँगराई, चलो हटो घरको सटको ॥ ३ ॥

समाजी वचन ।

दोहा-झगर झगर बतगत मग, निपट अनोखो छैल ॥
मटुकी फोरी लकुटसों, बिखर गयो दधि गैल ॥ ४ ॥

सखी वचन लालजी प्रति ।

मल्हार ।

क्यों रे छैल मेरी मटुकिया पटकी ॥ आस्नाई ॥ करके ढिठाई, मग दधि बिखराई, सब चूरी करकाई, सुकुमार बैयां झटकी ॥ अबहीं यशोदा ढिग पकारि लै जाऊं तोहिं, एक न चलैगी तेरी बात, नटखट की ॥ बदलो लेऊँगी न डरूंगी नारायण, कौनसी गरज मेरी, तोसों अब अटकी ॥ ५ ॥

अपर सखी वचन ।

दोहा-तू यासों जीते नहीं, छैल लगो है चोर ।
जो कछु भई सो भई अब, चलि अपने घर ओर ॥ ६ ॥

सखी वचन सखी प्रति ।

कालिंगडा ।

मैं कैसे घर जाऊं मोसों ननँद लरैगी ॥ आस्नाई ॥ आगेही चवाव मेरो करति है निशि दिन, मटुकीको बिन देखे अधिक

जरैगी॥कुटिल कुचाल वाके मनकी न थाह परै, नेकहीमें झूठ मूठ साख भरैगी ॥ याहीसों मैं अति घबराऊं नारायण, जाने वा कहा मोपै दूषण धरैगी ॥ ७ ॥

समाजी वचन ।

दोहा–श्रीदामाको भेष धरि, प्यारी परम सुजान ।
प्रीतमके ढिग आयके, या विधि करत बखान ॥८॥

कालिंगडा ।

लाल तोहिं मैया बेगि बुलावै ॥ आस्ताई ॥ बछरा छूटि गयो है तेरो, पकरनमें नहिं आवै ॥ मोहिं कह्यो तू जा लिवाय ला, जहां तोहिं खेलत पावै ॥ नारायण अब चल तू झटपट, नातर गाय चुखावै ॥ ९ ॥

वार्तिक ।

लालजी बोले चल सखा,तब सखी बोली, अबतो सखाकी हिमायतसों छूटि चले हौ, जब अकेले पाओगे तब समझूंगी फिर मारगमें प्यारी जीने बूझी, लालजी तुमने हमको पहँचा न्यो, लालजी बोले हे श्रीदामा ! आज तू कछू भांग पी आयो है, जो ऐसे बूझै, तब श्रीजी हंसिके बोली ॥ १० ॥

दोहा–हमहूँ छल कैसो कियो, लखि न सके गोपाल ।
निरखि लली की छबि नई,पुनि पुनि हर्षतलाल ११॥

वार्तिक ।

लालजी बोले बलिहार या भेष पै ॥ १२ ॥

दोहा–नारायण यह गुप्त रस, श्रवण करै जो कोय ।
याजगमें सुखसोंरहै, अंत समय गति होय ॥ १३ ॥

इति श्रीनारायण स्वामीजी कृत छद्मदान लीला सम्पूर्ण ॥ ७ ॥

अथ देवीपूजनलीला प्रारंभ।

समाजी वचन।

दोहा-रतन जटित वृन्दाविपिन, सब सुखमाकी खान ।
गौर श्याम क्रीडत जहाँ, मंगल मोदनिधान ॥ १ ॥
दोहा-अरुण उदय नवनागरी, कर मज्जन शृंगार।
देवी पूजत प्रेम सों, प्रीतम हित उरधार ॥ २ ॥
दोहा-उतसों नागरि भेष धरि, नन्दनँदन बृजराज ।
गौरी पूजन मिल चले, प्रिय के छलिबे काज ॥ ३ ॥

कालिंगड़ा ।

नागरी भेष धरयो गिरिधारी ॥ आस्ताई ॥ तहीं आय पूजत देवीको, जहाँ पूजत वृषभान दुलारी ॥ प्रथम ताहिऽ स्नान करावत, अति हितसों लै कंचन झारी ॥ पुनि आभूषण पट पहरायै, भाल तिलक गल माला डारी ॥ धूप दीप नैवेद्य पान धरि, प्रेम सहित आरती उतारी ॥ हाथ जोरि कछु बिनती कीनी, हो प्रसन्न गिरिराज कुमारी ॥ बूझति कुमारि कहाँ [illegible], [illegible] मोहि लगत प्राणते प्यारी ॥ नारायण ललिता [illegible] भाखो अब, मिलि दोऊ निरखें फुलवारी ॥ ४ ॥

सखी वचन सखी प्रति ।

जौनपुरीटोड़ी ।

आज कौन राधे संग डोले ॥आस्ताई॥ नवयौवन गजगामिनि भामिनि,हरखि निरखि निज छबिको तोलै॥श्याम वरण कुलचंद्र प्रकाशित, कबहुँक घूंघट काहुँक खोलै ॥ नारायण यासों चलि बूझै,जो हम सों यह तनकहुँ बोलै॥५॥

सखी वचन प्रियाजी प्रति।

दादरा झंझोटी का जिला।

कहो प्यारी यह कहां सों आई ॥ आस्ताई ॥ कहा नाम को गाम है याकौ, कौन की है यहजाई ॥ यह हम सों इतनों क्यों सकुचति, कै कछु तुमने सिखाई ॥ नारायण देखी न सुनी हम, नारि ते नारि लजाई ॥ ६ ॥

श्रीजी और सखी वचन परस्पर।

काफी।

री मेरी या सजनी सों आजहि भई है चिन्हार ॥ ॥ आस्ताई ॥ देवी पूजिके आई मो संग निरखन को फुलवार ॥ मेरे हित इन फूल बीनके ललित बनाये हार ॥ बंदनी करनफूल अरु गजरे, भूषण विविध ॥ प्रकार यह भूषण प्रीतम की रचना, यह वाकी अनुहार ॥ नारायण चाहै मति मानों, है यह नन्दकुमार ॥ ७ ॥

श्रीजी वचन।

झंझोटीका जिला।

भलो भेष नागरीको बनि आये प्यारे ॥आस्ताई॥ पगमें पायल बाजें हाथ गजरारे ॥ झुमका किलोल करैं, कानोंमें नियारे ॥ मोतियों की मांग पर, जाऊँ बलिहारे ॥ चंदके निकट सोहैं, नेक २ तारे ॥ नैन सैन मीठे बैनी, रूपके उजारे ॥ नारायण अंग निरखि, कोटि मदन हारे ॥ ८ ॥

दोहा—लीला श्यामा श्याम की, दुखभंजन सुखरूप ॥
नारायण जे नित सुने, ते न परे भव कूप ॥ ९ ॥

इति श्रीनारायणस्वामीजीकृत देवीपूजनलीला संपूर्ण ॥ ९ ॥

अथ नवदुलहिन लीला प्रारंभ।

समाजी वचन।

दोहा—भानु नगर में एक ने, सुतको कियो विवाह ॥
नवदुलहिनि आई भवन, भयो परम उत्साह ॥१॥

जैजैवंती।

एकके घर नवदुलहिनि आई ॥ आस्ताई ॥ सो ब्रजनारि लाज वश सोचत, कीरति कुमरि न न्योति पठाई ॥ वे अपने मन कहा कहेंगी, इनके भले विवाह सगाई ॥ पांच बतासन के लालच सों, गीतन में काहू न बुलाई ॥ एक सखी बैठारि बहू ढिग, भरि थारी पकवान मिठाई ॥ नारायण लै चली बाइनों, जहाँ हुती राधे सुखदाई ॥ २ ॥

दूतीकी चाल पै।

जब पहूँची प्यारीके महलन, इनको देखि कुँवरि हरखाई ॥ करि आदर बैठारि सबन कूँ, कछु विवाह की बात चलाई ॥ क्षमा करो यह चूक हमारी, मैं तिहारे नहिं पहुँचन पाई ॥ नारायण गई भूलि काममें, तुमकूँ देखि बहुत सकुचाई ॥ ३ ॥

दूतीकी चाल पै।

राजकुमरि की देखि सुघरता, हरषत सब मिलि करत बड़ाई ॥ क्यों न कहौ तुम बचन अमी सम प्रगट भानुकुल की प्रभुताई ॥ बोली कुँवरि बहू सँग लाती, तब होती मेरे मन भाई ॥ नारायण हमहूं सब देखत, वाके मुख की सुंदरताई ॥ ४ ॥

समाजी वचन।

दोहा—आदि अंत लों जो कछू, बातें भईं रसाल।
भवन द्वार सुनते रहे, रसिया मोहनलाल ॥ ५ ॥
दोहा—प्यारी के मन की लखी, चलीं सखी बहु लैन।
पग पग में हरषत हियो, घडी चार गइरैन ॥ ६ ॥
दोहा—इत दुलहिनि सुकुमारके, दृगन भरी अलसान।
तनसों वसन उतारिके, सोय रही पटतान ॥ ७ ॥
दोहा—होनहार जैसी कछू, तैसो लागत योग।
ढिगहू की ओंघन लगी, भलो बन्यो संयोग ॥ ८ ॥
दोहा—रसिक लाल तासों प्रथम, ताके भवन पधार ॥
दुलहिनिके पट पहरिके, बैठे घूँघट मार ॥ ९ ॥

भजन दरबारी कान्हरा।

दुलहिनिको हरि रूप बनायो ॥ आस्ताई ॥ लहँगा पहरि ओढि चूँदरिया, घूंघट पट मुख पै लटकायो ॥ ज्योंके त्यों बैठे बनठनके, नख सिख लों निज बदन दुरायो ॥ सखी आय देखी जब दुलहिनि, ढिग सजनीको ओंघत पायो ॥ कर झकझोरि जगाय ताहि पुनि, हरखत सकल वृतान्त सुनायो ॥ नारायणबहु के लैवे कूं, भानुकुमरि ने मोहि पठायो ॥ १० ॥

समाजी वचन।

दूतीकी चाल पै।

संग लिवाय चलीं दुलहिनि को, लै तारो निज भवन लगायो ॥ लखे न कौतुक नन्दलालके, निज बहुको घरमें मुँदवायो ॥ आवत देखि बहूको प्यारी, निज मन में अति हर्ष बढायो ॥ नारायण उठिके करि आदर, हाथ पकरि पुनि ढिग बैठायो ॥ ११ ॥

प्रियाजी वचन ।

दूतीकी चाल पै ।

भूषण वसन अमोल मँगाये, रतननको इक थार भरायो ॥ लै दुलहिनि तू वदन दिखाई, या कारण हम तोहि बुलायो ॥ वस्तु अनेक दई हैं तोऊ, घूँघट पट नहिं नेक उठायो ॥ नारायण सब हँसत परस्पर, आज बहूने हमें हरायो ॥ १२ ॥

दूतीकी चालपै ।

तब बोली दुलहिनि की सासू, याने तौ इक स्वांग फैलायो ॥ हमकूँ बिदा करो श्रीराध, आप दोऊ कीजैं मन भायो ॥ निपट हठीली द्वै बापन की, मानत नहीं बहुत समझायो ॥ नारायण निज भवन गईं सब, फिर याकूँ प्यारी ने बुलायो ॥ १३ ॥

दूती की चाल पै ।

ललिता कहै सुनौ प्यारीजू, दूसर पहर बजन पै आयो ॥ भली बहू याकी सेवामें, खान पान तुमने बिसरायो ॥ मैं देखूंगी हठ अब याको, याने तौ बहु खेल खिलायो ॥ नारायण यों कहि पट झटक्यो, निकसि परयो यशुमति को जायो १४ ॥

वार्तिक ।

सब हँसि हँसिके कहनलगीं, बलिहार या साँवरी बहू पै फिर पिछिलौ प्रसंग उनके घर जायवेहूको होयवे लग्यो, ता पीछे सखिनने ब्यारूके थार सजायके आगे लाये धरे ॥ १५ ॥ सोरठा—ब्यारू करत दोऊ सुकुमार ॥ आस्ताई ॥ मठरीठौर जलेबी लाडू, सेव समोसेदार ॥ पूरी लुचई पुआ कचौरी, भाजी विविध प्रकार ॥ अदरख चटनी बरे मुरब्बा, पापर सोंठ अचार । खजला दूध मलाई खुरचन, खिरसा मोहन थार ॥ सीतल जल पुनि पीवत रुचिसों, नारायण बलिहार ॥ १६ ॥

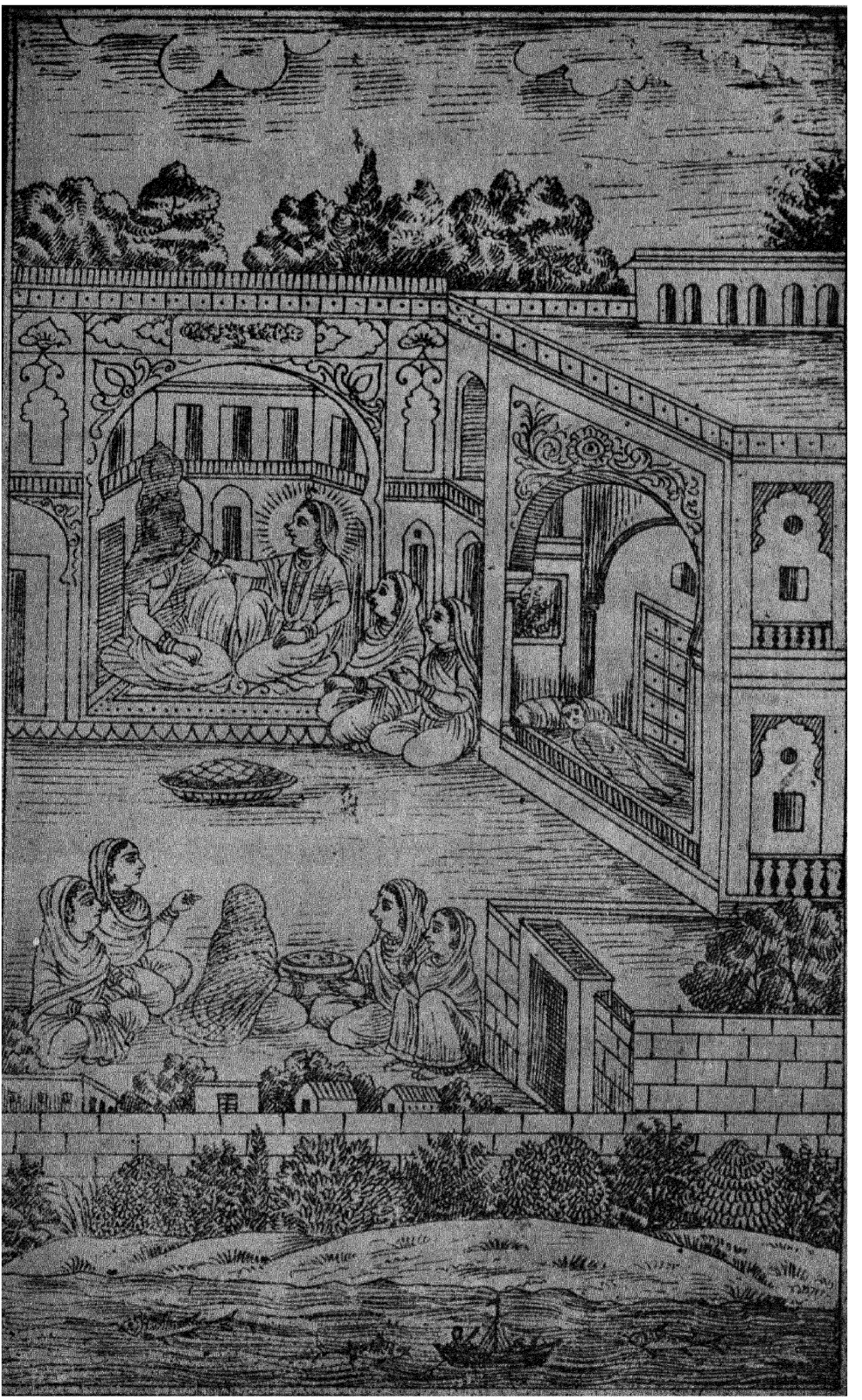

सखी वचन।

जैजैवंती।

आज इन दोउन पै बलिहारी॥आस्ताई॥नंदलाल रतिपति विशाल छबि, चन्द्रवदन वृषभान दुलारी॥ बैठे कुंजभवन बतरावत, उपजावत सुख प्रीतम प्यारी॥ नारायण उपमाँ कहा दीजै, मैं अपने मन बहुत बिचारी॥ १७॥

दोहा–तजि कुतर्क जो नित सुन, यह लीला रस पुञ्ज॥
नारायण ताकूं युगल, वास देत निज कुञ्ज॥ १८॥

इति श्रीनारायणस्वामीजीकृत नवदुलहिन लीला सम्पूर्ण॥ ९॥

अथ मानलीला (दोहावली) प्रारंभ।

सो०–विनय करूँ करजोरि, रसिक जननके चरणमें।
नारायण चितडोरि, लगी रहै नित युगल पद॥१॥

दोहा–अगणत गण रूपक यमक, इनको मोहि न ज्ञान।
गुण तुम्हरी सर्कार के, तासों लीजो मान॥ २॥
एकरैन निज पिया सों, प्रिया मुदित मन होय।
तोते की सुनिके कथा, रही कुँवरि पुनि सोय॥ ३॥
बड़े भोर उठि सेज सों, श्रीब्रजराय कुमार।
स्नान भवनमें न्हाय के, कियो नयो शृङ्गार॥ ४॥
सुपने में देख्यो लली, लाल और के साथ।
उठि बैठी तब मानकरि, धरि कपोल तर हाथ॥५॥
भुँहें चढ़ीं फरके अधर, रोम ठढे सब अंग।
मान भूपलै कटकको, चढिआयो इक संग॥६॥

हँसत न मुख चितवत न दृग, सुनत नहीं कछु कान ।
द्वार द्वार पै चौकियां, बैठारीं नृप मान ॥ ७ ॥
मनकी गति मति लखि सखी, ठढ़ी छडी लै द्वार ।
धोखेमें आवें न धसि, कपटी नन्दकुमार ॥ ८ ॥
इतसों प्रिय के ढिग चले, प्रीतम परम प्रवीन ।
सुरत युद्ध की लालसा, तामें अति लवलीन ॥ ९ ॥
धनुषबाण बरुनी भुँहें, मृदु मुसक्यान कटार ।
तिरछीचितवनसेल सम, हँसि हेरन तलवार ॥ १० ॥
समर साज सबही सजे, अरु शृंगार अनेक ।
यह न लखी गढ मानने, लियो प्रथमही छेक ॥ ११॥

शृंगार लालजी ।

दोहा—चरण चारु नूपुर सजत, बजत करत जनु गान ।
मन मृग भूलत चौकडी, सुनि बरवे की तान ॥१२॥
रतन जडे तिनपै कडे, मनो गढे रतिनाथ ।
बडे कडे मन के निरखि, लै मन हाथों हाथ॥१३॥
भई न पटतर लालकी, रवि शशि हिये लजाय ।
सकुच सहित बनके कडे, पडे चरणमें आय ॥१४॥
कटि नटवर की निरखि दृग, चौंधत मुदित निमेष ।
क्षुद्र भाग कब सकत हैं, क्षुद्र घंटिका देख ॥ १५ ॥
कर कंकण मणि जटित को, हटत आंख कब देख ।
मुँदरी कह मुँदरी पलक, दृष्टि लगावत पेख ॥ १६ ॥
श्याम वरण चित हरण के, हाथन पै हथफूल ।
जिन्हें तके मन भूलिके, फेर न भूलै भूल ॥ १७ ॥
पहुँची तक पहुँची नहीं, जिनकी सुरत विशाल ।
बन्द बन्द सों बाजुवन, बांधि लई तत्काल ॥ १८ ॥

हिये हार गये हार तक, निरखनहार विहार ।
उपमा कहत बनी नहिं, रहे निहार निहार ॥ १९ ॥
नाक बुलाक सुहावनो, कुँडल लोल कपोल ।
नख शिख लों शृंगारबर, जाको तोलन मोल ॥२०॥
मुकुटमणी के शीस पै, मुकुट मणी छबि देत ।
कलँगी कल कब लन दे,वरबस मन हरि लेत॥२१॥
बँधे पेच के पेच बर, पेच पेच में पेच ।
फिर निकसे कब मन पडै, ऐसे पेच कुपेच ॥ २२ ॥
केश वेश शोभा बनी, को करि सकै बखान ।
घुँघरारे कारे सघन, चिकने कान प्रमान ॥ २३ ॥
कोमल अमल पुशाक बर, चुस्त चुनी सजि अंग ।
जाकीछबि निरखत गयो,निजछबि भूल अनंग॥२४॥
बागा जिन ममझो इसे, बाग लाल अनुकूल ।
बड भाग या बागके, जाम लालाफूल ॥ २५ ॥
बिंधा न जो या रूपको, लखि कछु रहा सुचेत ।
नन चोट सा ओटली, वचन वचन कब देत ॥ २६ ॥
झमत चलत मतग गति, कबहुँ ठिठक ठहरात ।
मनो मदन मद पान करि, भरि उमंगमें जात ॥२७॥
अधर मधुर हँसि हरत मन, कर बर कमल फिरात ।
भवन गवन चाहें कियो, रोक दिये कित जात ॥२८॥

सखा वचन लालजी प्रति ।

भले कान्ह अभिमान मन, ठान न मो सम आन ।
मानसमाननमानजिहिं, मिल्यो आज सन्मान॥२९॥
ठढ़ रहौ न कहौ अहो, कहां चले रसखान ।
जाके मान गुमान तुम, कियो मान सच मान॥ ३० ॥

कवि वचन ।

सुनत सुन्न चितवत चकित, सोचत चित चितचोर ।
सुपन तकौ कै जाग तौ, भलो भयो भ्रम भोर ॥३१॥
घबराये सुधि बुधि उडी, थरहर काँपत अंग ।
पानी मद को जो चढ्यो, उतरि गयो इकसंग॥३२॥
अहो दई कैसी भई, कही कहा इन बात ।
प्यारी प्यार बिसारि के,मान कियो क्यों प्रात॥३३॥

लालजी वचन सखी प्रति ।

सखी तोहि सों सांच कहि, सांची है कै झूँठ ।
कहूँ झूँठ को नाम सुनि, सांच न जावें रूठ ॥ ३४ ॥
रैन तोहि सपनो भयो, कै तू आई देख ।
अथवा अपनी ओर ते, पढत मीन अरु मेख॥३५॥

सखी वचन लालजी प्रति ।

सुनत हँसी हरि को हँसी, हँसी न और प्रकार ।
अभी परैगी ए लला, झूठ सांच की सार ॥ ३६ ॥

कवि वचन ।

तब मानी मन लाल शुक, सांच कहत ब्रजनार ।
विरह जाल मोपै दियो, मान शिकारी डार ॥ ३७॥

लालजी वचन ।

पुनि बोले भोले वदन, सो उपाय तू ठान ।
जा विधि पावै मान अब,भरी सभा अपमान॥३८॥

सखी वचन ।

बहुतेरे तेरे पढे, जोड़ तोड़ छल छन्द ।
एक न मेरे ढिग चले, चतुराई ब्रजचन्द ॥ ३९ ॥

लालजी वचन।

जो आज्ञा पाऊं सखी, आऊं तनक निहार।
प्रिय मुख पंकज पै परो, कैसे मान तुम्हार ॥ ४० ॥

सखी वचन।

प्रीतम सो दिन अब गये, करत रहे उपहास।
बिन बूझे जाते चले, दौर दौर के पास ॥ ४१ ॥

लालजी वचन।

जब तो तू भोरी हुती, अब तौ चतुर दिखात।
पकरि छडी छाँटे ठढी, बात बात में बात ॥ ४२ ॥

सखी वचन।

कहा कहानी लै ठडे, बात होय कछु बात।
चलो हटो सरको परे, मोहि न भीर सुहात ॥ ४३ ॥

लालजी वचन।

विनय करत बानी घिसी, ठढ़े बीतियो याम ॥
जिन में ऐसी निठुरता, तिन सों राखे राम ॥ ४४ ॥

सखी वचन।

छल बल करि केती कहो, रहा न द्योंगी जान।
चहे सुनो या कानते, चहे सुनो वा कान ॥ ४५ ॥

लालजी वचन।

पुनि अधीन ह्वै कर कहैं, जोर जोर बिन जोर।
सखी सखी ह्वै जिन बने, कृपन समान कठोर ॥ ४६ ॥

सखी वचन।

सुनत हेरि हँसि फेरि मुख, बोली बोली मार।
बिनय गिने को आप की, पै कहुँगी कहिडार ॥ ४७ ॥

कवि वचन ।

कही गई सुनि उन निकट, बिकट कियो जिन मान ।
छकी छबीली छबि निरखि, विनत जोरि द्वै पान ॥४८॥

सखी वचन श्रीजी प्रति ।

बिनय करूँ न करूँ कहो, कहा करूँ मतिधीर । बोलेते तब मान म, भिग परेगी बीर ॥ ४९ ॥ चन्द्रमुखी चपला चमक, चतुराई की खान । कारण कवन कियो कहो, कुँवरि किशोरी मान ॥ ५० ॥ जो ऐसेही मान को, चोरी लेओ बुलाय । द्वारपाल फिर द्वारपै, क्यों राखे बैठाय ॥ ५१ ॥

कवि वचन ।

उक्त वचन के बान इन, जब मारे द्वै चार ।
द्वारपाल भजिवे लगे, सूने तजिके द्वार ॥ ५२ ॥

श्रीजी वचन ।

भौंह सौंह करि सैन सों, बूझन लगी सुजान ।
एक रागनिबट्यो नहीं, तू कहा गावत तान ॥ ५३ ॥

सखी वचन ।

पिय चकोर बिन आप के, अति व्याकुल है आज ।
ज्यों झख जलते विलग गति, दरश देउ निशिराज ५४॥
प्रीतम हाल हवाल लखि, अरी निठुर ब्रजबाल ।
लाल कहां अब लाल हैं, या छिन तुमहो लाल ॥५५॥

कवि वचन ।

सुनत उठी तन फुरफुरी, फिर बैठी अनखात ।
फिर फिरके फरके अधर, बोली वचन रिसात ॥ ५६॥

श्रीजी वचन सखी प्रति।

चुपरी चुपरी जिन कहैं, चुपरी चुपरी बात ।
मिलन सीखिवे दे उन्हें, उपरी उपरी गात ॥ ५७ ॥
यहां कहा कछु बटत है, अडे खडे बन छैल ।
फैल फैल सोये यहां, वहीं मचावे फैल ॥ ५८ ॥
लाखन लखि लिख मन रखे, कपट किये जो श्याम ।
दया मया पति नहिं हया, जिन केसो किह काम ५९ ॥

कवि वचन ।

पय सुभाव सागर प्रिया, नीर मनो है मान ।
वचन उपायनसों भयो, विलग न मन खिसियान ६०
फिरि बगदी पिछले पगन, मुखते कढत न बैन ।
जिमि हारे खर सूरिमा, आवत नीचे नैन ॥ ६१ ॥
देखत ही सखि को मुख, निज मुख भयो उदास ।
सुख निवास विश्वासते, भये निराश तजि आस॥६२॥

लालजी वचन ।

क्यों मुरकी दुरकी इतै, कहा उपजियो ज्ञान ।
मुरकी मुरकी कानके, प्यारी मुरकी जान ॥ ६३ ॥

सखी वचन ।

लालन कहनी सो कही, वाने सुनी न कान ।
ऐसे गुरुते कब पढ़ी, झटपट छूटै मान ॥ ६४ ॥
साम दाम कहि कोटि विधि, समझाई तब हेत ।
सो काहू विधि प्राणपति, बात लगन नहिं देत॥६५॥
हेम वरण श्री लाडिली, रोस कोटमें आज ।
बठी मान मचान पै, सुनो लाल ब्रजराज ॥ ६६ ॥

चाह सुनावो चारि षट, कै दश आठ पुरान ।
जाके मन में मानहै, सो कब मानत ज्ञान ॥ ६७ ॥

व्याकुलता लालजी ।

करत विचार विचारनिधि, बहु विधि उर धरि धीर।
प्रिया कली ढ़िग में अली, किमि ह्वै पुजो समीर॥६८॥

लालजी वचन ।

गहि ठोडी ब्रजनारी की, बार बार लै वार ।
गुण न भूलि हौं हरि असन, चार चार पैं चार॥ ६९ ॥

सखी वचन ।

साँवलियो द्वारो हटो, लाल बेर किहि काम।
बूझो किस मिस मिलेंगी, मैं जामिनि हूँ श्याम॥७०॥
धीर धरो जग धीर बड, होत न धीर अधीर ।
भीर परी जो भीर ह्वै, ठढे द्वार करि भीर ॥ ७१ ॥

लालजी वचन ।

धरा धरूं तो धर सकूं, धीर न धारयो जाय ।
जिन रस चाख्यो प्रेमको, तिन्हें न और सुहाय॥७२॥
जान जान जिन मिस करो, होवै जान सुजान ।
जान न देवौ जानयो, नातर देवो जान ॥ ७३ ॥

कवि वचन ।

सखी लखी गति लालकी, निज मन रचत इलाज।
दरश स्वाति बिन कल न लै, पिया पंपीहा आज७४॥
मृग छौना किमि सग लै, भीतर करूं पयान ।
सनमुख मान चला रह्यो, बंक बिलोकन बान॥७५॥
या विधि सों सोचत सखी, पुनि मन कियो विचार ।
फिर छबि रहै कि ना रहै, जैसी बनी अवार ॥७६ ॥

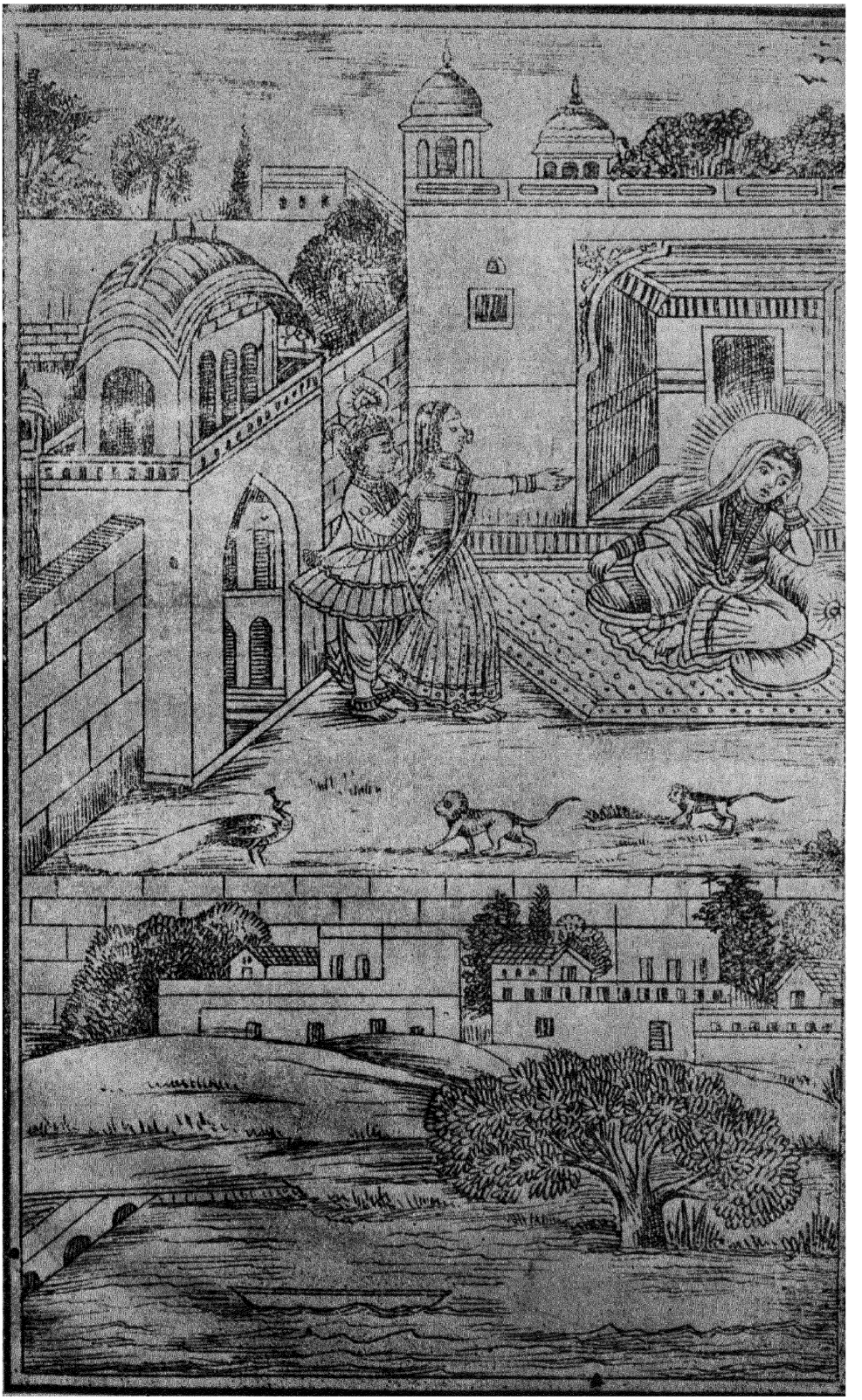

अब दिखाऊँ पिय भ्रमर कूं, यह शोभा को साज।
कली खिलै हो फूल यह, फूल कली भइ आज ॥७७॥
चंद्र बदन सुख सदन को, संग लै चली ताँह।
मुरझ रही रवि मान सों, प्रिय कमोदिनी जाँह॥७८॥

व्यवस्था लालजी।

लगी मिलन की चटपटी, भूली सुरति वियोग।
कब दृग पक्षी चुगेंगे, दरशन रूपी चोग ॥ ७९ ॥
देखि दूरिते भूरि छबि, दूरि दिये दुख टाल।
दुरे दूरिते जिन कहैं, दूरि रहो गोपाल ॥ ८० ॥

मानकी शोभा।

कर कपोल के धरि तरे, बैठी अति छबि पाय।
मानो तन धरि शान्तिरस, पौढचो कमल बिछाय८१॥
कोउ अंग फरकत नहीं, यों बैठी चुप चाप।
मानो भीति के चित्र की, छबि बनी है आप ॥८२॥
मुख उदास कछु दृग मुँदे, मनों उतारत स्वांग।
ज्यों योगी जन बठिके, करत योग अष्टांग ॥ ८३ ॥
बैठी नागरि मौन गहि, बिथुरी अलकन जोय।
मानो कमलनि जानि निशि, मुख मुंदे रहे सोय ८४॥
लटकन के मोती लटक, अरधन पै की भीर।
मानो लालसों यों कहै, छीनि लई जागीर ॥ ८५ ॥
लट ह्वै नैन कपोल पै, शोभा देत अपार ।
बैठि नागिनी कमल पै, दरपन रही निहार ॥८६ ॥
माथे मोतिन बदनी, यह शोभा नइ भाँति।
रूप मानसर के निकट, बैठी हंसन पांति ॥ ८७ ॥

टढे टढे निरखत पिया, शोभा शोभाखान ।
मुख बनाव बैठन अदा, धरन कपोलन पान ॥ ८८ ॥
पथिक पीय मन मांगि मग, बैनी परसन जात ।
सीसफूल ठग बीचमें, करत रोक उत्पात ॥ ८९ ॥
गौर बरण भौं बंक बर, लोचन अरुण सुहात ।
मतवारे दो खड्ग लै, ठढे उजेरी रात ॥ ९० ॥
नैन देखि सुख लूटते, तरसन लागे कान ।
आज हि प्यासे हम रहे, सुधा बचन बिन पान ॥९१॥

कवि वचन ।

श्री छबि सिंधु अथाह की, को कैसे ले थाह ।
अंगतरंग भुहें भँवर, अलक उरग दृग ग्राह ॥ ९२ ॥

विनय लालजी की ।

निरख निरख शोभा हरष, पिय हित होत अपार ।
डरत डरत बिनती करत, जै श्री राजकुमार ॥ ९३ ॥
पंकज बिषधर मीनमृग, सर खंजन बादाम ।
प्यारी तेरे दृगनके, यह बिन दाम गुलाम ॥ ९४ ॥
समझ सुघरता शीलसम, सार असार बिचार ।
सुमुखि सुलोचनि सकल गुण, तुमें दिये करतार ९५॥

सखी वचन श्रीजी प्रति ।

मिलन वचन सुस्नेह युत, बोली सखी बिचार ।
प्यारी पिय ठाढो निकट, उठि निहार बलिहार॥९६॥
जा मृग को घायल कियो, तिरछी चितवन बान ।
परख लेउ जिन फिर कहो, तू लाई है आन ॥ ९७ ॥

श्रीजी वचन सखी प्रति।

नैन तरेरे बंक भौं, श्रवण सुनत पिय नाम।
रिस बश ह्वै कहि ह्यां कहां, श्याम श्याम मनकाम९८
लजत निलज्ज न लजत हैं, लाजवान के नैन।
द्वार द्वार झुकि झाँकिके, आये दरशन दैन ॥ ९९ ॥

सखी वचन श्रीजी प्रति।

कहां गये किन के रहे, लखी कौन सी बात।
कै योंही घर बैठिके, परके काग उड़ात ॥ १०० ॥

श्रीजी वचन सखी प्रति।

इनहीं सों बूझैं नहीं, जो ठाढे करि भीर ॥
कर कंगन को आरसी, कहा करैगी बीर ॥ १०१ ॥
सजनी सजनी के रहे, रजनी भरि घनश्याम ॥
भवन भवन भयरात निशि, भोरआय मम धाम १०२॥

लालजी वचन श्रीजी प्रति।

सुनि प्रिय के भोरे बचन, रचन श्रवण चित चोर ॥
बोले कछु मुसिक्यायके, नागर नवल किशोर १०३
प्यारी प्यारी आपतें, को जासों है हेत ॥
मैं येहू जानूं नहीं, कारो है के श्वेत ॥ १०४ ॥

श्रीजी वचन लालजी प्रति।

मुकुर मुकर जिन बात कहु, मकर हँसत हैं कान ॥
मुकरौ मुकुर निहारि कै, मुख मुकरे की शान॥ १०५॥

लालजी वचन श्रीजी प्रति।

सोच विमोचन सोचिके, निर्दोषे दे दोस ॥
बिन आज्ञा या द्वार की, चौखट सौ सौ कोस १०६॥

श्रीजी वचन लालजी प्रति ।

वृथा बात गढि गढि कहौ, समझि लियो कछु खेल॥
एक न मानू तुम चहैं, केते पापर बेल ॥ १०७ ॥

लालजी वचन श्रीजी प्रति ।

अभय कियो अपनाय के, विदित सकल संसार ॥
आज कहा मन में भई. देत द्वार तें टार ॥ १०८ ॥

श्रीजी वचन लालजी प्रति ।

ढाल ढाल मुख सों कहौ, चटपट चटपट बात ॥
यह अचरज विद्या घनी, पढे एकही रात ॥ १०९ ॥

कवि वचन ।

आज बनी शोभा युगल, को वर्णत मतिधीर ॥
भोरा पन अरु दीनता, मानो धरे शरीर ११० ॥

लालजी वचन श्रीजी प्रति ।

रैन सुवे की किन कथा, श्रवण करी दुसराय ॥
तब सुधि आई मानिनी, तुरत गई मुसिक्याय १११

हरष मान मोचन ।

हँसत हँसत सखि कंचुकिन, टूटि टूटि गये बंद ॥
मंदिर के अंदर नयो, पूरि रह्यो आनन्द ॥ ११२ ॥

कवि वचन ।

उत चितवन मुसिक्यान इत, दंपति अति छबि देत ॥
मानो बांटत बायनों, सजनी हँस हँस लेत ॥११३॥
रसिक जनन की कृपाते, कियो कछुक गुणगान ॥
नतु नारायण बापुरो, याको सके बखान ॥ ११४ ॥
ब्रजबासी धनि धनि विपनि, संत स्वामि गुरुदेव ॥
जासु कृपातें कछु मिल्यो, गुप्त रहसको भेव ॥११५॥

विघन हरन मंगल करन, चरन जुगल सरकार ॥
नारायण निज जनन के, जीवन प्राणअधार ॥११६॥
इति श्रीनारायणस्वामीजीकृत मानलीला दोहावली सम्पूर्णा ॥१०॥

अथ खण्डिता मानलीला प्रारंभ ।

समाजी वचन ।

दोहा–एक सखी अति प्रेम वश, भवन बुलाये लाल !
बातन में उरझायके, निरखत रूप विशाल ॥ १ ॥
दोहा–अपर सखी छिपके तहां, कौतुक सकल निहार ।
जायकह्यो पुनि प्रियासों, कछुक सहित विस्तार॥२॥
दोहा–यह सुनिके प्रिय रिस भई, पुनि इक सखी बुलाय ।
कही तासु जा देख तू, लाल कहां बिरमाय ॥ ३ ॥

वार्त्तिक ।

जब या सखीने वा सखी के द्वार पै जायके बूझी क्यों री ! तेरे घरमें लालजी पधारे हैं ? तब वह सखी बोली अरी बीर ! क्यों हांसी करै, तेरे घर जो लालजी पधारतेहैं या सों जो तू कहै सो सब साँच ॥ ४ ॥

फिर सखी वचन वा सखी प्रति ।

कालिंगडा ।

तेरे भव यह कौन बिराजैं ॥ आस्ताई ॥ वचन मनोहर भाषत तोसों, कबहुँ मधुर धुनि नूपुर बाजैं ॥ मोर मुकुट की झलक परत है, जाहि निरखि रवि शशि मन लाजैं ॥ नारायण तू सांच कही री, यह तिहारे आये किहि काजैं ॥ ५ ॥

वार्त्तिक ।

यह वचन सखीको सुनिके श्रीलालजी बाहर निकसि आये, अरु सकुचके बोले, अरी ! कहुँ प्यारी जी सों मति

कहियो, तब सखी बोली, मैं कहा कहूँगी, दूतीने पहलेही समाचार पहुँचायके मान कराय दियो है ॥ ६ ॥

सखी वचन लालजी सों ।

झंझोटीका जिला ।

कितनो समझाय रही, परघर जिन जावौ रात उघरैगी बात प्रात छिपी ना रहैगी॥आस्ताई ॥ दूती जन चहु ओर डोलत हैं याहि काज, झूँठ सांच जाय कोउ प्यारी सों कहेगी ॥ राजनके होयँ कान जैसे कहौ लेत मान, ताहूपै यह प्रगट चूक कैसे वो सहैगी ॥ नारायण जैसो तुम उनको जियै चाहौ गे, तैसोही तुम्हें भानुनन्दनी चहैगी ॥ ७ ॥

वार्तिक ।

फिर सखीने कही आप मेरे संग पधारो जो कछुमोसों बनेगी मैं सबप्रकार उनसों बिनती करूँगी ॥ ८ ॥

सखीवचन श्रीजी प्रति ।

जिला ।

प्यारी तेरे आगे ठाढ़े नंदकिशोर ॥ आस्ताई ॥ लाज भरे दृग करत न सन्मुख, निरखत धरती ओर ॥ बिन समझे इनसों बनिआये, औगुन लाख करोर ॥ नारायण अब क्षमा कीजिये, यह माँगूं कर जोर ॥ ९ ॥

श्रीजी वचन लालजी प्रति ।

जैजैवंती ।

कौन काज यहां आवत हौ जू ॥ आस्ताई ॥ देखि लिये सौतिन घर बैठे, अब क्यों बात बनावत हौ जू ॥ जासों करत नई रस बतियां, हँसि हँसि कंठ लगावत हौ जू ॥ नारायण वाही के जावो, मोसों कहा सकुचावत हौ जू ॥ १० ॥

लालजी वचन श्रीजी प्रति ।

जिला ।

प्यारी सुघर सुकुमारी नेक समझके कीजै मान ॥ आस्ताई ॥ मैं तो गयो न काहू के भले ठीक करौ छबिखान ॥ दूती को कहा मिलैगो उन रस में दीयो विषसान ॥ प्रगटी निपट घर फोरी जाने एक सो द्व किये प्रान ॥ सांची कही काहूने बड़े लोगन के ह्वै कान ॥ तुमतो प्रिये अति भोरी नहिं सांच झूंठ को ज्ञान ॥ मेरो तौ मन मधुकर है तुमरो मुख कमल समान ॥ नारायण नितप्रति मोकूं एक आपहीको रहै ध्यान ॥ ११ ॥

वार्तिक ।

जब श्रीलालजीने देख्यो, कि या भांति सों मान नहीं छूटै, तब बाहर आयके सखी भेष धारण करि फिर श्री प्रियाजीके निकट जायके समझायवेलगे, हे प्यारी ! आपकूं ऐसो मान करिवो योग्य नहीं, क्योंकि आप प्रीति की रीति को जानों हौ, और आज मैं तिहारे प्रीतम सों तिहारे मनायबेको बीरा उठायके आई हूँ, अब मेरे आयबे की लाज राखो ॥ १२ ॥

साँवरी को वचन ।

रेखता ।

भूपालीके स्वर ।

इतनो न मान कीजै, वृषभान की दुलारी ॥ तेरे मनायबेमें मोहि श्रम भयो है भारी ॥ इतनो० ॥ प्रीतमको आज तो बिन, पल छिन न चैन आवै, नहीं जी लगत भवनमें, नहिं बन की छबि सुहावै ॥ हँसि बोलिवौ कहांको, नहिं खान पान भावै ॥ हाथन में चित्र तेरौ, पुनि पुनि हिये लगावै ॥ अति विकल ह्वै रह्यो है, वह सांवरो बिहारी ॥ इतनो० ॥ प्यारेके आगे अपने, मैं

गुणकी कर बड़ाई ॥ तेरे मनायवेकौ,बीरा उठाके आई॥ बल बुद्धि मो में जितनी,तितनी मैं सब लगाई । पै नेक हू न मेरी, चतुराई काम आई॥सब विधि सों राजनीति,मैं कहि कहिके तो सों हारी॥इतनो०॥तेरी तो नित बडाई,सब सखी जन बखानें॥ प्यारी हिये की कोमल, सुपनेहू रिस न जाने॥ यह आज कहा भयो है, बैठी हो भ्रुकुटी ताने ॥ उन सखीजन को कहिवौ, अब कौन सांच मानै॥सब झूँठही बडाई,भामिनि करें तिहारी ॥ इतनो० ॥ लालनके साथ मिलके, बन शोभा निरखौ प्यारी ॥ कहूँ सघन ललित छाया, कहुँ फूली फुलवारी ॥ जलसों भरे सरोवर, झुकिरहि द्रुमन की डारी ॥ बोलत अनेक पक्षी, बरनत हैं छबि तिहारी ॥बलि बेगिही पधारौ, यह लालसा हमारी॥इतनो०॥एरी सुघर सयानी,मो बिन्ती मानि लीजै ॥ तजिके यह मान मुद्रा, प्यारे सों हेत कीजै ॥ नितही अधर सुधारस, हँसि हँसिके दोऊ पीजै ॥ फिरकर न उनसों रूठौ, वरदान यही दीजै ॥ नारायण याही कारण, निजगोदमें पसारी इतनो० ॥ १३ ॥

वार्त्तिक ।

यह नईरूप मनोहर देखिके श्रीजीने इनको हाथ पकरिके कह्यो, अरी ! तू नेक बैठि तौ जा, यह पंचायत पीछे करि लीजो, तब सखी पास तें बोली बलिहार, हमारो कहबो तौ न मान्यो,अब अपनी राजी सों हाथ पकरिके पास बैठायवे लगीं, इतसों लालजी बोले; बांह गहेकी लाज । यह वचन सुनिके श्रीजी सकुच सहित मुसिक्याय गईं, लालजी गल बैयां दैके हँसिवे लगे, ता पीछे सखियनने व्यारू भोग करायके आरती करी ॥ १४ ॥

दोहा–श्रीराधा गोविंदकी, लीला परम उदार ।
नारायण गाये सुनें, देत पदारथ चार ॥ १९ ॥
इति श्रीखंडिता मानलीला श्रीनारायण स्वामीजीकृत सम्पूर्ण॥ ११ ॥

अथ श्रीसम्भ्रम-मानलीला प्रारम्भ ।

समाजी वचन ।

दोहा–बड़े भोर सुखसेजतें, जगे पिया छबि ऐन ।
प्यारी के शृंगार हित, चल सुमन बन लैन ॥ १ ॥
दोहा–सोवत में पुनि लाडिली, सपनों देख्यो एक ।
निज प्रीतम मिलि और सों, क्रीडा करत अनेक॥२॥
दोहा–ता पीछे जागी लली, निकट न देखे श्याम ।
तब मन में निश्चय भयो, गये काहु के धाम ॥ ३ ॥
दोहा–एक सखी सों कही तब, ठाढ़ी रहि तू द्वार ।
मन्दिर में आवै नहीं, कपटी नन्दकुमार ॥ ४ ॥

श्रीजीवचन दूसरी सखी प्रति ।

दादरा बरवै पीलूका जिला ।

सखी नन्दलाला आवन नहीं पावैं ॥ आस्ताई ॥ भीतर चरन धरन जिन दीजो, चाहें जिते ललचावैं ॥ ऐसेनको विश्वास कहा री, कपट की बात बनावैं ॥ नारायण एक मेरे भवन बिन, अन्त चाहैं जहां जावैं ॥ ५ ॥
दोहा–सुमन बीनि जब सांवरो, आयो मन्दिर द्वार
सखी न भीतर जान दे, बरजत बारम्बार ॥ ६ ॥

लालजी वचन ।

दादरा ।

इमें तू जिन रोकै नवल ब्रज गोरी ॥ आस्ताई ॥ मो मन में यह सांच न आवत, रूठी हो भानकिशोरी ॥ बीचहिते

क्यों बात बनावत, रिससों भौंह मरोरी ॥ नारायण विधिको कहा सूझी, तोसी रची घर फोरी ॥ ७ ॥

सखी वचन लालजी प्रति ।

कालिंगडा ।

द्वारपै क्यों ठाढे ब्रजराज ॥ आस्ताई ॥ जहां सो आये वहीं जावो तुम, यहाँ नहीं कछु काज ॥ लाख भाँति सो बिनय करो तुम, एक न मानूं आज ॥ नारायण बलिहार तिहारी, नेक न आवत लाज ॥ ८ ॥

लालजी वचन सखीप्रति ।

कालिंगडा ।

लाज सो मेरो काज कहारी ॥ आस्ताई ॥ बिन प्यारी मोहिं कल न परत है, इक इक पल बीतत है भारी ॥ ऐसी कहा चूक भई मोपै, तुम सजनी सब देखन हारी ॥ नारायण मोहि बेगि बतावो, क्यों रूठी वृषभान दुलारी ॥ ९ ॥

सखी वचन लालजी प्रति ।

कालिंगडा ।

मैंकहा जानूं कुंजबिहारी ॥ आस्ताई ॥ किहि कारण रूठी हैं तुम सों, चंद्रमुखी वृषभानकुमारी ॥ जबते उठी प्रिया सोवततें, तबही सों मन में रिस भारी ॥ ना जानूं कछु सपने में उन, देखी हो करतूति तिहारी ॥ ठाढे रहो भीतर मति जावो, प्रीतम मानों कही हमारी ॥ नारायण जो भुज गहि रोकूं, फिर कहा बात रहै गिरिधारी ॥ १० ॥

लालजी वचन सखी प्रति ।

झंझोटी ।

मोहि मति रोकै री तू, एरीब्रजनागरी ॥ आस्ताई ॥ रूप की निधान है तू, गुणनकी खान है तू, तेरी सम कौन आज,

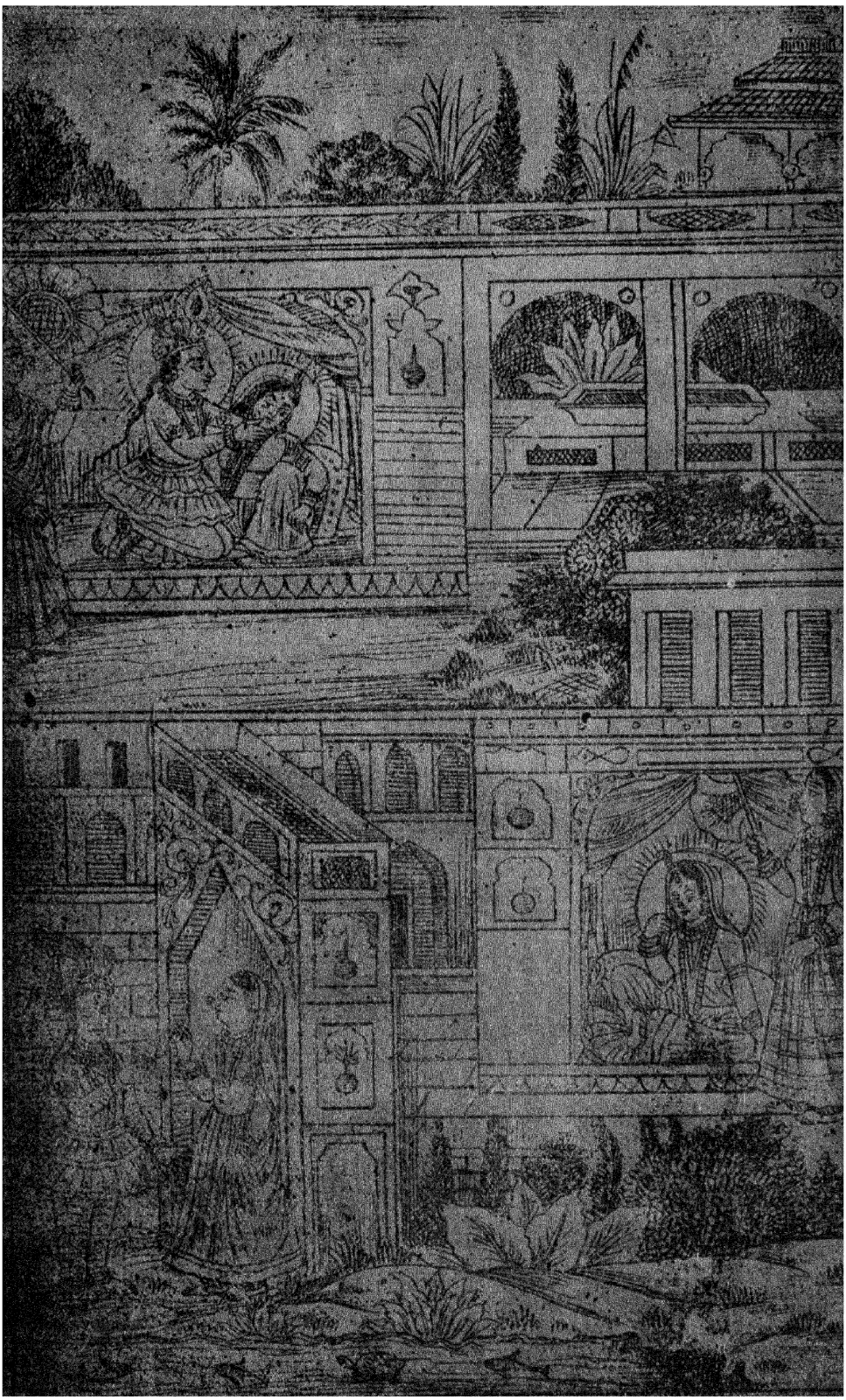

तेरो बडो भाग री ॥ कहै तौ मैं नृत्य करूं, बांसुरी में राग भरूं, कान्हरो किदारो भैरों, सोरठ बिहाग री ॥ तू तो सदा उपकारी, हितकी करनहारी, आज नारायण मोसों, क्यों राखै तू लाग री ॥ ११ ॥

वार्तिक।

सखी बोली है प्यारे! यामें मेरो कछु दोष नहीं मैं तो उनकी आज्ञासों रोकूं, परन्तु अब आप एक काम कीजै, जा रीतिसों मैं कहूं वाही रीतिसों उनके निकट जायके विनती करौ ॥ १२ ॥

झंझोटी का जिला।

प्यारी ढिग जाय लाल धीरे वचन कहियो ॥ आस्ताई ॥ नीची रखि दृष्टि नैन, विनती कीजो बिचारी, सन्मुख ह्वै ठाढे दोऊ हाथ जोरे रहियो ॥ अचरा मुख पै दुराय कबहूं भूषण सँभारि ह्वैके बलिहार उनकी कबहूँ ठोडी गहियो ॥ नारायण भूलिकेन डरपियो निरादरसों, जो कछु वह कहैं आप, सबही बात सहियो ॥ १३ ॥

दोहा—सखी वचन सुनि मुदित मन, गये प्रिया ढिग लाल।
भोरहि आज उदास क्यों, एरी रूप विशाल ॥ १४ ॥

प्रियाजी वचन लालजी प्रति।

ठुमरी खम्माच।

प्यारे तेरे जिय की न जानी जाय बात रे॥ आस्ताई॥ कहूं तो सांझ आधी रात, रहत कहूँ पिछिली रात, कहूं प्रात रे ॥ उनहीं सों जाओ, बतराओ सुख पाओ तुम, जिन यह सिखाये दाँव घात रे ॥ अब तोसों भूलिके न बोलूं नारायण, जहाँ लग अपनी बसात रे ॥ १५ ॥

लालजी वचन ।

ठुमरी जिले में ।

प्यारी जी तिहारे बिन कल न परत है॥आस्ताई॥ मंदिर अटारी चित्रसारी और फुलवारी, मोहि कछु प्रिय न लगत है ॥ घनो समझायो इत उत बहलायो पुनि, तौहू मन धीर न धरत है ॥ एतौ हठ आगे कब कियो नारायण, जेतौ हठ आज तू करत है ॥ १६ ॥

वार्तिक ।

जब श्रीलालजी किशोरीजीकी बलैयां लैके गलबैयां दैवे लगे तब श्री किशोरीजी को वचन ॥ १७ ॥

ठुमरी खम्माच ।

प्यारे मेरें गरवा में जिन डारो बैयां ॥आस्ताई॥ छुओ न लँगर मेरो पकरौ न कर तुम, छाँडो अब कपट बलैयां॥जावो पिया वाही मन भाईके भवन तुम जाके निस परत हौ पैयां॥ झूंठी मूंठी सौंहें क्यों खाओ नारायण, जानूं मैं तिहारी चतुरैयां ॥ १८ ॥

लालजी वचन श्रीजी प्रति।

जोगिया ।

सांची कहौ किधों हांसी करौ जी ॥ आस्ताई ॥ आज कहा कारण जो मोसों, बेर बेर कहौ यहां सों टरौ जी ॥कौन सखी कितमें घर वाकों, तुम जाको मोहिं दोष धरौ जी ॥ नारायण यही अचरज मोको,झूँठ कहत नहिं नेक डरौ जी १९॥

श्रीजी वचन लालजी प्रति ।

कालिंगडा ।

श्याम तुम वाही सजनी के पधारौ ॥ आस्ताई ॥ जाके बिना पल चैन न तुमको, झांकत हौ निशि ताही को द्वारौ॥

यहां ढाढे क्यों देर लगावत जाओ लाल नवरूप निहारौ ॥ नारायण तिहारी बातन को, अब मोको न रह्यो पतियारौ२०॥

लालजी वचन।

लावनी की राह में।

उठौ अब मान तजौ गोरी। रही है रैन बहुत थोरी ॥ आस्ताई॥सदा सों तुम मनकी भोरी॥कहूं मैं शप्त खाय तोरी॥ औरन के बहकाये तुम, करि बैठति हौ रोष ॥ झूँठ सांच वर खत नहीं, वृथा देत हौ दोष॥यही मोहिं अचरज है भारी॥१॥ तनक हँसि चितवौ सुकुमारी ॥ शशी मुखपै हूँ बलिहारी ॥ अपनी ओर निहारिके, देव अभय वरदान ॥ क्षमा करौ सब चूक अब, जो कछु भई अजान ॥ एती बिनती मानों मोरी ॥ २ ॥ तिहारे गुण नितप्रति गाऊं ॥ बिना आज्ञा न कहूं जाऊं ॥ ताहू पै दृग अरुण करि, भृकुटी लेत चढाय ॥ जोरावर सों निबल की, काहू बिधि न बसाय ॥ हारे हूं हार जीतेहू हार ॥ ३ ॥ जिन्हें तुम समझौ हितकारी, सोई अति कपटी व्रजनारी ॥ हम में फूट करायके, आप अलग मुसिक्यात ॥ नारायण तुमने करी, खरी न्यावकी बात ॥ भलेको दंड बुरे पै प्यार ॥ ४ ॥ २१ ॥

वार्तिक।

पास तें सखी बोली हे प्यारी! ऐसे अपने प्रीतम प्यारे की ओरसों कठोर न होनो चाहिये ॥ २२ ॥

सखी वचन।

ध्रुपद।

तेरो री मुखारविंद, शरदचंद, छबिनिकन्द ताहि सदा निरखिवेको सांवरो चकोर है ॥ आस्ताई ॥ तापर तू

भ्रुकुटी तानि, बैठत नित मान ठानि, छाँडत नहिं रिसकी बानि, बडी तू कठोर है ॥ ता दिनते सौंह खाई, अब नहि रूठोंगी माई, चाहें पिया प्यारे मांहि, औगुन करोरे है ॥ यह सुनि मुसिक्याई बाल, अंक भरे नवल लाल, नारायण हरखि सखी, डारत तृण तोर है ॥ २३ ॥

दोहा—भानुकुमरि नँदलालकी, यह लीला अभिराम ।
नारायण हितसों सुने, पूरण होंवे काम ॥ २४ ॥

इति श्रीनारायण स्वामीजीकृता संभ्रममानलीला सम्पूर्णा ॥ १२ ॥

अथ रूपगर्वितामानलीला प्रारंभ ।

समाजी वचन ।

दोहा—शशिवदनी प्रियसों कह्यो, प्रीतम अतिहरषाय ।
यह सुनि प्यारी रिस भई, भृकुटी लई चढाय ॥ १ ॥

श्रीजी वचन लालजी प्रति ।

दोहा—तरक वचन सों करत तुम, मोमुख अस्तुतिलाल ।
ज्यों भुजग सूधीहु मग, चले भुयंगही चाल ॥ २ ॥
मो मुख सम किमि होय शशि, सुनो सावरो गात ।
घटत बढत सकलंक विष, बंधु प्रगट जड़ तात ॥ ३ ॥

लालजी वचन ।

वार्त्तिक ।

लालजी बोले हे प्राणप्यारी ! मैं तो सहज सुभाव आप के मुखकी बड़ाई करी हुती ॥ ४ ॥

श्रीजी वचन ।

दोहा—प्रीतम कछु बौरे भये, मोहि देत हौ सीख ।
मुख मीठे मनमें कपट, जाविधि गांठें ईख ॥ ५ ॥

समाजी वचन।

दोहा-निठुर वचन सुनि लालने, कही सखी सों
वा भोरी रिस भरी कूं, तुम समझावौ जाय ॥ ६ ॥

सखी वचन श्रीजी प्रति।

मल्हार तीन ताला।

काहे को मानिनि मान बढावत ॥ आस्ताई ॥ तोहि तौ बानि परी रूठन की, मैं नित हार गई हूं मनावत ॥ आप तनक मनमें नहिं समझति, औरन कूं भटु नीति सिखावत॥ नारायण प्रीतम प्यारे कूं, हँसि रसके क्यों न कंठ लगावत ॥ ७ ॥

श्रीजी वचन सखी प्रति।

जिला धीमाताल।

प्रीतमकी चरचा न चला री ॥ आस्ताई ॥ अब उनके गुण जानि गई मैं, जोवे खेलत कपट कलारी ॥ तू उनकी अति सुघड़ मिलनियां, और काहू सों जाय मिला री ॥ नारायण ऐसो संदेश तू, फेर कबू मो ढिग मति ला री ॥८॥

सखी वचन श्रीजी प्रति।

कान्हड़ा दरबारी।

ऐसो मान न कीजै बार बार ॥ आस्ताई ॥ एरी सुहागिनि भागिन तोपै, हों पीवौं जल बार बार ॥ उतसों लाल पठावत तो ढिग, तू इतसों दे टार टार ॥ मैं चौगानकी गेंद भई री, मेरे नहीं पग चार चार ॥ तेरो मान अपमान है मेरो, समझावत गइ हार हार ॥ नारायण विधि कस लगै, तू पात पात मैं डार डार ॥ ९ ॥

श्रीजी वचन ।

दोहा—जो इतसों रवि उत उगै, तौभी करूं न प्यार ।
फिरि तू क्यों आवत सखी, मो ढिग वारंवार ॥ १० ॥

सखी वचन श्रीजी प्रति ।

कालिंगडा ।

सुनि राधे तोहि ऐसी न चहिये ॥ आस्ताई ॥ जो अपने आधीन रहै नित; ताहि कहा इतनो डरपैये॥तुम कछु प्रीति की रीति न जानो, फिरि कहां लों तुमको समझैये॥नारायण यह प्रीति कहावैं, हँस रसके पिया कंठ लगैये ॥ ११ ॥

श्रीजी वचन सखी प्रति ।

देश धीमा ताल ।

चलि हटि री सखी क्यों बात गढ़त, सो मैं सब जानूंजो वह पाटी पढ़त, हिय कपट बचन मानो फूल से झड़त ॥ आस्ताई ॥ जानि नेक कहेकी न आवत लाज, मन भावतही करत फिरत है काज, मोहि इनहीं लछिन सों रिसहू बढत ॥ अब नारायण मैं न करूँगी प्यार, नित देखिचुकी वाकी यही है तार, जेती कीजिये बडाई तेतो मूँड पै चढ़त ॥ १२ ॥

सखी वचन श्रीजी प्रति ।

जिला ।

तोसी नहीं कोऊ देखी री हठीली ॥आस्ताई॥ज्यों ज्यों मैं अब तोहिं मनावत, त्यों त्यों तू होवै अति गरवीली॥ऐसे समय बलि रोश न कीजै, भौंहें कमान तनक कार ढीली॥नारायण उठि मिलि प्रीतमसों, तजि दै मानकी बानछबीली॥१३॥

वार्तिक ।

फिर सखीने लालजी सों जाय कही हे प्यारे ! आप झटपट नागरी भेष धारिके प्रियाजीके भवन द्वार पै आयके बार

बार भीतरकूं झांकियो, जब उनकी दृष्टि तिहारे ऊपर पर अरु तुम्हें बुलायके कछु बूझे तो जा भांतिसों मैं समझाय चली हूँ वाही रीति सो उनको उत्तर दीजो ॥ १४ ॥

कान्हड़ा झपताला।

देखि री आज नवनागरी भेष धरि, ललीके छलन हित ललन कैसे सजैं॥आस्ताई॥ पहर भूषण बसन, दृगन कजरा दियो, निरखि शृंगार सुरवधू मनमें लजैं ॥ मन्द मुसिक्यान मग चलत गति ठुमकि के,मधुर धुनि किंकिणि चरणनूपुर बजैं, रूप अभिराम नारायण लखि श्याम को, कोनसी माननी मान जो न तजैं ॥ १५ ॥

समाजी वचन।

दोहा–जाय द्वार ठाड़ी भई, सांवरि रूप विशाल।
पुनि पुनि झांकत भवनमें, अद्भुत जाके ख्याल॥१६॥

किशोरीजी वचन।

दोहा–अरी सखी उठि देखि तू, को झांकत है द्वार।
याकूं तनक बुलाय ला, बूझें ढिग बैठार ॥ १७ ॥

श्रीजी वचन नागरी प्रति।

सोरठ धीमा ताल।

या बिरियां सखी तू कित डोलै री॥आस्ताई॥ निपटअकेली संग न सहेली, पग पग में अपनी छबी तोलै री॥नहिं अवसर दधि बेचन को अब,पिछिली रैनिपहरुआ बोलैरी ॥नारायण अति चतुर सांवरी,नेहकी गांठि तनक नहिंखोलै री १८॥

नवनागरी वचन श्रीजी प्रति।

जंगला काफी।

सकल वृत्तान्त कहूं मैं तुमसों,सुनो दयानिधि भानुलली॥ आस्ताई ॥ एक सखी कूं मिलन चली मैं संग लिये दश

पांच अली ॥ पीछेते कही टेरि काहु ने आयो तुमे पकरन को छली ॥ यह सुनिके सँगकी सब भागीं, काहू गली कोऊ काहू गली ॥ मैं पुनि दौरि यहां आय दुबकी, देखि मनोहर ठौर भली ॥ नारायण भई भेट आपसों, कछु मेरी पुनि बेलि फली ॥ १९ ॥

श्रीजी वचन सांवरी प्रति।

दोहा–राति यहां विश्राम करि, एरी साँवरी अंग ।
प्रात भवन पहुँचाउँगी, तोहि सखीके संग ॥ २० ॥

वार्त्तिक ।

यह वचन सुनिके सखी बलिहार प्रिया प्रीतमकी कहिवे लगीं, तब श्रीजी अचरज ह्वै के बोलीं, अरी सखी ! कछु देखि भारिके बात कहौ, पुनि सखी कर जोरिके बोली हे प्यारी ! अब आपही देखि भारी लीजै, तब श्रीजीने लालजी की ओर देख्यौ, लालजी झट मुसिक्याय गये फिर तौ हँसी की बातें हैवे लगीं, लालजीने कही हे प्यारी, ! आप तौ नेकसी बात में मान करि बैठती हो ॥ २१ ॥

श्रीजी वचन लालजी प्रति ।

खम्माच ।

प्रीतम तुम मोहि प्रान ते प्यारो ॥ आस्ताई ॥ जो तोहि देखि हिये सुख पावत, सो बड भागिन वारो ॥ तुम जीवन धन सरवस तुमहीं तुमहीं दृगन को तारो ॥ जो तुमको पलभर न निहारूं दीखत जग अँधियारो ॥ मोद बढावनके कारण हम, मानिनी रूपको धारो ॥ नारायण हम दोउ एक हैं, फूल सुगंधि न न्यारो ॥ २२ ॥

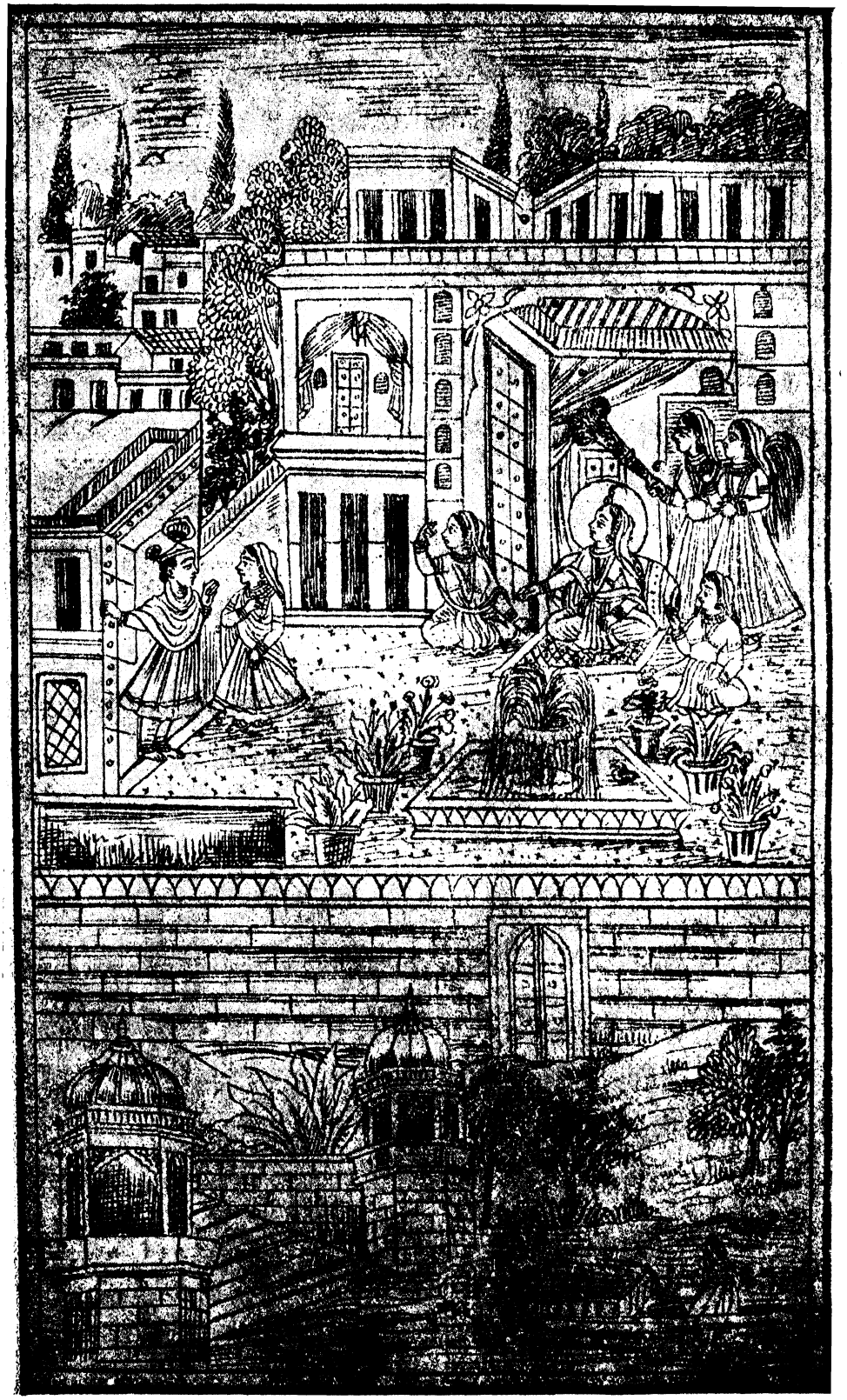

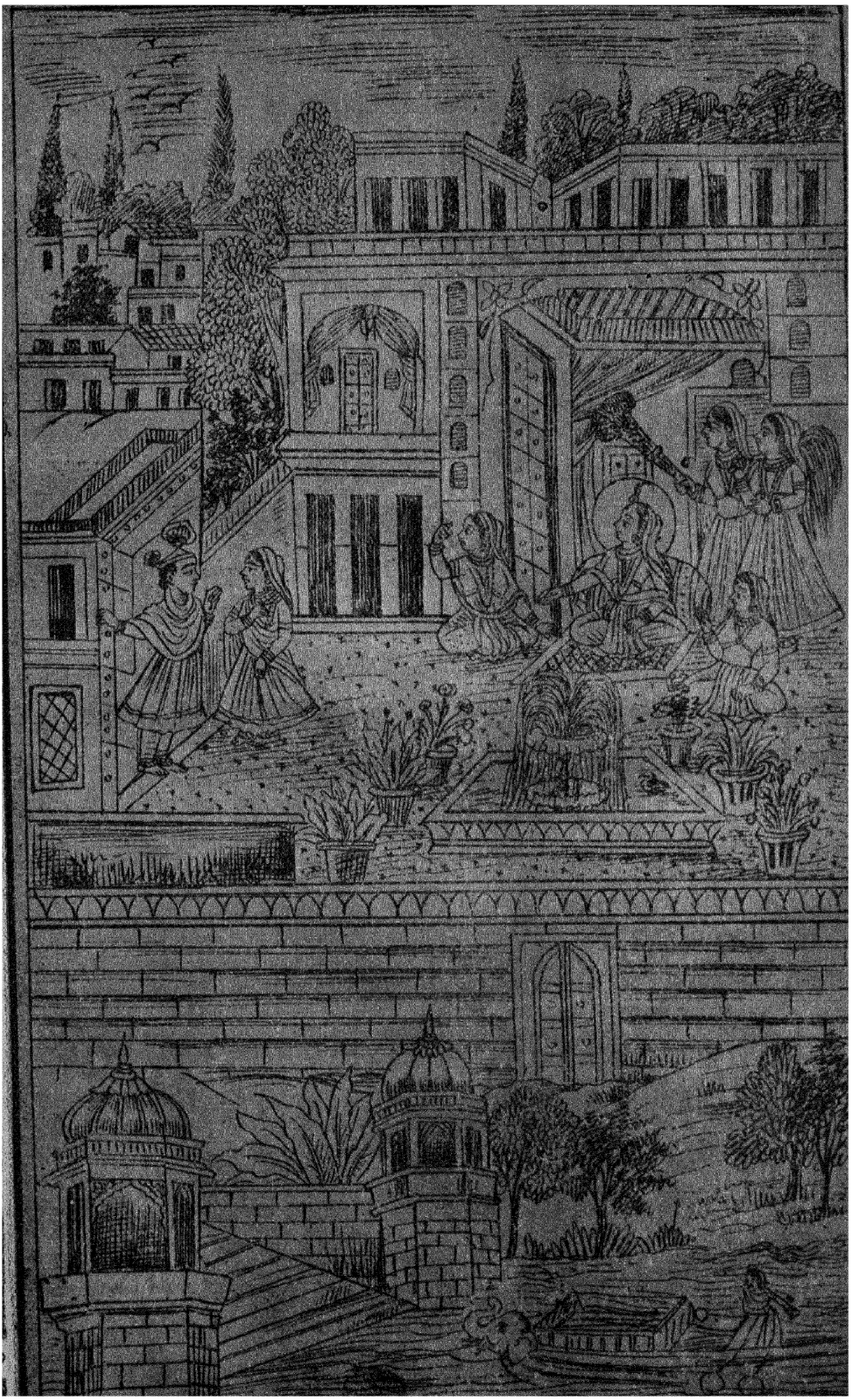

दोहा–नारायण गावें सुने, ये लीला सुख धाम।
प्रियाप्रीतममें मनलगै, रसिकनमें ह्वै नाम ॥ २३ ॥
इति श्रीनारायणस्वामीजीकृत रूपगर्वितामानलीला संपूर्णा ॥ १३ ॥

अथ नवपनिहारीलीलाप्रारंभ।

समाजी वचन।

दोहा–ब्रजमंडल के बास की, करत चतुर्मुख आस।
नारायण ते धन्य हैं, जिनको नित्य निवास ॥ १ ॥
दोहा–पनघटकी लीला सुनों, सज्जन जन धरि ध्यान।
नारायण वर्णन करूं, अपनी बुद्धि प्रमान ॥ २ ॥
दोहा–एक दिवस उठि भोरही, छलिया श्याम सुजान।
त्रिया भेष धरिके चले, गली भूप वृषभान ॥ ३ ॥
दोहा–शिरपै सोहै ईंडुरी, रत्न टके चहुँपास।
तापै कंचन कलश धरि, चले रूपकी रास ॥ ४ ॥
दोहा–भूप द्वार पै जायके, टेरत सुर गम्भीर।
एरी कोउ चलत है, भरिवे यमुना नीर ॥ ५ ॥

नवपनिहारी वचन।

जैजैवन्ती आसावरी।

बेगि चलौ जल भरिवे नवेली ॥ आस्ताई ॥ कब सों टेरि रही मैं द्वारे, एक न निकसति सखी सहेली ॥ संग साथ मैं खोजत डोलूं, कोऊ मिलै मेरी मन मेली ॥ नारायण मग डर लागत है, यमुना जायसकूं न अकेली ॥ ६ ॥

समाजी वचन।

दोहा–टेर सुनत नवनारि की, गोप लली छबिरास।
कंचन घट धरि शीशपै, जुरि मिलि आईं पास ॥ ७ ॥

दोहा—अद्भुतशोभा निरखिके, उर सुख भयो अपार ।
रूप ठगौरी मैं ठगी, इकटक रहीं निहार ॥ ८ ॥

श्रीजीवचन नवनागरी प्रति ।

दादरा ।

तुम या ग्राम कहां रहौ आली ॥ आस्ताई ॥ हम कबहूँ देखी न सुनी है, यह शोभा छबि रूप निराली ॥ नख शिख लों शृंगार मनोहर, अधर रची पानन की लाली ॥ नारायण कहौ प्रगट खोलिके, बात न राखौ बीच बिचाली ॥ ९ ॥

नवपनिहारी वचन श्रीजी प्रति ।

राग देश सोरठ ।

प्यारी होंतौ याही पुर माहिं बसत, पै मैं निशिदिन अपने भवनहीं रहत, निज प्रीतमसों हँसि रस सुख विलसत ॥ आस्ताई ॥ पनघट यमुना तट अरु जित तित, दरशन झांकी बन बिहरन हित, कहुँ बहुत न मैं घरसों निकसत ॥ नित डगर बगर इत उत डोलत, मोहि नारायण अति सकुच लगत याहीसों मैं नहीं कितहूं उकसत ॥ १० ॥

श्रीजीवचन नवपनिहारी प्रति ।

दोहा—नाम कहा तेरो सखी, हमसों प्रगट बखान ।
नाम है मेरो गुणवती, सुनो कुमरि वृषभान ॥ ॥

दोहा—अरी गुणवती गुण भरी, मृदुल मनोहर गात ।
क्यों कांपत तेरो बदन, सांची कही तू बात ॥ १२ ॥

गुणवती वचन श्रीजी प्रति ।

राग आसावरी ।

नन्दसुवन प्रगट्यो उतपाती ॥ आस्ताई ॥ कहा कहूं वाके गुण तुमसों, चोर जार घटवार जगाती ॥ जो कबहूं मोहि

डगर बगरमें, देखत है कहुं इत उत जाती॥सबके बीच पुकार कहत है, कहां चली जोबन मदमाती ॥ वाकी इन कुचालसों सजनी, अति भयभीत कँपत दिनराती ॥ नारायण निज लाज काज हित, गिरजापति नित रहूं मनाती ॥ १३ ॥

वार्तिक ।

श्रीजीने कही क्योंरी ! वह ऐसोई है, तब गुणवती बोली अजी कछू बूझौ मती ॥ १४ ॥

गुणवती वचन ।

राग काफी ।

सजनी याहीसों जिया घबरावै॥आस्ताई ॥ मैं अबही आई या ब्रजमें, छल बल नेक न आवै ॥ जो कदापि वा नग सों मगमें, इकले भेंट ह्वै जावै ॥ फिरि जानें वह यशुमति ढोटा, कहा कलंक लगावै॥ याही सोच भई हों दूबरी, धीरज कौन बँधावै ॥ नारायण हरि लाज रख जो, तौ अब रहने पावै १५॥

श्रीजीवचन सखी प्रति ।

दादरा ।

याहि भली विधिसों लै चलौरी ॥ आस्ताई ॥ नन्दनँदन के नाम सों डरपै, अति भोरी यह गोपकिशोरी ॥ यद्यपि हमहूं सब जानति हैं, बिनु फागुन वाकी नित होरी ॥ नारायण अब साथ हमारे, लंगर करि सकै न बरजोरी ॥ १६ ॥

सखी वचन गुणवती प्रति ।

सोरठ वा रामकली ।

तू चलि री हमारे संग संग ॥ आस्ताई॥अब जिन डरपै वा रसियाके, सुनि सुनिके नये रंग ढंग ॥ तोहि देखि ऐसो को जाके, हिय न लगत अनंग रंग ॥ नारायण सुकुमार साँवरी, तू सुन्दर सब अंग अंग ॥ १७ ॥

समाजी वचन ।

जंगला झंझोटी ।

जलकों भरन चलीं ब्रजबाला ॥ आस्ताई॥ शरद इन्दु सम कान्ति बदन की,लोचन रति पति भाला । तिनके मध्य भेष बनिता को, अति छबि देत गुपाला ॥ नारायण कोऊ न लखै यह, कौतुकी नन्दको लाला ॥ १८ ॥

गुणवती वचन सबसों ।

दादरा ।

या मारग न चलौरी स्यानी ॥ आस्ताई ॥ या मारग वह ठाडो ह्वै है, मैं निज मन अनुमान सों जानी ॥ हों तुमको इक गैल बताऊं, जाहि कोऊ नहिं जानत प्रानी ॥ नारायण स्नान ध्यान करि, निरभय भरि लावैंगी पानी ॥ १९ ॥

दोहा–अरी सखी मिठबोलनी, ल चलि वाही गैल ॥
जा मारग हम सबनको, लखि न सकै वह छैल॥२०॥

गुणवती वचन ।

दोहा–ठुमकि धरति तुम चरणको, नूपुर बजत विशाल ।
सुनि पावगो साँवरो, आवैगो ततकाल ॥ २१ ॥

गुणवती वचन ।

दादरा ।

धिरे चलौ तुम गोप लली री ॥आस्ताई॥ नूपुर धुनि जो सुनि पावैगो, घेरैगो फिर आय गली री॥उरझौ झार कठिन सों सुरझत, हम अबला वह पुरुष बली री ॥ नारायण मग दाँव घातमें, लग्यो रहै नित छैल छली री ॥ २२ ॥

समाजी वचन ।

दोहा–बात कहत खेलत हँसत, बिधुवदनी वर वाम ।
जब पहुँची यमुना निकट, बोले छलिया श्याम२३॥

दोहा–एक दिन याही ठौर पै, मोहिं रोकियो लाल।
सो तुमसों मैं कहा कहुँ, जा विधि करी कुचाल२४॥

सखी वचन गुणवती प्रति।

दोहा–पुनि तोसों उन कहा कही, सो सुनिबे को चाव।
प्रगट कहौ तू खोलिके, अब जिन राख दुराव २५॥

गुणवती वचन।

खम्माच वा कल्याण।

लंगर की बात सुनो सगरी॥ आस्ताई॥ एक दिना मैं जलकूं आवत, शीश धरे कंचन गगरी॥ याही ठौर मो भेट भई, उन बहुत करी झगरा झगरी॥ नारायण कर झटक पटक घट, घेर लई पनघट डगरी॥ २६॥

ईमन कल्याण।

तुम सुनों छैलकी बात॥ आस्ताई॥ बेर बेर मोतन हँसि हेरे, चंचल नैन चलात॥ मैं सकुची कोऊ लखि लेगो, मगमें आवत जात॥ नारायण पुनि चरचा होगी, भवन भवन में प्रात॥ २७॥

दोहा–यों मेरी बैयां गही, यों रूखेपन हेरि।
यों सिरसों गागरि पटकी, यों ठाढो मग घेरि॥२८॥

वार्तिक।

बतरातहीमें निजस्वरूप प्रगट करिके आगे ठाढेह्वै रहे २९

लालाजी वचन।

मल्हार।

ठाढी रहौ नव गोपकुमारी॥ आस्ताई॥ बिन हमसौ बूझे कित जावौ, तुमहीं नई आइ पनिहारी॥ इन घाटन मेरे

कर लागे, जानत हैं सगरे नर नारी ॥ नारायण सों बेग चुकावौ, गजगामिनि कटिकेहरि वारी ॥ ३० ॥

सखी वचन परस्पर ।

दोहा–अरी सखी यह छल भयो, हम सब भोरी बाम ।
भेद नहीं जान्यौं किनूं, यह छलिया घनश्याम ॥ ३१ ॥

दादरा मल्हार ।

कैसे भरें अब जल की गगरिया ॥ आस्ताई ॥ ललित त्रिभंग आगे ह्वै ठाढो, रोकि रह्यो नँदलाल डगरिया ॥ हम याकूँ जानत रहीं अबला, यह तौ निकस्यो श्याम झगरिया ॥ नर सों नारि नारि सों नर पुनि, यह कौतुक होय याही नगरिया ॥ तासों कहा बस्यावै जाने; बाँधी निलजताई की पगरिया ॥ नारायण अँगुरी दांतन दे भई अचारज ब्रजनारी सगरिया ॥ ३२ ॥

सखी वचन ।

दोहा–रोकनहारे कौन तुम, हमें गैल नहिं देत
हम यहांके राजा सखी, निज कर तुमसों लेत ॥ ३३ ॥

सखी वचन ।

झंझोटीका जिप्त ।

चलि परें हटिरे काहे को इतरावै ॥ आस्ताई ॥ भूषण वसन दधि माखन चुरैया, अब कैसी कैसी बात बनावै ॥ जिनके बसाये तुम उनहीं सों झगरत, निलज न नेक लजावै ॥ नितप्रति धेनु को चरैया नारायण, आज तू भूप कहावै ३४ ॥

लालजी वचन सखी प्रति ।

देश सोरठा ।

जोबन की माती इठलाती डोल ग्वालिनि, हमकूं लगावत दोस ॥ आस्ताई ॥ निज कर मांगे बिना मैं तोसों और कहा

लियो खोस॥ लखि न परत तेरे मनकी गति, छिन में हँसत छिन रोस॥ नारायण तोसी अबला के, धन्य जो वसत परोस॥ ३५॥

सखी वचन लालजी प्रति।

राग देश।

छाँडो मेरी डगर झगर निज सांवरे मोहि अति देर भई॥ आस्ताई॥ कब की मैं आई जल भरिवेको तैं बिच घेरलई॥ सास ननँदिया देखत सँग मोहि, नाम धरेंगी कई॥ यमुनाको मिस करि गगरिया सिर धरि जानें कहां तू गई॥ लाजको रहिवे कठि नहिं दीखे, कैसी करूं हे दई॥ अब तो मैं जानि चुकी नारायण, होयगी चरचा नई॥ ३६॥

लालजी वचन सखी प्रति।

खम्माच।

जो इतनी तू लाज लजावै॥ आस्ताई॥ घर ही बैठके जल न भरावत, क्यों यमुना तक दौरी आवै॥ तो समान या ब्रजमंडलमें कोऊ नहीं कुलवंती कहावै॥ निज मन कपट वसत नारायण, सास ननँदको दोष लगावै॥ ३७॥

सखी वचन सखी प्रति।

खम्माच।

एरी सखी याकूं हम जाने॥ आस्ताई॥ यह अपनी हठ नाहिं तजैगो, कबसों रोंकि रखी हम याने॥ हौं अबला की कौन चलाई, विधिनाहूं की कही नहीं माने॥ नारायण जोबन गरवीली, मटकि मटकिके कुटिल भौं ताने॥ ३८॥

लालजी वचन सखी प्रति ।

खम्माच का जिला वा रामकली ।

तुमहीं कुलवन्ति मैं देखी आज, मणि गागरि नागरि शीश धरी ॥ आस्ताई ॥ दृग मीनसे चपल चलत इत उत, मुसिक्यान अधर छल छन्द भरी ॥ फरके सब अंग अनंग रंग, भृकुटी अति कुटिल कमान खरी ॥ तन रोम रोम सों नारायण, चंचलताई की बरषै झरी ॥ ३९ ॥

वार्तिक ।

तब सखी आपसमें कहिवे लगीं, अरी वीर ! याकूं बिना कछुदिये छूटबे न पाओगी ताते यासों बूझो कहा कर मांगे, जब सखीनने बूझी, तब लालजी बोले, सोऊ सुनो॥ ४० ॥

लालजी वचन ।

कालिंगड़ा ।

सो तुम सुनो सकल सुकुमारी ॥ आस्ताई ॥ मैं नित जल शिवर्जा पै चढाऊं या बन सघन मझारी ॥ आज गयो मैं गऊ बिबायवे, एरी रूप उजारी ॥ ता कारण सों बिना नहाये, मैं नहिं पूजे त्रिपुरारी ॥ तुम निज निजघट जलसों भरिके, अपनी अपनी पारी ॥ नारायण चलि शम्भु न्हवावौ मो बदलै ब्रजनारी ॥ ४१ ॥

सखी वचन लालजी प्रति ।

दोहा—हम कबहूं देखी नहीं, कौन ओर वह ठौर ।
जहां विराजत उमापति, देवनके शिरमौर ॥ ४२ ॥

लालजी वचन ।

दोहा—जो तुम में मुखिया सखी, चलौ हमारे साथ ।
ठौर बतावें हम तुमें, जहां भवानीनाथ ॥ ४३ ॥

सखी वचन श्रीजी प्रति।

कालिंगडा।

तब सखियननें कही सुनि प्यारी ॥ आस्ताई ॥ पहलेही तुम यमुना जल भरिके, जाय पूजि आवौ त्रिपुरारी ॥ यह प्रिय वचन सुनत सजनीके, निज हिये हरषी राजदुलारी ॥ नारायण ऊपरके मनसों, मन जाऊं कह भानुकुमारी ॥४४॥

प्रियाजी वचन सखी प्रति।

कालिंगडा।

म इनके संग इकली न जाऊं ॥ आस्ताई ॥ बीर तिहारे नित तानेनसों, फिर कैसे मैं पीछौ छुटाऊं ॥ जैसी कछू तुम हौ सब जानू, प्रगट कहते कहा फल पाऊं॥नारायण मैं जानि बूझिके, क्यों अपने पट झार लगाऊं ॥ ४५ ॥

सखी वचन श्रीजी प्रति।

परज।

साँचेही तुम मनकी अति भोरी ॥ आस्ताई ॥ तुमको सदा हमारी ओरसों, बन्यो रहत है बहम किशोरी ॥ हमहूं तौ इकली इकली सब, इनके संग जायँगी गोरी ॥ नारायण फिर तुम क्यों डरपौ, जावौ बेगि भई देर न थोरी॥ ४६ ॥

वार्तिक।

श्रीजीने कही अरी सखी! जल तो मैं चढाय आऊंगी पर तुम कहूँ चली मति जैयो-जब कंचनझारी जलसों भरिके प्रीतम संग चली, तब मार्गमें लालजीने कही हे प्यारी! यह सब रचना आपहीके मिलिबे कारण रची है; आप मुसिक्यायकै बोलीं सो तौ हम जान, फिर अपनी प्राणप्यारी कू वन की शोभा दिखायवे लगे ॥ ४७ ॥

लालजी वचन श्रीजी प्रति ।

जिला काबित्त ।

देखौ प्यारी बिपिनमें, कैसी छबि छाय रही झुकि रहीं लता, अति लगत सुहावनी ॥ आस्ताई ॥ फूले फूल रंग रंग, भँवर गुंजार करें, ठौर ठौर कोकिला बोलत मनभावनी, मृगी नके सहित मृग, डोलत हैं इत उत, चलत पवन तन, तपनि नसावनी ॥ कहैं नारायण गोरी,आपको आगम भयो, तासों बनराज ने, करी पधरावनी ॥ ४८ ॥

वार्तिक ।

यहां सब सखी परस्पर सोचिवे लगीं ।

राग ठोडी ।

देर भई क्यों न आई प्यारी ॥ आस्ताई ॥ कै कहुँ डगर भूलि गई भोरी, कै मग चलत भयो श्रम भारी ॥ कै पूजन में बिलम लगी है कै बन में निरखत फुलवारी ॥ कै बिरमाय रखी रसिया ने कै अबलों ढूँढत त्रिपुरारी ॥ कै मग में कहूँ कांटो लाग्यौ, कै इकली निज भवन पधारी ॥ कै छिपिरही सिजावनके हित, नारायण सोचत ब्रजनारी ॥ ४९ ॥

समाजी वचन ।

दोहा–घट उठाय उतही चलीं, जहां दोऊ बन माहिं ।
जाय निहारे द्रुमतरे, ठाढ़े दै गलबाहिं ॥ ५० ॥

दोहा–सघन लता की ओट तें, छबि निरखत बृज बाल ।
भागि सराहत आपनो, पुनि २ होत निहाल ॥५१॥

राग बिलावल ।

आज इन दोऊन पै बलि जैये ॥ आस्ताई ॥ रोम रोम सों छबि बरसत है, निरखत नैन सिरैये ॥ रूप रास मृदुहास

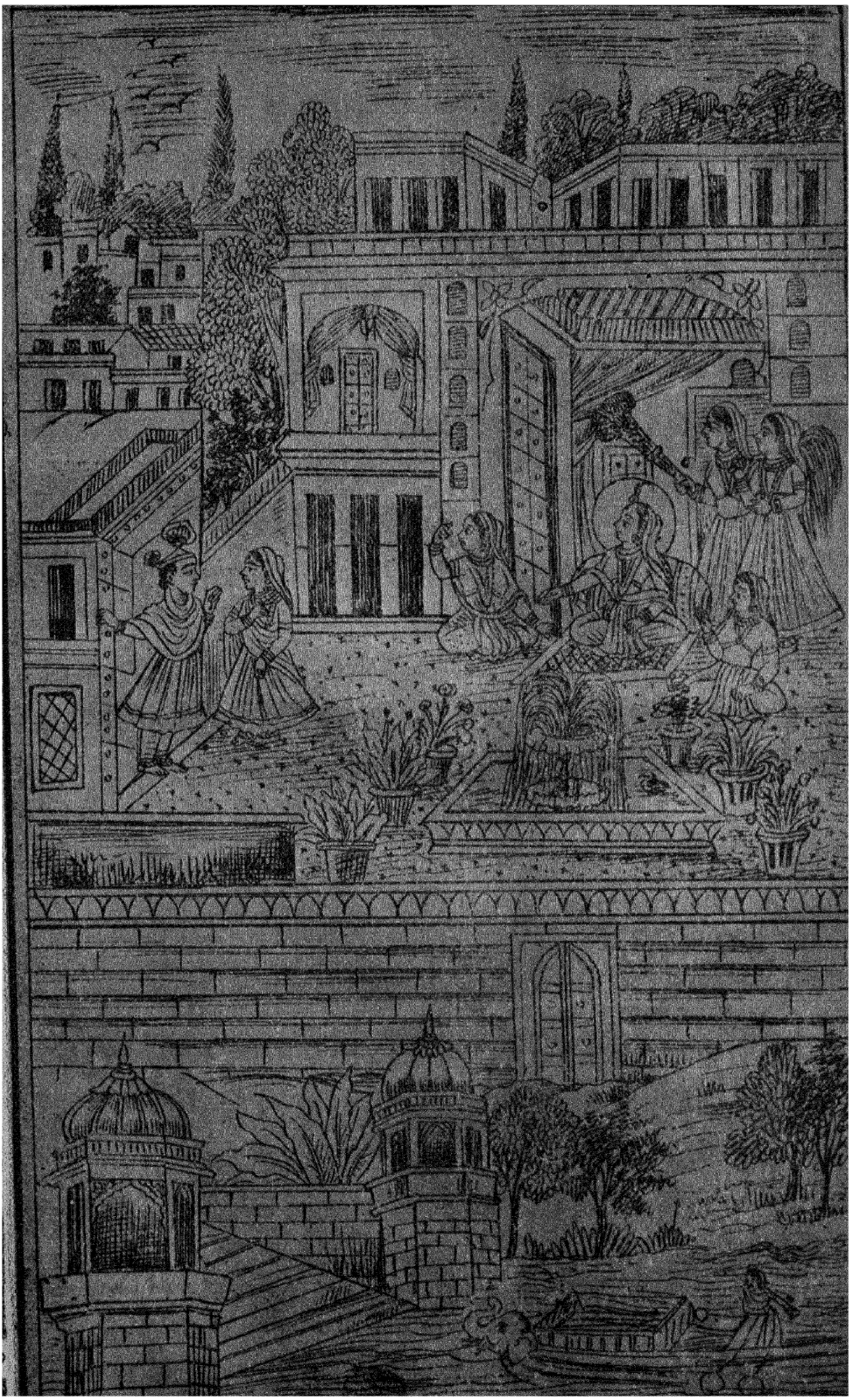

ललित मुख, उपमा देत लजैये ॥ नारायण या गौर श्याम को, हिये निकुंज बसैये ॥ ९२ ॥

वार्तिक।

फिर सखी प्रगट होयके बोलीं, बलिहार लालजी महाराज भली पूजा करवायबे आये, तब आप बोले अरी सखी! एक इनकेही जल चढायवे सों भोलानाथ प्रसन्न ह्वै गये, अब तुम भलेही जल भरौ तब सखी दंडौत करिके बोलीं, धन्य हो पुजारीजी महाराज ॥ ९३ ॥

दोहा—यह लीला भक्तन लिये, करत लाड़िली लाल।
नारायण गावें सुने, परें न यमके जाल ॥ ९४ ॥

इति श्रीनारायणस्वामीजीकृत नवपनिहारीलीला सम्पूर्ण ॥ १२ ॥

अथ श्रीश्यामविरहिनी लीलाप्रारंभ।

समाजी वचन।

दोहा—एक दिवस तिय भेष धरि, परमकौतुकी श्याम।
विरहिनि बनि डोलत डगर, लै लै अपनो नाम॥ १ ॥

विरहिनी वचन।

दोहा—प्रीतम तो देखे बिना, छिन छिन कल्प बिहाय।
बेग दीजिये दरश अब, मो विरहिनिको आय॥२॥

वार्त्तिक।

काहू सखी ने इनको देखिके श्रीजी सों जाय कही हे प्यारी! मैं एक अचरज देखि आई हूं तब श्रीजीने बूझी कहां, पुनि सखी बोली ॥ ३ ॥

सखी वचन ।

राग देश ।

चलौ तौ बताऊ तुमें भवनके द्वार ॥ आस्ताई ॥ एक नारि विरहिनि भई डोलै, तनकी नाहिं सँभार ॥ श्याम श्याम मुख नाम रटति है, साँवरी रूप अपार ॥ नारायणऐसी मोहि दीखति, है बड गोपकुमार ॥ ४ ॥

समाजी वचन ।

कुंडलिया ।

सुनि सजनीके वचन, प्रिया मनमें ललचाई ॥ निरखन को वह नारि, द्वार पै दौरी आई ॥ दौरी आई द्वार देखि, वह सखी विरहिनी ॥ पुनि ताके ढिग गई, आप इकली मृगनैनी ॥ कर गहि बूझत कौन तू, कहा लगाई श्याम धुनि ॥ नारायण तू सांच कहि, हौं आई तो दशा सुनि ॥ ५ ॥

श्रीजी वचन विरहिनी प्रति ।

पद सोरठ का जिला ।

तोहि डगर चलत कहा भयोरी वीर ॥ कहूं पग की पायल, कहूं सिरको चीर, भई बावरी न कछु सुधि बुधि शरीर ॥ आस्ताई ॥ तेरे मतवारेन सम झूमत नैन, मुख भाषति है तू अति विरह के बैन, मानो घायल काहू नें करी दृगन तीर ॥ मोसों नारायण जिन राखे दुराव, जो तू कहै सोई तेरो करूं उपाव, जासों रोगहू घटै हटै सकल पीर ॥ ६ ॥

विरहिनी वचन श्रीजी प्रति ।

गिरनारी सोरठ ।

मैंने देखी री आज मोहनकी हँसन ॥ आस्ताई ॥ अधरन पै अद्भुत अरुणाई, मुतियन की लर पाँति दशन ॥ वा

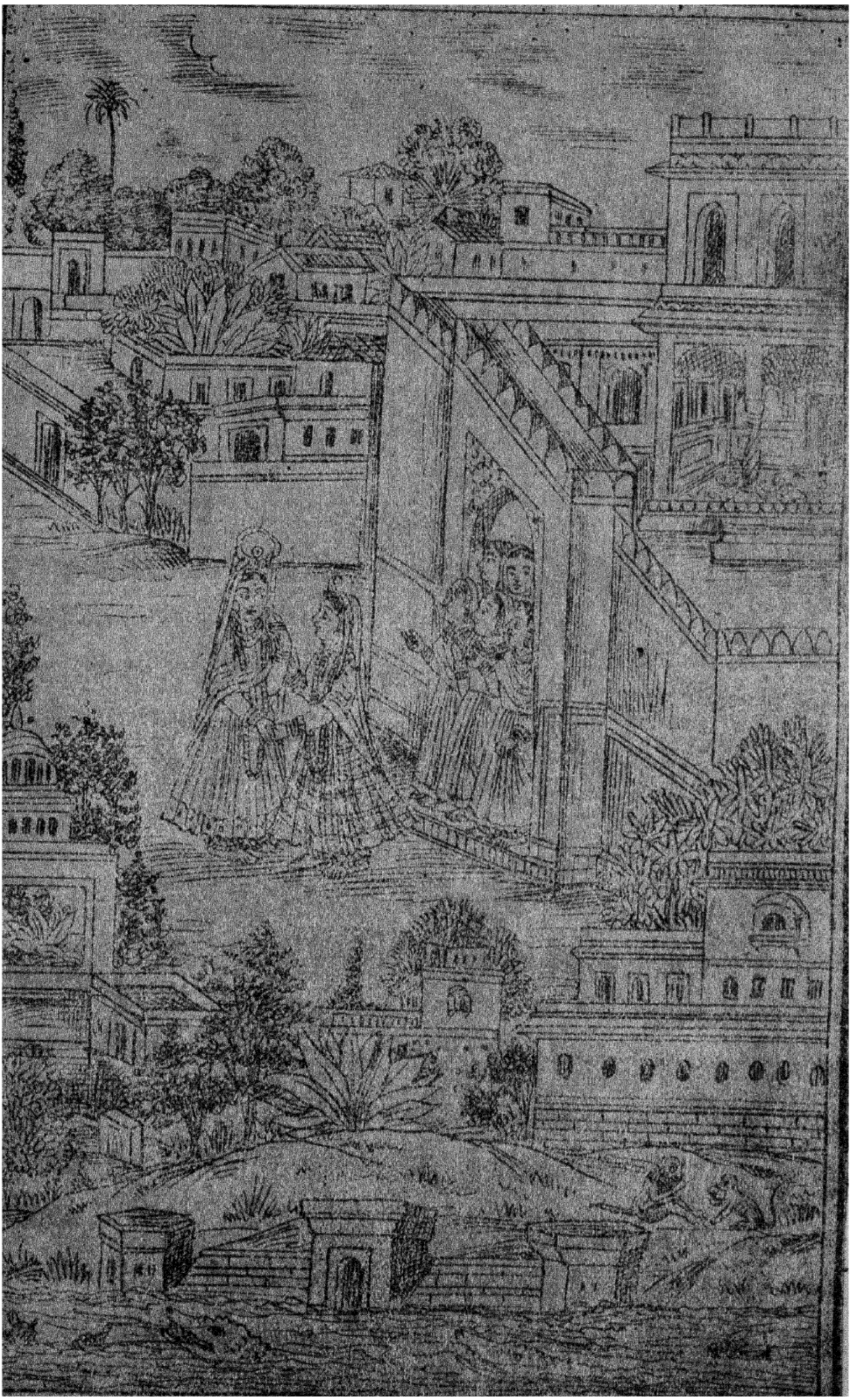

शोभा के दृग रहे प्यासे, पीवे लगे भरि भरिके पसन ॥ नारायण तब सों मोहिं सजनी, सुधि न रही निज वदन बसन ॥ ७ ॥

वार्तिक।

प्रियाजीने बूझी अरी! तैंने उनकूं कहां देख्योहै ॥ ८ ॥

साँवरी वचन।

आसावरी।

आज सखी भोरही मैं पनियां गई री ॥ आस्ताई ॥ सांवरो सलोनों एक बड़े २ नैन जाके, जमुना के तट मोसों भेटे भई री ॥ देखि अति रूप वाको नेह उर हार भयो, ताही समय लाजको तिलांजली दई री ॥ उन बिन कल न परत नारायण, कैसी घरी लगी लगन नई री ॥ ९ ॥

श्रीजी वचन विरहिनी प्रति।

कान्हरा बागेश्वरी।

सखी क्यों बौरी भई है वा छलिया के वियोग ॥ आस्ताई ॥ भूलिके नाम न लीजो श्याम को, चरचा करेंगे लोग ॥ तू सुकुमार कठिन मग नेहको, नहिं श्रम तेरे जोग ॥ नारायण बिन जाने बूझै तू मति लगावै तन रोग ॥ १० ॥

विरहिनी वचन श्रीजी प्रति।

जोगिया आसावरी।

सखी मेरे मनकी को जाने ॥ आस्ताई ॥ कासों कहूं सुने जो चित दै, हितकी बात बखाने ॥ ऐसो को है अन्तरयामी, तुरत पीर पहँचाने ॥ नारायण जो बीति रही है, कब कोई सच माने ॥ ११ ॥

वार्त्तक ।

प्रियाजीने कही, अरी ! तू घबरावै मति, नेक धीरज राखि ॥ १२ ॥

विरहिनी वचन श्रीजी प्रति ।

लावनीकी राह ।

सखी कैसी करूं मैं हाय, न कछु वश मेरो ॥ बिन देखें साँवरो चन्द, दृगन में अँधेरो ॥ सखी ऐसो सुन्दर नहिं, कोऊ मैं सब जग हेरो ॥ वाकी जो लिखै तसबीर, सो कौन चितेरो ॥ सखी कठिन छैल को विरह, आनि मोहि घेरो ॥ सगरी निशि तारे गिनतही, होत सबेरो ॥ सखी जो तू मिलावै आज, वह रूप उजेरो ॥ जबलों जीवोंगी, गुण न भूलूंगी तेरो ॥ सखी नारायण जो न मिलै, वह मन को लुटेरो ॥ तब नन्द द्वार पै, जाय करूंगी डेरो ॥ १३ ॥

दोहा—नन्द भवन जानू नहीं, एरी राजकुमार ॥
नेक दया करि संग ह्वै, लैचलि वाके द्वार ॥ १४ ॥

श्रीजी वचन विरहिनी प्रति ।

कालिंगडा ।

उठि सजनी चलि तोहि बताऊं, सन्मुख नन्द को द्वार दिखावै ॥ तू कित धावति है पुर बाहर, मो पीछे भटु क्यों नहिं आवै ॥ एक एतौ हियमें डर मोकूं, जो कबहूं यशुमति लखि पावै ॥ नारायण मन में जानेगी, यह सब व्याधि यही सँग लावै ॥ १५ ॥

समाजी वचन ।

दोहा—नन्द द्वारपै गई जब, कपट विरहिनी बाम ।
पुनिपुनिअतिअकुलायके, लेतश्यामकोनाम ॥ १६ ॥

विरहिनी वचन।

राग काफी।

बेदरदी तोहि दरद न आवै ॥आस्ताई॥ चितवनमें चित वश करि मेरो, अब काहेको आँखि चुरावै ॥ कबसों परी तेरे द्वारेपैं, बिन देखे जियरा उकलावै ॥ नारायण महबूब साँवरे, घायल करि फिर गैल बतावै ॥ १७ ॥

वार्त्तिक।

श्रीजी ने कही अरी! सखी तू तौ यहां बैठि, अरु मैं तो अब जाऊ, कछू तेरे सग मोहि बावरी तौ नहिं होनों, तब विरहिनी बोली अजी! अब मैं कैसी करूँ, जब श्रीजी नें कही यहां तो यशोदाजी देखेंगी, चलि तोहि और ठौर बैठाऊं वहांसूं तू उनकूं देखि लीजो ॥ १८ ॥

साँवरी वचन।

ईमन कल्यान।

तैंढी बांकी चितवन, सानूं प्यारी लगदी, सांवला मेंढा दिलदार ॥ आस्ताई ॥ सोहनी सूरत बडी बडी अँखियां गल बिच गजमुतियनदा हार ॥ एक नजर तुसी हँसकर देखौ वारूँमैं जियरा हजार बार ॥ नारायण असीं रूप दिवानी आय परी अब तैंढे द्वार ॥ १९ ॥

श्रीजी वचन विरहिनी प्रति।

देशका जिला।

सखी तू मति ले वाको नाम, नहीं पछितावैगी॥आस्ताई॥ मन कपटी मुख मीठो बोले, कली कली रस चाखत डोलै, ऐसे सों करि प्रीति कहा फल पावैगी ॥ मेरी कही तू चित

न धरत है, जासों मोहि अब जानि परत है, तू अपने सुन्दर तन रोग लगावैगी ॥ नेह किये कछु हाथ न आवै, लोक लाज कुल धर्म नसावै, नारायण तू नाहक जगत हँसावैगी ॥ २० ॥

विरहिनी वचन ।

राग काफी ।

बिन देखे मन माने न मेरो ॥आस्ताई॥ श्याम वरण चित हरन लाडिलो, रूप सुधा निधि जगत उजेरो ॥ चाल मराल मनोहर बोलन, चपल नयन मो तन हँसि हेरो ॥ नारायण त्रिभुवनको स्वामी, हों वृषभानु कुमरिको चेरो ॥ २१ ॥

वार्तिक ।

जब विरहिनीने अपनेकूं चेरो कह्यो, तब प्रियाजी अचरज मानिके सखी सों बूझिवे लगी, अरी ! ललिता ! यह लुगाई ह्वैके फिरि लोग कैसे बनिवे लगी, जो आपकूँ चेरो बनावै चेरी बने तौ एक बात है ॥ २२ ॥

दोहा—ललिता लखि नवलालको, बोली सुन शिरमौर ।
बिन प्रीतम चेरे चतुर, चेरी बनै न और ॥ २३ ॥

सोरठा ।

सुनि ललिता के बैन, प्यारी निज मनमें हरष । मानो छबि को ऐन, पुनि पुनि निरखत लाल मुख ॥ २४ ॥

वार्तिक ।

धन्य हो लालजी महाराज, जो काहू की बहू बेटी होते भला काहू को घर तोऊ बसावते ॥ २५ ॥

श्रीजी वचन लालजी प्रति ।

ध्रुपद कान्हडा दरबारी ।

आज भले बने लाल, अद्भुत नई ब्रज की बाल, हगन सोहै कजरा, अति मीठी २ करत बात ॥ आस्ताई ॥ अँगिया

मनमोहन हारी, दामनकी शोभा न्यारी. झीनी नव चूनरीमें झलकत है श्याम गात ॥ हाथनमें चूरी, माथें मुतियन की मांग भरी,काननमें झुमका पग बिछियन धुनि अति सुहात ॥ नारायण बार बार, प्रीतम की छवि निहार, अचरा मुख दैके प्यारी, मन्द मन्द हँसत जात ॥ २६ ॥

वार्तिक ।

लालजी बोले हे प्यारी ! आपने तौ कही हुती कि अब तुम्हारे छलमें हम कभू न आवेंगी अब कैसे आई श्रीजीने कही तिहारे प्रसन्न करिवेकूँ ॥ २७ ॥

दोहा--यह लीला श्रीलालकी, चारि पदारथ देत ।
नारायण गावे सुने, युगल प्रीतिके हेत ॥ २८ ॥

इति श्रीनारायणस्वामीजीकृत श्यामविरहिनीलीला संपूर्णा ॥ १५ ॥

अथ युगलछद्मलीला प्रारम्भ ।

समाजी वचन ।

दोहा--श्याम सखी को भेष धरि, डोलत अपने द्वार ।
नारायण झांकत कभू, अचक किंवार उघार ॥ १ ॥
उतसों आवत लाडिली, संग सखी बहु भीर ।
देख साँवरी बिकलसी, बूझति गौर शरीर ॥ २ ॥

श्रीजी वचन साँवरी प्रति ।

कालिंगडा ।

सखी तू इत उत क्यों डोल रही ॥ आस्ताई ॥ के कछु वस्तु गिरी मारगमें के निज गति छबि तोल रही ॥ कबहुँक

नन्द भवन को द्वारो, उझकि अचक तू खोलि रही॥नारायण नहिं दीखत कोऊ, कौन सो हँसि हँसि बोल रही ॥ ३ ॥

साँवरी वचन श्रीजी प्रति ।

राग देश ।

सखी जबसों नन्दलाल निहारे ॥ आस्ताई ॥ तबही सों बौरी भई डोलूं, इत उत गली गिरारे ॥ शीस मुकुट शिर पेच रतन को, लसत बार घुँघरारे ॥ खंजन नैन मैन मद गंजन, अंजन रेख समारे ॥ कुंडल लोल कपोल मनोहर, कोटि भानु उजियारे ॥ मानो रूपसिंधुमें खेलत, मकरनके द्वै बारे ॥ मन्द हँसन मुख श्याम बरन छबि,शशि मनोज लखि हारे ॥ दशन पांति ज्यों मुतियन की लर, अधर सोहैं अरुणारे ॥ नाक बुलाक कुटिल बर भृकुटी,वचन रचन अति प्यारे ॥ नारायण नख शिख शृंगार करि, ठाढे भवनके द्वारे ॥ ४ ॥

श्रीजी वचन सखी प्रति ।

सोरठका जिला ।

मन मोहन जाकी दृष्टि परत, ताकी गति होत है और और ॥ आस्ताई ॥ न सुहात भवन तन अशन वसन, बनही कूँ धावत दौर दौर ॥ नहिं धरत धीर हिय विरह पीर,व्याकुल भई भटकत ठौर ठौर ॥ कबहूँ अँसुवन भरि नारायण, मग झांकत डोलत पौर पौर ॥ ५ ॥

सखी वचन श्रीजी प्रति ।

राग सोरठ ।

जाहि लगन लगे घनश्यामकी ॥ आस्ताई ॥ धरत कहूँ पग परत हैं कितहू, भूलि जाय सुधि धामकी ॥ छबि निहार नहिं रहत सार कछु, घरी पल निशिदिन याम की ॥ जित मुँह उठै तितै ही धावै, सुरति न छाया घामकी ॥ कोई

करौ निन्दा कोई अस्तुति, मेड तजी कुल ग्राम की ॥ नारायण बौरी भई डोलै, रहे न काहू काम की ॥ ६ ॥

श्रीजी वचन सखी प्रति ।

राग देश ।

साँवरे की जिन निरखी मुसिक्यान ॥ आस्ताई ॥ सो तौ भई घायल ताही छिन, बिन बरछी बिन बान ॥ कल नहिं लेत धरत नहिं धीरज, तडफत मीन समान ॥ नारायण भूली सुधि तन की बिसर गयो सब ज्ञान ॥ ७ ॥

साँवरी वचन ।

राग झंझोटी ।

साँवरे क्यों मोसों रिस मानी ॥ आस्ताई ॥ तेरे काज घरबार त्यागिके, गलियन फिरत दिवानी ॥ लोक लाज कुल रीति प्रीति जग, इनहूँ को दियो पानी ॥ नारायण अब तौ हँसि चितवौ, एरे रूप गुमानी ॥ ८ ॥

श्रीजी वचन साँवरी प्रति ।

राग देश ।

साँवरे वदन छबि सदन मदन मद, गंजन अंजन दृग रेख ॥ आस्ताई ॥ अतिही विकल नहीं जिय में परत कल, जब सों श्यामलियो देख ॥ डोलत डगर बड गोप कुमरि ह्वै, तजि कुल लाज विशेख ॥ नारायण नहिं मिटत सखी जो, लिख्यो विधाता लेख ॥ ९ ॥

साँवरी वचन ।

राग काफी ।

यह नैना रिझवार नयेरी ॥ आस्ताई ॥ एक बेर लखि रूप लालको, तजि घरबार फकीर भये री ॥ अब देखे बिन डारत

आंसू, युग समान पल बीति गये री ॥ नारायण येहू अति चंचल, फल पाये जो बीज बये री ॥ १० ॥

श्रीजी वचन ।

दोहा—भामिनि तू भोरी निपट, जादू मुख घनश्याम ।
वाकी ओर निहारिके, वस्यो कौन को धाम ॥ ११ ॥

साँवरी वचन ।

राग भैरवी ।

अब मैं कैसी करूंरी बीर ॥ आस्ताई ॥ हौं तो घनो चाहूँ न करूं सुधि, मन तो धरत न धीर ॥ जो घायल उन नैन बान के, सो जानत यह पीर ॥ नारायण करि गयो बावरी, सुन्दर श्याम शरीर ॥ १२ ॥

श्रीजी वचन ।

दोहा—जाकी तू घायल फिरै, निजकुल लाज बिहाय ।
सो अब मेरी समझ में, गयो चरावन गाय ॥ १३ ॥

वार्तिक ।

साँवरी बोली हे सखी ! मैं अब कैसी करूं ॥ १४ ॥

श्रीजी वचन ।

झंझोटी का जिला ।

जौलों श्याम विपिन ते आवें ॥ आस्ताई ॥ तौलों तू चलि भवन हमारे, काहू विधि तो मन बहलावें ॥ भलो नहीं यों डगर डोलिबो, ब्रजवनिता मिलि दोष लगावें ॥ नारायण बलि प्रीति मानिके, हम तेरे हित की समझावें ॥ १५ ॥

साँवरी वचन ।

दोहा—गुण मानूंगी आपको, एरी परम सुजान ।
काहू विधि मोसों मिले, मेरो जीवन प्रान ॥ १६ ॥

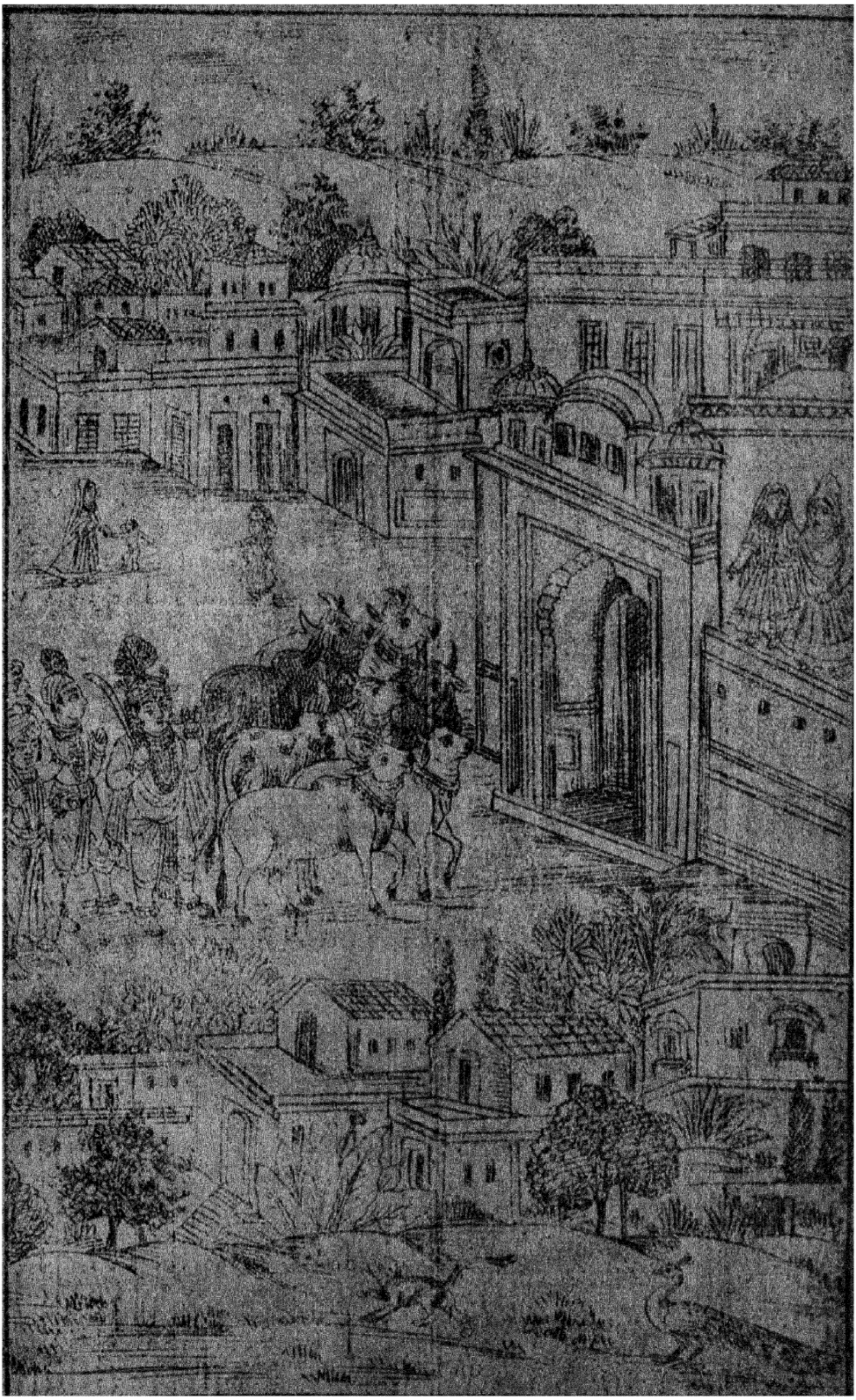

वार्तिक।

तब श्री प्रियाजी इनकूं अपने भवनमें लिवाय लेगई १७॥

समाजी वचन।

दोहा-वहां जाय पुनि साँवरी, लै लै ठंढे श्वास।
विरह वचन भाषनलगी, श्याममिलनकीआस॥१८॥

साँवरी वचन।

दोहा-कब आवेंगे हे सखी, बन ते मोहन लाल।
यों कहिके भुइँ पै गिरी, जैसे कोउ बिहाल॥१९॥

श्रीजी वचन।

दोहा-अरी सखी ये कहा भयो, झटपट देखो आय।
मो माथे याको कहूं, मति कलंक लगि जाय॥२०॥

वार्तिक।

सखी देखिके बोली हे प्यारी याको तौ यही उपाय है॥ २१॥

दोहा-आप श्याम को भेष धरि, तनक दूरि प जाय।
हाथ लकुट कटि पीतपट, आवौ धेनु लिवाय॥२२॥

वार्तिक।

फिर यासों हम कहेंगी देखिरी नदलाल बनतें गऊ चरायके आवें तब याकूं चेत होयगो॥ २३॥

दोहा-बहुत भली कहि लाड़ली, धरि प्रीतमको भेष
आवत धेनु लिवायके, बंशी शब्द विशेष॥ २४॥

वार्तिक।

इत में साँवरी कछुक चेत में आयके बोली॥ २५॥

राग काफी ।

लाल तेरे जादू भरे दोऊ नैन ॥ आस्ताई ॥ चितवन में चित वश कर लेवें, मोहनी मंत्र है सैन ॥ अति बाँके सुन्दर मतवारे, अनियारे छबि ऐन ॥ नारायण इनके बिन देखे, पल छिन परत न चैन ॥ २६ ॥

वार्तिक ।

जब श्रीजी प्रीतम भेषसों पधारी तब सखी बोली ॥ २७॥

सखी अरु साँवरीके वचन ।

ध्रुपद राग यमनकल्याण ।

देख सखी नँदलाल, साथ लिये ग्वालबाल, आगे आगे धेनु, पाछे आवत बंशी बजात ॥ आस्ताई ॥ कानन पै कदम फूल, अटपटे चीरी के पेच, घुघरारी अलकें बदन, गोरज सों अति सुहात ॥ सो शोभा कहि न जाय, जब ये हँसत खिलखिलाय, मानों मुख सों छबि की झरीं, एक संग बरस जात ॥ नारायण एरी बीर, अब नहिं मन धरत धीर, ऐसी मोहिं जिय में आवै, झपट मिलूं याके गात ॥ २८ ॥

समाजी वचन ।

दोहा–मिलत लाल को साँवरी, गिरी बाँसुरी भूम ।
निरखि सखी हँसिबे लगी, मची ठठोलीधूम ॥२९॥

वार्तिक ।

फिर सखियोंने वाही भेष सों श्यामसुन्दर को नवदुलहिन अरु श्रीकिशोरीजी को नवदूलह बनायके भाँवरे पार, आप बनरा गायवे लगीं ॥ ३० ॥

राग शहानो ।

या बनरे पैं मैं जाऊं बलिहारी ॥ आस्ताई ॥ जाहि मिल्यो ऐसो बर सुन्दर, सो बनरी बड़ भागि नवारी ॥ गौर बरन केशरिय बागौ, कटि पटका बाँधे जरतारी ॥ शीस मोर माथे पै सेहरा, कानन में मुतियन छवि न्यारी ॥ हाथन मेहँदी रची कर कंकन जाहि, निरखि रति पति मतिहारी ॥ नारायणलखि रूप मनोहर, सफल भई अबआँख हमारी ॥ ३१ ॥

वार्त्तिक ।

ता पीछे युगल सर्कार निकुंज पधारे, सखी अपनी अपनी सेवा पै ॥ ३२ ॥

दोहा—भक्ति सुधारस देत है, यह लीला ब्रजनाथ ।
नारायण तजि तरकना, सुने प्रीतिके साथ ॥ ३३ ॥

इति श्रीनारायणस्वामीजी कृत युगलछमलीला सम्पूर्ण ॥ १६ ॥

अथ श्रीप्रथमअनुरागलीला प्रारंभ ।

समाजी वचन ।

दोहा—ननँदि भवन दुलरी धरी, लैन चली ब्रजनार ।
अपर सखी बरजन लगी, तू जिन निकसे द्वार ॥ १ ॥

राग देश ।

सखी तोहिं ढूँढत है नंदलाल, कहूं मति जावेरी ॥ आस्ताई ॥ तेरी सों अबहीं यहां आयो, घनी देर मोसो बतरायो, तोहि देखिबे कारण फिरि फिरि आवे री ॥ आज कालि सगरे ब्रज माहीं, रूपवान तेरे सम नाहीं, तेरे

वदन के आगे चन्द लजावैरी॥नारायण मोहि यह डर भारी, जो वासों भइ भेट हारी, फिर जान वह कहा कलङ्क लगावै री ॥ २ ॥

सखी वचन नवनागरी प्रति।

जैजैवंती प्रभाती।

मेरो कह्यो अब मान सहेली,तू जिन बाहर निकस अकेली ॥आस्ताई॥ आज कालि तेरे जोबन की घर घरमें चरचा है हेली ॥ मनमोहन तेरे निरखनको, डगर बगर नित फिरत नवेली ॥ नारायण वासों बचि आवै,तौ मेरी तू गुरू मैं चेली३

समाजी वचन।

दोहा—समझाई बहु भांतिसों, कहिके वचन अनेक।
बरजोरी गोरी चली, कही न मानी एक ॥ ४ ॥

राग मलार।

थोरी दूर जब गई ब्रजनारी॥ आस्ताई॥ आगे ते आवत मनमोहन, भेंट भई तब डगर मँझारी ॥ नवशृंगार हँसन अवलोकन, श्यामम वरन शशिमुख छबि न्यारी ॥ नारायण लखि रूप लालको, तन मनकी सब सुरति बिसारी ॥ ५ ॥
दोहा—लाल गये निज भवन तब, सखी भई गति और।
नैननसों लरिबे लगी, विकस परी वा ठौर ॥ ६ ॥

विरहिनी वचन।

राग काफी।

नैनो रे हितचोर बतावौ॥आस्ताई॥तुमही रहत भवन रखवारे, बाँके बीर कहावौ ॥ तिहारे बीच गयो मन मेरो, चाहें जितो सों खावौ ॥ घरके भेदी बैठी द्वार पै, दिन में घर लुटवावौ ॥ अब क्यों रोवत हौ दईमारे, कहुं तौ थांग लगावौ॥ नारायण मोहि वस्तु न चहिये, लैनेहार दिखावौ ॥ ७ ॥

दोहा—एक सखी निकसी उतै, तिन देखी मग माहिं ।
निकट जाय बूझन लगीं, बिरहिनिकी गहि बाहिं८॥

सखी वचन अपर सखीनसों ।

कालिंगडा ।

यहां लग नेक आवो ब्रजनारी ॥ आस्ताई ॥ या सजनी को कहा भयो है, लोटति धरनि मँझारी ॥ कै काहूकी दृष्टि लगी है, सुन्दर रूप निहारी ॥ कै दृग बान मृगी उर मारे, काहू बडे शिकारी ॥ भयो कहा याकूं मारगमें, सुधि बुधि सकल बिसारी ॥ नारायण कछु कहत न आवै, गोविंद की गति न्यारी ॥ ९ ॥

सखी वचन नवनागरी प्रति ।

सोरठ का जिला ।

सखी तू कैसे अचेतपरी ॥आस्ताई॥चीर सँभारि निहारि बावरी, टूटि रही दुलरी॥जा बिरियां त गई ननँद गृह,जाने वो कैसी घरी॥नारायण मगमें कहुँ डरपी,बात यही सगरी॥१०॥

नवनागरि वचन ।

कालिंगडा ।

सखी तब सों चैन नहिं आवै, जब सों मैं निरख्यो नन्द-लाल गल मुतियन माल सुहावै ॥आस्ताई॥ घुँघरारी अलकें मुख राजैं, कोटि मदन दृग छबि लखि लाजैं, कुंडल हलन चलन श्रवणन में वंशी मधुर बजावैं ॥ सुधि बुधि हरण वचन हँसि बोलै, चाल मराल इतै उत डोलै, बजत चरण छुम छननननूपुर ताहू पर मुसिक्यावै । कर कंकन पहुँची मणि झेलकें, देखि स्वरूप लगत नहिं पलक, नारायण बेसर को मोती लटकत हिये समावै ॥ ११ ॥

सखी वचन ।

दोहा–जितनी तू वा छैल की, सुरति करैगी बीर ।
तितनी व्याकुल होयगी, धरि न सकैगी धीर ॥ १२॥

नवनागरि वचन सखी प्रति ।

राग मलार ।

नहिं बिसरति सखी श्यामकी सुरतियां॥आस्ताई॥हँसन दशन द्युति दामिनी सी दमकन, चन्दसे बदन सों अति मृदु बतियां कुंडल झलक लखि लगै न पलक, नकबेसरिकीहलन चलन गज गतियां॥नारायण जब निरखूं लालकूं, सफलनैन शीतल ह्वै छतियां ॥ १३ ॥

सखी वचन नवनागरी प्रति ।

दोहा–अरी सखी तू बहुत अब, लै न श्याम को नाम ।
चरचा होगी जगत में, हँसी करें ब्रजबाम ॥ १४ ॥

नवनागरी वचन ।

रेखता ।

मन हरि लियो है मेरो, वा नंद के दुलारे । मुसिक्यायके अदां सों, नैनों के कर इशारे ॥१॥ इक दृष्टि ही में वाने, जाने कहा कियो है । नहिं चैन रैन दिन में, वाके बिना निहारे ॥मन०॥ २ ॥ चीरे के पेच बाँके, शिर मुकुट झुकि रह्यो है। कटि किंकिनी रतनकी, नूपुर बजत हैं प्यारे॥मन०॥३॥ बेसरि बुलाक सोहै, गल मोतियन की माला । कंकण जडाऊ कर में, नख चंद सों उजारे॥मन०॥ ४ ॥ छबि देत आरसी से, सुंदर कपोल दोउ । बरछी समान लोचन, नई सान पै समारे मन०॥५॥ फूलन के हाथ गजरे, मुख पानकी ललाई। कानों

में मोती बाले, कुंडलहू झलके न्यारे ॥ मन० ॥ ६ ॥ लखि श्याम की निकाई, सुधि बुधि सकल गँवाई। बौरी बनाय मोको, कित गयो वंशी वारे॥मन० ॥७॥जन्तर अनेक मन्तर, गण्डा तबीज टोना॥ स्याने तबीब पण्डित, करि कोटिजतन हारे॥मन०॥८॥नारायण इन दृगनने,जब सों वह रूप देख्यो। तब सों भये हैं ध्यानी, उघरत नहीं उघारे ॥मन०॥९॥१९॥

वार्तिक।

अरी! चुपकी रही बावरी क्यों जगत हँसावै नेक तौ धीरज राखि ॥ १६ ॥

नवनागरी वचन सखी प्रति।

कालिंगडा।

सखी यह दृग वा रूप लुभाने ॥ आस्ताई ॥ मचलि रहे शशिमुख निरखन को, जा विधि बाल अयाने॥लोकलाज कुलधर्म खिलौना, दिये तऊ नहिं माने ॥ नारायण सोऊ इन फोरे, ऐसे निडर सयाने ॥ १७ ॥

सखी वचन नवनागरी प्रति।

राग देश सोरठ।

सखी तू जान दै वाकी अधिक न सुधि कर वीर ॥ आस्ताई ॥ है अति ही निर्मोही साँवरो,नहिं जानत पर पीर॥ प्रति माहिं फल प्रगट देखि तू, ढरकावत दृग नीर॥ नारायण इतनी न विकल हो, नेक हिये धरि धीर ॥ १८॥

नवनागरी वचन सखी प्रति।

झंझोटीका जंगला।

श्याम दृगनकी चोट बुरी री॥ आस्ताई ॥ ज्यों ज्यों नाम लेत तुम वाको, मो घायल पै नौन पुरी री ॥

नाजानूं अब सुधि बुधिमेरी, कौन विपिनमें जाय दुरीरी ॥
नारायण नहिं छूटत सजनी, जाकी जासों प्रीति जुरीरी ॥ १९ ॥

सखी वचन नवनागरी प्रति ।

दोहा–भामिनि तू जाने नहीं, या मारग की सार ।
कुल कलंक सब जग हँसै, चरचा ह्वै घरबार ॥ २० ॥

नवनागरी वचन ।

राग यमन दादरा ।

लगन नहिं छूटै एरी बीर ॥ आस्ताई ॥ ताने देउ भले नाम धरौ चाहें कोटि करा तदबीर ॥ क्षणमें करत चतुरको बौरा, नृपको करत फकीर ॥ नारायण अब कठिन है बचिवा, बिंध हिये दृग तीर ॥ २१ ॥

वार्तिक ।

तब सखीने कही अरी ! तू अब घर में चलिके भोजन पानी करि तेरे दुःख दूरि होवेको उपाय करेंगी ॥ २२ ॥

विरहिनी वचन ।

कालिंगड़ा ।

मोपै कैसी यह मोहनी डारी ॥ चितचोर छैलागर धारी ॥ आस्ताई ॥ गृहकारज में जी न लगत है खान पान लगै खारी ॥ निपट उदास रहतिहूं जब सों, सूरति देखि तिहारी ॥ सग की सखी देति मोहिं धीरज, वचन कहत हितकारी ॥ एक न लगत कही काहू की, कहत कहत सब हारी ॥ रही न लाज सकुच गुरुजनकी, तन मन सुरति बिसारी ॥ नारायण मोहि समझिबावरी, हँसत सकल नरनारी ॥ २३ ॥

सखी वचन अपर सखी प्रति।

राग शहानो।

तुम ऐसो कछु यतन बिचारो ॥ आस्ताई ॥ जा बिधि सों या अति विरहिनी को, आय मिलै व्रजराज दुलारो ॥ कछु बीति रही अब यापै, को याके बिन जाननहारो ॥ नारायण जौलों जीवैगी, मानेगी गुण अधिक तिहारो॥२४॥

समाजी वचन।

दोहा—एक सखी उठि तुरतही, लाई श्याम लिवाय।
विरहिनिसों कहि देखि री, को ठाढो ढिग आय२५

नवनागरी वचन सखी प्रति।

राग सोरठ।

सखीरी यह मेरो चितचोर ॥ आस्ताई ॥ भृकुटी कुटिल बंक अवलोकनि, सुन्दर नवलकिशोर ॥ गैल चलत मैं सहजहिं निरखी, या छलिया की ओर ॥ नारायण जाने कहा कीनो, इन लखि नैनन कोर ॥ २६ ॥

सखी वचन लालजी प्रति।

राग खम्माच।

लाल इती विनती सुनि लीजै ॥ आस्ताई ॥ जा विधि याहि चेत है तन की, सो उपाय बलि बेगहि कीजै ॥ नहिं सुधि वदन वसन भूषण की, छिन छिन छटा रूप की छीजो॥ नारायण या अति विहाल को, ज्यों त्यों जीवदान अब दीजै ॥ २७ ॥

पार्तिक ।

लालजी बोले हमने तो याको कछु नहिं कियो, परन्तु एक मन्त्र हमको आवै है सो याके कानमें कहिवे सों यह अच्छी ह्वै जायगी ॥ २८ ॥

समाजी वचन ।

दोहा—उझकि सखी के कान में, कही लाल यों बात ।
बंशीवट यमुना निकट, तोहि मिलूँगो प्रात ॥ २९ ॥

पार्तिक ।

या वचनके सुनतेही सखी झटपट उठि बैठी ॥ ३० ॥

दोहा—या लीला को जो सुने, करि मन में विश्वास ।
नारायण मन कामना, पावै विना प्रयास ॥ ३१ ॥

इति श्रीनारायणस्वामीजी कृत प्रथम अनुरागलीला सम्पूर्णा॥ १७॥

अथ चौसरलीला प्रारम्भ ।

समाजी वचन ।

दोहा—रैन दिवारी घर बगर, दीपदान चहुँ ओर ।
यह शोभा देखन चले, नागर नन्दकिशोर ॥ १ ॥

दोहा—छबि निरखत ब्रज गलिन की, गये प्रियाके द्वार ।
उझकि झांकि खांसन लगे, रसिक रूप रिझवार ॥२॥

सखी वचन श्रीजी प्रति।

राग देश।

प्यारी तेरे काजे कोऊ ठाढो द्वार ॥ आस्ताई ॥ अति चतुर प्रगट नहिं बोलत, खांसत बारम्बार ॥ करत प्रकाश फिरत मन्दिर ढिग, पग नूपुर झनकार ॥ देखि री कौन कहांते आयो, बूझि किंवार उघार। निशि आधी मग फिरत पहरुआ, सोवत सब संसार ॥ नारायण या बिरियांको है, बिन ब्रजराज कुमार ॥ ३ ॥

श्रीजी वचन सखी प्रति।

राग कामोद।

सखी मोहि योंहीं करौ बदनाम ॥ आस्ताई ॥ मैं घर सों बाहर नहिं निकसी, नैन न देखे श्याम ॥ पीठि पिछार करौ तुम चरचा, लै लै मेरो नाम ॥ कौन कौन को मुख पकरूं मैं, तुम सब एकसी बाम ॥ झूठ सांच इत उतै लगावौ, यही तिहारो काम ॥ नारायण अब नेक दया करि, बसन देओ या ग्राम ॥ ४ ॥

वार्तिक।

फिरि सखीनने मुसिक्यायके कही, हे प्यारी! हमने तौ हँसिके कही है, आप बुरो मति मानों, परन्तु कछु औरहू आपने सुनी है, श्रीलालजी यों कहैं चौसरके खेलमें कौन की सामर्थ्य है जो हम सों जीति सकै, जो आप की आज्ञा होय तो उनको बुलायके चौसरमें हरावें ॥ और तारी बजा-

वें, राति दिवारी की है, आपने कछु मुख फेरिके कही, तिहारी राजी ॥ ५ ॥

दोहा–एक सखी हँसिके उठी, खोले तुरत किंवार।
चलौ लाल भीतर भवन, बोलत भानुकुमार ॥ ६ ॥

अपर सखी वचन लालजी प्रति।

दोहा–तुम चौसर के खेल में, अति प्रवीण हौ लाल।
आज तनक हमहूं लखें, चतुराई की चाल ॥ ७ ॥

वार्तिक।

लालजी बोले बाजी कहा, सखी बोली मैं अपनो लाल यां चित्रसारीमें छोडि देऊँगी जो हारे सो पकरै ॥ ८ ॥

समाजी वचन।

दोहा–हँसि हँसि खेलत युगल वर, चाल परस्पर हेरि।
जीत हार की चोंप पै, डारत पाँसे फेरि ॥ ९ ॥

सखी वचन परस्पर।

ध्रुपद दरबारी कान्हड़ा।

चौसर खेलत हैं आज, गौर श्याम रसिक राज, ललितादिक ढिग समाज, चालको बतावैं ॥ आस्ताई ॥ छक्के पँजड़ी अठारैं, कबहुँ परत पूरे बारैं, रंग रंग नरद चलत अतिही शोभा पावैं ॥ प्यारी हिय अधिक चाव, अपनो जब परत दाँव, लपक झपक झटही चोट गोट पै चलावैं ॥ प्रीतम निज देखि हार, झगरत हैं बार बार, नारायण जीती कुमरि सन्मुख मुसिक्यावै ॥ १० ॥

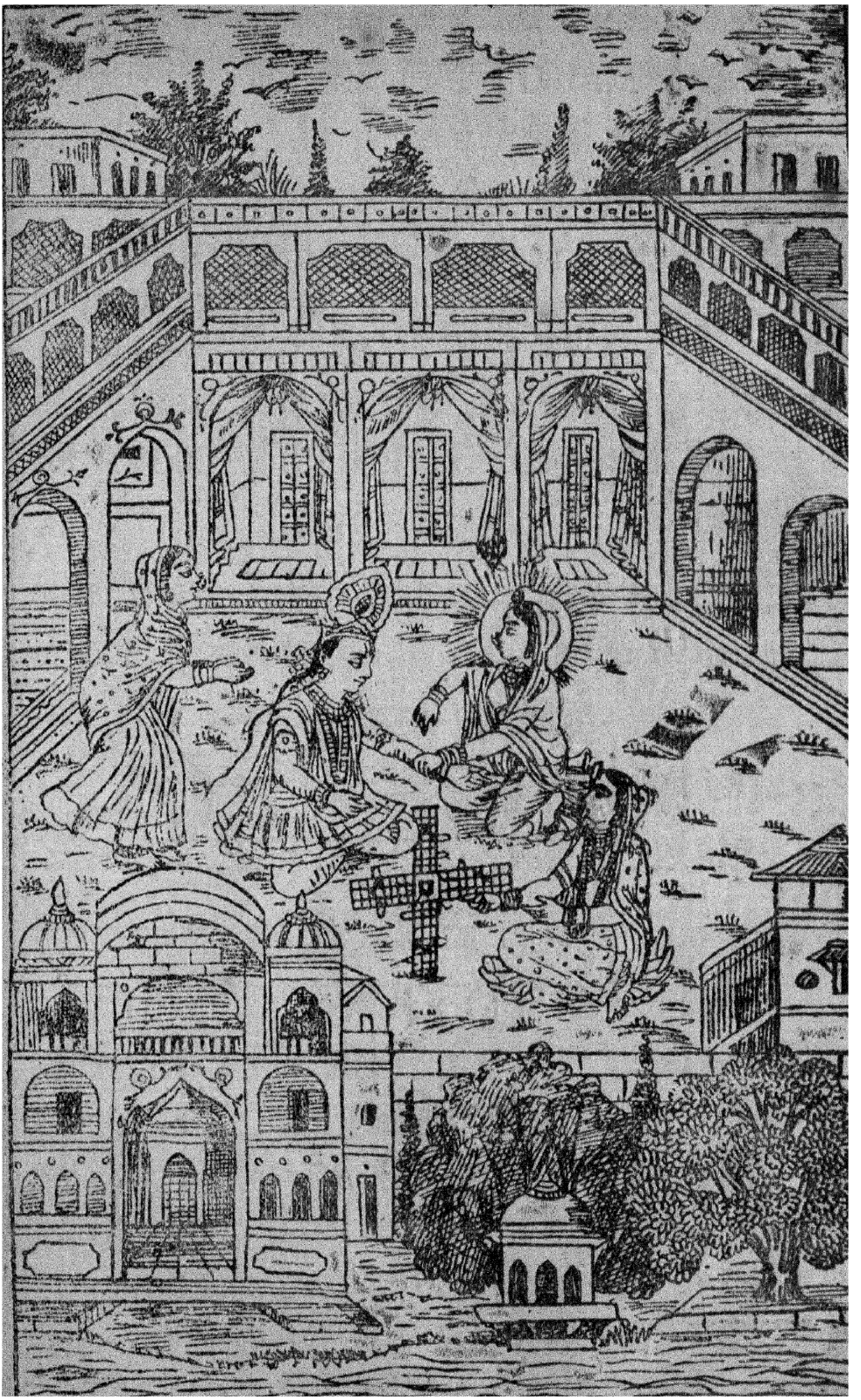

श्रीजी वचन।

राग यमन।

हँसि हँसि प्रीतम सों कहै प्यारी ॥ आस्ताई ॥ मनमोहन अब क्यों खिसियावो, कहा भयो एक बाजी हारी ॥ कहें सुने को बुरो न मानो, तुम समान है कौन खिलारी ॥ नारायण उदास जिन होवो, अबकी ह्वैहै जीत तिहारी ॥ ११ ॥

वार्तिक।

फिर सखीने पींजरे में ते लाल निकासि करि चित्रसारी में छोडि दियो, अरु लालजी सों बोली, अब आप पकरो और हमें तौ नींद लगि रही है, जायके सोवें, तब श्रीजी ने कही गवाह कौन रहैगो सखीं बोलीं गवाह आप रहौगी, या प्रकार कहिके किंवार मूँदिके चिक डारी दई ॥ १२ ॥

दोहा—ये लीला ब्रजचन्द की, श्रवण करै जो नित्त।
नारायण प्रीतम प्रिया, बसिहैं ताके चित्त ॥ १३ ॥

इति श्रीनारायणस्वामीजीकृत चौसर लीला
सम्पूण ॥ १८ ॥

अथ सखी खण्डिता लीला प्रारंभ।

वार्तिक।

एक समय श्रीलालजी महाराज ब्रजगलियन की शोभा निरखते हुये चले जाते रहे, मार्ग में एक सखी अपनी अटारीकी खिरकी में ते उझकिके बोली ॥ १ ॥

सखी वचन ।

दोहा–आज अकेले या समय, कहां पधारे श्याम ।
नेक हमारे भवनहूं, आय करौ विश्राम ॥ २ ॥

लालजी वचन ।

दोहा–तनक देरमें बगदिके, आऊंगो तो पास ।
मृगनयनी अब राख तू, मो वचनन विश्वास ॥३ ॥

समाजी वचन ।

दोहा–आप गये प्रिय के भवन, यहां सखी बचन ।
छिन भीतर छिन द्वार पै, बीति गई सब रैन ॥ ४ ॥

सखी वचन ।

राग कालिंगड़ा वा खट ।

श्यामसुन्दर अबहूं नहिं आये ॥ आस्ताई ॥ दीपकी जोत उदास लगत है, तारागण सब गगन बिलाये ॥ अरुणशिखा बोलत हैं कब सों, फिरत न पहरू पथिक मग धाये ॥ कमल नके मुख खिले चहत हैं, फूल कमोदिनि के मुरझाये ॥ गोरस मथन लगीं ब्रजबनिता, मिल चकई चकवा हरषाये ॥ नारायण पियको बिरमाके, किन सजनी निज भाग मनाये ॥ ५ ॥

समाजी वचन ।

दोहा–चढ़े भोग आई सुरति, रसिक शिरोमणि श्याम ।
बाट निहारत होयगी, उतमें वह ब्रजबाम ॥ ६ ॥

दोहा—पीताम्बर की भूल में, नीलाम्बर तन धार।
नूपुर शब्द बचायके, पहुँचे वाके द्वार ॥ ७ ॥

और सखी वचन या सखी प्रति।

कालिंगडा।

उठि देखी सखी छबि नन्दलाल ॥ आस्ताई ॥ मींडत नैन उनींदे रैन के, आवत हैं डगमगी चाल ॥ पगिया पेच ह्वैरहे ढीले, अलकावलि वर बिथुरी भाल ॥ नारायण प्रीतम की शोभा, तू लखिके होगी निहाल ॥ ८ ॥

राग खट।

देखि सखी प्रीतम की शोभा, निज नैनन को भाग मना री ॥ आस्ताई ॥ अद्भुत देत बहार बदन पै, बिथुर रहीं अलकें घुँघरारी ॥ मुख भोरापन दृग अलसाने, कोटि मदन कीजै बलिहारी ॥ मानों चचलता तजि खंजन, राजत ललित रूप फुलवारी ॥ लेत जँभाई बजावत चुटकी, छाय रही तन रैन खुमारी ॥ नारायण यह छबि निहारिके, को न मोहै जग में नर नारी ॥ ९ ॥

सखी मुसिक्यायके लालजी सों बोलीं।

कालिंगड़ा।

तुम कौनके भवन सों आये श्याम॥आस्ताई॥पलटीमाल नीलपट कांधे, योंहीं मिल्यो है कि दिये दाम ॥ पीक कपोल अधर दृग अंजन, यह लीला भई जाके धाम ॥ नारायण काहेको दुरावौ, प्रगट कहौ क्यों न वाको नाम ॥ १० ॥

लालजी वचन ।

कुंडलिया ।

रात गयो मैं भूलि भवन की, गैल तिहारी ॥ भ्रमत रह्यो सब ठौर बूझतौ घर घर नारी ॥ बूझत घर घर नारि, काहू नहिं पतौ बतायो ॥ तुमहूं मेरे काज राति, अतिशय दुख पायो ॥ औरहु जो मोसों भई, सो बरनत सकुचात ॥ नारायण योंहीं फिरत, बीति गई सब रात ॥ ११ ॥

कालिंगडा ।

तेरे भवनकी गैल भुलायो ॥ आस्ताई ॥ फिरत रह्यो सगरी निशि खोजत, तोऊ पतौ न कहूं मैं पायो ॥ एक ठौर मोहि चोर जानि के, बोले इन कछु माल चुरायो॥पुनि मेरे पकरन को दौरे, मैं इक घरजु धस्यो घबरायो ॥ वा वरवारी दयावंत नें, मेरो पीताम्बर दुबकायो ॥ निज नीलाम्बर मोय उढ़ाके, तुरतहि भामिनि भेष बनायो ॥ तौलों पकरनहारहु पहुँचे, तिने देखि मोहि वचन सुनायो ॥ लैजारी अपनी मणिमाला, बहुत तगादौ मोहि न भायो ॥ पुनि दीपक लै खोजत चोरैं, मैं तब दाँव आपनो पायो ॥ नारायण झट निकसि वहां तें, ज्यों त्यों प्रात यहां लों आयो ॥ १२ ॥

लालजी वचन ।

राग काफी ।

दृग मींडत काजर लग्यो हाथ ॥ आस्ताई ॥ मुख पोंछत लाग्यो अधरन पै, अधर पान रँग हाथ साथ ॥ पुनि

सोई कर लग्यो कपोलन, कहूँ हाथ धरि तेरे माथ ॥ नारायण या भाँति सखी को, समझावत रसिकनको नाथ १३॥

सखी वचन सखी प्रति।

वागेसरी कान्हड़ा।

मेरे री आये मनहूँ भाये, प्रीतम प्रान ते प्यारे॥आस्ताई ॥ ता मग पै बलिहार जाऊँ मैं, जा मग लाल पधारे ॥ मधुरे वचन रचन अति जादू, मनके मोहन हा ॥ नारायण यह धन्य घरी पल, इन दृग श्याम निहारे ॥ १४ ॥

वार्तिक।

ता पीछे परम रिझवारने फूलनके गजरे गूँथिके सखीको पहराये, जब सखी शृंगार करिबे लगी तब आप दर्पन दिखायवे लगे, यह शोभा अपर सखी छिपिके देखि रही हुती, पुनि प्रगट ह्वैके बोली ॥ १५ ॥

सखी वचन सखी प्रति।

राग कान्हड़ा।

तू है सखी बडभाग भरी, नन्दलाल तेरे घर आवत हैं ॥ आस्ताई ॥ निज कर गूँथि सुमनके गजरे, हरषि तोहि पहरावतहैं॥ तू अपनो शृङ्गार करत जब, दरपन तोहि दिखावतहैं॥ आनन्दकन्द चन्द मुख तेरो, निरखि निरखि सुख पावतहैं ॥ जाके गुण सब जगत बखानत, सो तेरो गुण गावतहैं ॥ नारायण बिन दाम आज कल, तेरेही हाथ बिकावत हैं ॥१६॥

लालजी वचन।

दोहा—अब हम घर जावें सखी, नूपुर लेयँ उतार।
इनकी धुनि सुनि करहँगी, तो चरचा ब्रजनार॥१७॥

सखी वचन ।

कालिंगडा ।

प्रीतम नूपुर मति ना उतारो ॥ आस्ताई ॥ इनकी धुनि सुनि पारपरौसिन, कहा करेंगी हमारो॥भले करो जग चरचा मेरी, तुम निज प्रण नहिं टारो ॥ नारायण जे शरण चरण की, तिने न कीजै न्यारो ॥ १८ ॥

वार्तिक ।

सखी बोली हे प्यारे ! जो आप शरणागतको त्यागोगे तौ आपको प्रण जातो रहैगो, फिर कोई जीव आपके चरणकी शरणमें न आवैगो, क्योंकि वे कहैंगे, कि नूपुर जो बहुत दिनोंसे लालजीके चरण की शरण लग रहेथे, उनको ही त्याग दियो, तो हम नयोंको चरणोंकी शरणमें काहेको राखेंगे और बिना शरण आये जीवोंका कल्याण कैसे होयगो इस लिये मेरी जगत्में निंदा होय तौ भलेही होय, परन्तु आप शरणागतको मत त्यागो, भलेही नूपुर बजायें जाओ, आपकी प्रतिज्ञा न जावै ॥ १९ ॥

समाजी वचन ।

दोहा–मुसिक्याये सुनिके वचन, सांचे मनके मीत ।
गये सखी ते बिदा ह्वै, देखि प्रीतिकी रीत ॥ २० ॥
ये लीला श्रद्धा सहित, जो जन सुने सुनाय ।
नारायण भवसिन्धु ते, बिना यत्न तरि जाय ॥२१॥

इति श्रीनारायणस्वामीजीकृत सखी खण्डिता लीला सम्पूर्ण ॥ १९ ॥

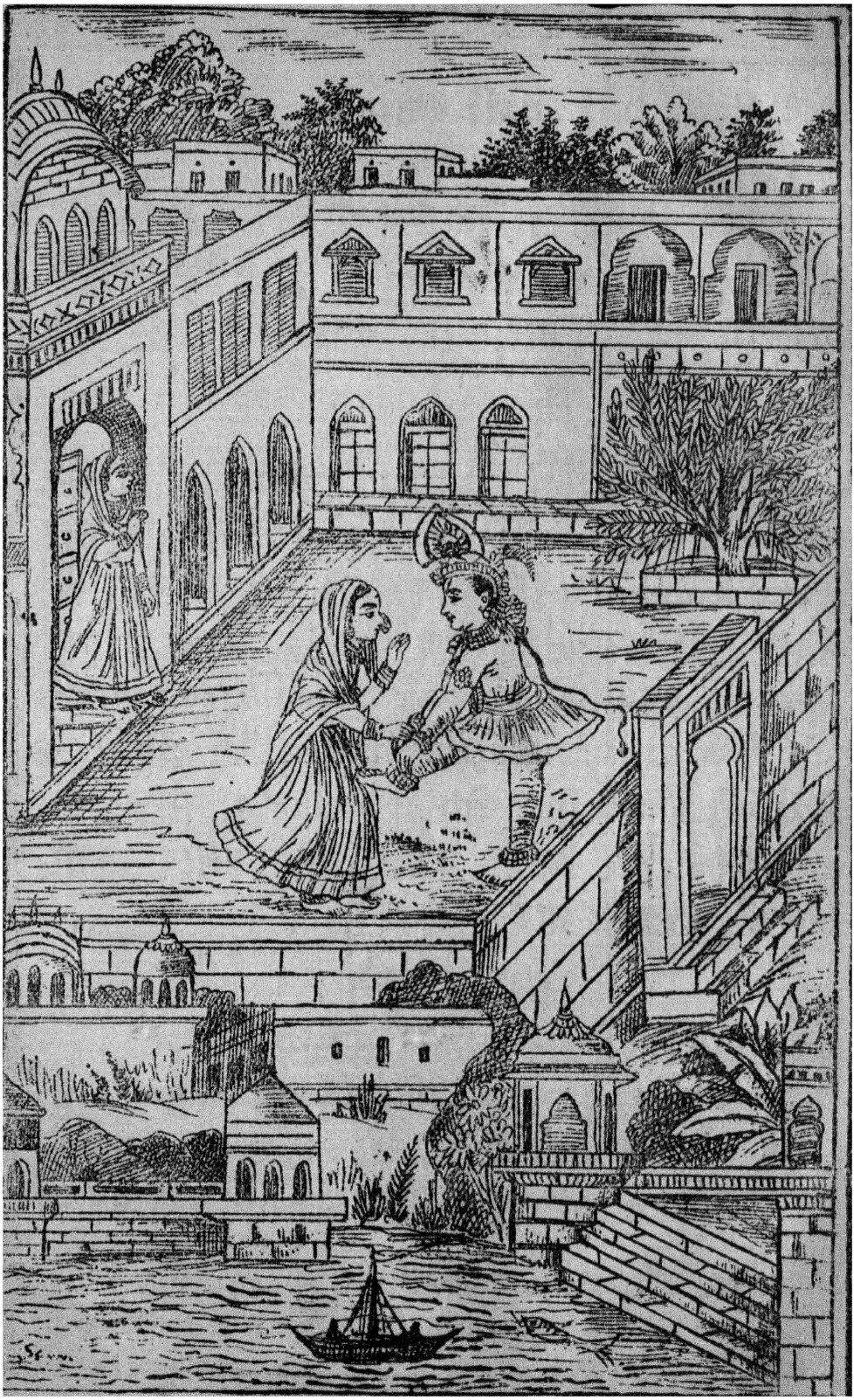

अथ वंशीलीला प्रारंभ ।

समाजी वचन ।

राग आसावरी ।

हँसै मोती चुगावत प्यारी॥ आस्ताई॥पुचकारत करकमल फेरके, भूख लगी तोहि भारी ॥ जित जित चलत बजावत चुटकी, गजगामिनि सुकुमारी । तितहिं तितहिं वुह अति प्रिय बोलत, डोलत फिरत बिछारी॥ कबहुँ बुलावत निकट आपने, डरपावत दै तारी ॥ नारायण या विधि सों खेलत, श्रीवृषभानु कुमारी ॥ १ ॥

समाजी वचन ।

दोहा–वंशी धुनि सुनि कुमरिको, रही न तनकी सार ।
कित हँसिबो कित बोलिबो, कित इससों प्यार ॥२॥

वार्त्तिक ।

सखीने बूझी हे प्यारी ! कहा भयो आपने कही ॥ ३ ॥

राग मलार ।

नन्दनन्दन बन बंशी बजाई री ॥ आस्ताई ॥ श्रवण करत सुधि रही न तन की, एक संग मो मति बौराई री । नयन चकोर चहत निरखनको, शरद चन्दमुख कुँवर कन्हाई री ॥ नारायण नहिं भवन सुहावत, कहा करूं अब एरी माई री ॥ ४ ॥

राग देश अथवा आसावरी ।

वंशी नहीं यह सौति है दारी ॥ आस्ताई ॥ याहीने गृह काज भुलाये, सुधि बुधि सब हरि लई हमारी ॥ जे कुलवन्ति प्रवीण नारि जग, धीरज धर्म पतिव्रत वारी ॥ तिनहूं

की इन लाज बिगोई, वन वन फिरत हैं वदन उघारी ॥
नारायण हमतौ नित तरसें, यह भई अधरनकी अधिकारी ॥
कैतौ यही रहैगी ब्रज में, कै ब्रजमें बसिहैं ब्रजनारी ॥ ५ ॥
दोहा—अरी सखी कितकों बजी, वंशी चितकी चोर ।
मो मन ऐंचत आप को, ज्यों चकई को डोर ॥ ६ ॥

सखी वचन श्रीजी प्रति ।

दोहा—मैं आई लखि लालको, इकले धीर समीर ।
कदम तरे ठाढे हुते, सुन्दर श्याम शरीर ॥ ७ ॥

श्रीजी वचन ।

कान्हरा बागेसरी झपताला ।

चलोरी आज ब्रजराज मुख निरखिये· जगत की लाज सों काज नहिं सरैगो ॥आस्ताई॥ बहुत कोई कहैगो श्यामके ढिग गई,याहूते अधिक पुनि और कहा करैगो॥नाचिबे लगीं तो फेरि घूँघट कहा· सूर रण चढेंपै कौन सों डरैगो ॥ बेगि निज प्यारेते मिलो नारायण, बहुरि ऐसो सखी दाँव कब परैगो ॥ ८ ॥

सखी वचन श्रीजी प्रति ।

राग काफी ।

निज प्रीतमकी तू छबि निहार ॥ आस्ताई ॥ श्याम बरन लखि लजत नीलमणि, सुन्दरता मुख पैं अपार ॥ भृकुटी कुटिल मधुर मुसक्यावन, चितवन की कछु नई ढार ॥नारायण कटि पै कर धरिके, ठाढ़े पकरिके कदम डार ॥ ९.॥

प्रियाजी वचन ।

कालिंगडा ।

मोहन बसिगये मेरे मन में ॥ आस्ताई ॥ लोक लाज कुलकानि छूटि गई, इन की लगन लगन में ॥ जित देखूं

तितही यही दीखें, घर बाहर आँगनमें ॥ अंग अंग प्रति रोम रोम में, छाय रहे सब तनमें ॥ कुण्डल झलक कपोलन सोहै, बाजूबंद भुजन में ॥ कंकन कलितललित मणिमाला, नूपुर धुनि चरणन में ॥ चपल नयन भृकुटी वर बाँकी, ठाढे सघन लतन में ॥ नारायण बिन मोल बिकी मैं, इनकी नेक हँसन में ॥ १० ॥

श्रीजी वचन लालजी प्रति।

राग घनाक्षरी।

सखी री यह नवरूप उजारो ॥ आस्ताई ॥ पिछिलेपन पायो यशुमतिने, पुण्य प्रताप तिहारो ॥ लगि न जाय कहुँ दृष्टि हमारी, अधिक न याहि निहारो ॥ नारायण छबि धाम श्याम पै, राई नौन उतारो ॥ ११ ॥

वार्त्तिक।

तब लालजी बोले, हे प्यारी! आपकी सुदृष्टि सों कबहूँ दृष्टि न लगैगी ॥ १२ ॥

दोहा—लीला युगल स्वरूपकी, दुखभंजन सुख दैन।
नारायण जे नित सुने, गावें पावें चैन ॥ १३ ॥

इति श्रीनारायणस्वामीजीकृत बंशीलीला सम्पूर्णा ॥ २० ॥

अथ निकुञ्जहिंडोरालीलाप्रारंभ।

समाजी वचन।

राग भैरों।

आज दोऊ जागे अति अलसात ॥ आस्ताई ॥ मूँदे नयन अटपटे:बैना, नहिं सम्हार निज गात ॥ नींद विवश ह्वै झूमत

प्यारी, सांझ भई कै प्रात ॥ कहन चहतहैंभोर साँवरो, मुखते निकसत रात ॥ झूमत गिरत पररपर ऊपर, देखि सखी मुसिक्यात ॥ नारायण या अद्भुत छबिकूं, निरखत दृग न अघात ॥ १ ॥

वार्तिक ।

ता पीछे सखीनने प्रिया प्रीतमको स्नान कराय अद्भुत शृंगार करिके नाना प्रकारकी सामग्री भोगधरी ॥ २ ॥

समाजी वचन ।

दोहा—रुचि सों जेंवें युगलवर, लै अचमन हरषात ।
बीरी दै मुख परस्पर, पुनि पुनि मृदु मुसिक्यात ॥ ३ ॥

वार्तिक ।

फिर सखीनने प्रार्थना करी, आज आप काँचके भवनमें हिंडोरा झूलें और हम सब निरखें आप मुसिक्यायके बोले, चलो सखी ॥ ४ ॥

समाजी वचन ।

दोहा—झूलत रंग हिंडोरना, पिय प्यारी मिलि संग ।
अली झुलावत गायके, अतिहिप्रफुल्लितअंग ॥ ५ ॥

सखी गायवे लगीं ।

राग मलार ।

देखि युगल छबि सावन लाजै ॥ आस्ताई ॥ उत घनइत घन श्याम लाडिलो, उत दामिनि इत प्रिय सँग राजै ॥ उत वरषत बूँदन की लरियां, इत गल मुतियन हार विराजै ॥ उत दादुर इत बजत बाँसुरी, उत गरजत इत नूपुर बाजै ॥ उत रंग के बादर इत बागे, उतै धनुष बनमालइत साजै ॥ उत घन घुमड इतै दृग घूमत, नारायण बरषा सुख आजै ॥ ६ ॥

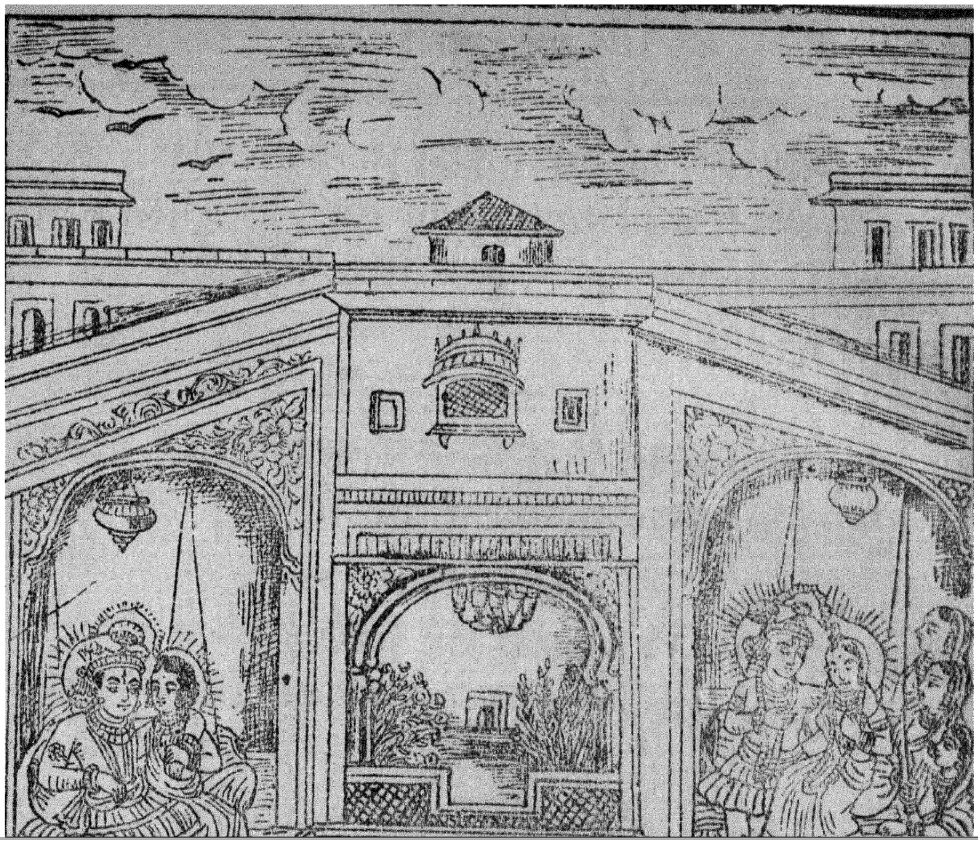

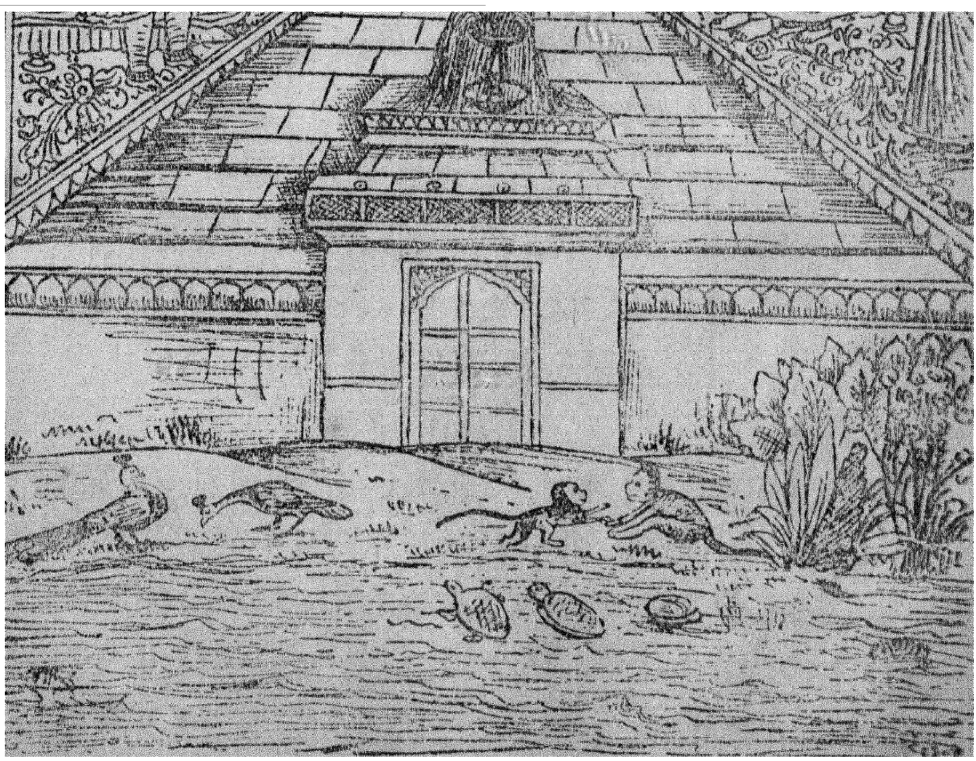

सखी वचन परस्पर।

राग मलार।

आज दोऊ झूलत मुसिक्यावत ॥आस्ताई॥ औरहु बात लखी तें सजनी, सैनन माहिं कछू बतरावत ॥ मेल कपोल अधर धर बंशी, एक संग पुनि दोऊ बजावत ॥ बजत नहीं झगरत आपस में, निरखि सखी अतिशय सुख पावत ॥ निज प्रतिबिम्ब देखि दरपनमें, भानुलली मनमें सकुचावत ॥ बूझत पिय सों यह को झूलत, जो निज छबिसों हमें लजावत ॥ हँसत श्याम प्रियकूं लखि भोरी, कठ लगाय बहुत समझावत ॥ नारायण हठ तजत नहीं जब, सन्मुख ते सखी काँच हटावत ॥ ७ ॥

समाजी वचन।

दोहा—प्यारा निज प्रतिबिम्ब लखि, सकुच गई मन माहीं।
तब प्यारो हँसि हँसि परत, दै प्रियके गलबाहिं ॥८॥
यह लीला नित सुने सों, कृपा करे घनश्याम।
वृन्दावनको वास दें, और आपनों नाम ॥ ९ ॥

इति श्रीनारायण स्वामीजी कृत निकुंजहिंडोरा लीला सम्पूर्ण ॥ २१ ॥

अथ शयनलीलाप्रारंभ।

समाजी वचन।

दोहा—एक समय रसरासमें, निरतत प्यारी पीय।
अधिक रैन पुनि गई जब, बोली पिय सों प्रीय॥१॥

प्यारी वचन ।

दरबारी कान्हडा ।

प्रीतम वेगि निकुंज पधारो ॥ आस्ताई ॥ रजनी बहुत गई या सुख में, अधिक न रस विस्तारो ॥ अति आलस वश दीखत प्यारे, कोमल वदन तिहारो ॥ दृग झूमत पग डगमगात उत, बोल शिथिल है न्यारो ॥ रास विलास करत श्रम पायो, ताकूं तनक निवारो ॥ नारायण जीवन अधार तुम, मो नयननको तारो ॥ २ ॥

सखी वचन ।

राग देश ।

युगल छबिदेखि मेरो हियरा सिरात ॥ आस्ताई ॥ नींद भरे मग चलत झूमिके, शिथिल भये सब गात ॥ कह्यो चहत कछु कढत कछू मुख, कहत कहत रहि जात ॥ नारायण या विधि निकुंज में, पहुँचे अति अलसात ॥ ३ ॥

सखी वचन और सखी प्रति।

राग जैजैवंती ।

आज बिराजी रहे मणिमंदिर, नंदनँदनवृषभानु किशोरी॥ आस्ताई ॥ केलि करत युग याम गई निशि, लेत जम्हाई साँवरो गोरी ॥ अति आलस वश झूमत दोऊ, बात करत मुख अटपटि भोरी ॥ नारायण सोई बड़भागी, जो नित निरखत है यह जोरी ॥ ४ ॥

समाजी वचन ।

दोहा–हँसि रस में गइ अर्द्ध निशि, भये नींद वश नैन ।
अलसाने झूमत झुकत, कहत अटपटे बैन ॥ ५ ॥

सखी वचन।

आशीश।

जजैवन्ती अथवा विहाग।

आनन्द रहो दृगचन्द दोऊ, शुभ लगुन सदा तुमको आवें ॥ आस्ताई॥ नितही रसकेलि करो मिलिके, हम निरखि निरखि अति सुख पावें ॥ यह धन हमसे रंकन को मिल्यो, हम कहांलों विधि के गुण गावें ॥ नारायण अब आशीश करें, तुमहूं पौढो हमहूँ जावें ॥ ६ ॥

वार्तिक।

अर्थात् आज्ञानुसार अपनी २ सेवा पै ॥ ७ ॥

दोहा—लाला श्रीब्रजचन्द्र की, यामें रस संयोग।
नारायण जे नित सुने, बडभागी ते लोग ॥ ८ ॥

इति श्रीनारायण स्वामीजी कृत शयनलीला संपूर्ण ॥ २२ ॥

अथ साँवरीछद्मझूलनलीलाप्रारम्भ।

समाजी वचन।

दोहा—जहां झुलति रहि लाडिली, गये तहां घनश्याम।
बोली प्रिया अबलानमें, कहा पुरुष को काम ॥ १ ॥

वार्तिक।

लालजीने कही हे प्यारी! यह हमरी भूल समझो जो यहां आये, अब चले जायँगे ॥ २ ॥

समाजी वचन।

दोहा—अति प्रवीण छलछंद में, रसिकनके शिर मौर।
वनिता भेष बनायके, फिरि पहुँचे वा ठौर ॥ ३ ॥

लालजी वचन ।

राग मलार ।

एरे दई मैं यहां क्यों आई ॥ आस्ताई ॥ कोऊ नहीं कहिं झूलरी तुमहू, अतिही कठोर यहांकी लुगाई ॥ मैं अपनी सम जानत सबकूं, याही धोखे रही भुलाई ॥नारायण निज भवन चलूं अब, याझूलन तें बहुत अघाई ॥ ४ ॥

श्रीजी वचन साँवरी प्रति ।

दोहा–हँसि कर बोली लाडिली, सुन री साँवर अंग ॥
तू उदास जिन हो सखी, झूलि हमारे संग ॥ ५ ॥

सखी गायवे लगीं ।

राग झंझोटी ।

ये दोउ झूलैंरी मन के मोहन हार॥आस्ताई ॥ सजनी एक साँवरे रँगकी सँग वृषभानु कुमार ॥ सावन मास सुहावन भावन, फूल रही फुलवार ॥ रेशम डोर जड़ाऊ पटली,सघन कदम की डार ॥ गर्जत घन चमकत है चपला, बूँदन परत फुहार॥ ठौर ठौर मिलि मोर नचत हैं, या सुखको नहिं पार॥ भाँति भाँति के पक्षी बोलें, शीतल चलत बयार ॥ फूले कमल सरोवर माहीं, भ्रमर करत गुंजार॥चहूँ ओर छाई हरियाली,अद्भुत विपिन बहार॥ लिपटि रहीं बरबेलि द्रुमन सों, हरषत युगल निहार ॥ बरन बरनके लाल सोसनी,सखियन किये शृँगार॥विविध प्रकार बजावत बाजे,गावत राग मलार॥ चतुर सखी इक जानि गई तब, उर सों चीर उघार ॥ हँसि हँसि परत लखावति औरन,यह लंगर छलवार॥ललिता कहै इन्हैं नहिं व्यापै, तनक लाज संसार॥पल पल माहिं स्वांग धरि आवत, कबू पुरुष कबू नार ॥ नारायण बोली प्रीतम

सों, कीरति प्राण अधार।।वनिता भेष उतारि आपनों, रूप लेउ निज धार ।। ६ ।।

वार्तिक।

श्री लालजी बोले हे प्यारी ! अबहूं तौ मरदके संग झूलीं आपने मुसिक्यायके कही, हम तौ लुगाई के संग झूली हैं, यह वचन सुनिके सब सखियां परस्पर हँसिवे लगीं ।। ७ ।।

दोहा-तर्क छाँडि जो नित सुने, यह लीला आनन्द ।
नारायण तापै दया, सदा करें ब्रजचन्द ।। ८ ।।

इति श्रीनारायणस्वामीजी कृत साँवरीछद्मझूलनलीला सम्पूर्णा।।२३।।

अथ वनझूलनलीलाप्रारम्भ ।

समाजी वचन।

दोहा-सावनमास सुहावनो, घन गर्जत चहुँओर ।
निरखि निरखि शोभा नई, हर्षत नन्दकिशोर ।। १ ।।
दोहा-परत फुहार सुहावनी, भीजत श्रीब्रजराज ।
प्यारी को बोलन चले, झूला झूलन काज ।। २ ।।

प्रियाजी वचन सखी प्रति।

राग मलार।

सखीरी यह सावन मनभावन ।। आस्ताई ।। चातक मोर चकोर कोकिला, बोलत वचन सुहावन ।। गरजत घन घननन घननन कर, लगे मेह वरषावन ।। नारायण भीजत मेरे गृह, श्यामसुँदरको आवन ।। ३ ।।

लालजी वचन श्रीजी प्रति ।

राग देश ।

चलौ अकेले झूलें बनमें प्यारी मेरे प्रान ॥ आस्ताई ॥ तुम नई नागरि रूप उजागरी, सुखसागर छबि खान ॥ बरन बरन के बादरछाये, मानो गगन बितान ॥ बरषत बूँद सोई मुतियनकी, झालर शोभा मान ॥ बोलत खग मृग डोलत इत उत, सों नहिं जात बखान ॥ रंग रंगके फूल मिले हैं, भ्रमर करत रसपान ॥ ऐसे समय विपिन सुख विलसें, ए री परम सुजान ॥ नारायण उठि बेगि पधारो, कुलदीपक वृषभान ॥ ४ ॥

दोहा—कछुक दूरि बनमें गये, बरषन लाग्यो मेह ।
कदम तरे ठाढ़े कहैं, किहि विधि पहुँचें गेह ॥ ५ ॥

समाजी वचन ।

राग मलार ।

कदम तरे ठाढे दोऊ बतरावें ॥ आस्ताई ॥ परत फुहार पवन झकझोरत, अब कित भाजिकें जावें ॥ भवन दूरि बन ठौर न दीखत, जहां निज बसन दुरावें ॥ नारायण कछु दूरि जायके, फेरि बगदि वहिं आवें ॥ ६ ॥

वार्तिक ।

तब प्यारीजीने कही बूँदमसो कहा डरपौ, भीजिवेको तो बनमें आयेहीहैं, परन्तु काहू और सघन लता तरें चलिके झूलें ॥७॥

समाजी वचन ।

राग मलार ।

विहरत बाग झूलतके काजें ॥आस्ताई॥ गावत गीत मधुर सुर दोऊ, बीच बीच मुरली धुनि बाजें ॥ ठुमकि चलन

बोलन अवलोकन, कोटि मदन छबि निरखत लाजें॥ नारायण झुलसत सुख बिलसत, लताभवन तरें आय बिराजें ॥ ८ ॥

समाजी वचन ।

दोहा—झूलत हैं श्री लाडिली, प्रीतम ओर निहार ।
बोली अजी गावौ कछू, ललित ख्याल मल्हार ॥९॥

लालजी गायवेलगे ।

राग मलार ।

आई बदरिया बरषनिहारी ॥ आस्ताई ॥ गरजि गरजि दामिनि दमकावै, ज्यों चूँदरि में झलक किनारी ॥ मधुर मधुर कोयल बन बोलैं, भवन भवन गावत ब्रजनारी ॥ चलत पवन शीतल नारायण,परत फुहार लगति अति प्यारी १०॥

वार्तिक ।

प्रियाजीने प्रसन्न ह्वैके अपने प्रीतम को बडाई करी ॥११॥

समाजी वचन ।

दोहा—एक सखी बन बिरहने, गई हुती वा ओर ।
जितमें झूलत दोउ जन, राधा नन्दकिशोर ॥ १२ ॥

दोहा—लता ओट ते निरखि सुख, कही सखिनसों आय ।
कहा कहूँ छबि आजकी,मोपै कही न जाय ॥१३॥

सखी वचन अपर सखी प्रति ।

राग हिंडोरा ।

आवौ री यह शोभा निहारें ॥ आस्ताई ॥ नन्दलाल वृषभानु नन्दिनी, झूली रहे गरबैयां डारें॥परत फुहार विपिन हरियाली, वन पक्षी मृदु वचन उचारें ॥ अति निरमल जल भरे सरोवर, फूले कमल भ्रमर गुँजारें ॥ पवन झकोर उडत प्रियको तट,झट प्रीतम निज हाथ समारें ॥नारायण इनकी या छबि पै , आज सखी हम सरबस वारें ॥ १४ ॥

वार्तिक ।

फिरि सखी आपसमें कहिबे लगीं देखोरी आज हमसों छिपिके झूलि रहे हैं ॥ १५ ॥

सखी वचन ।

ध्रुपद ।

ऐसो आनन्द सखी आजलों न देखोकबू, आपही झूलनि हार आपही झुलावें ॥ आस्ताई ॥ वरषत घन गरजि घोर बोलत पिक नचत मोर चपला चमकि चहूं ओर दम्पति हरषावें ॥ भीजि रहे चीर बहे कुसुम रंगअंग अग, तापै दोउ एक संग मिलि मलार गावें ॥ नारायण पीय प्यारी सांवन सुख लेत सखी, गौर श्याम बदन रती मदनको लजावें ॥ १६ ॥

समाजी वचन ।

दोहा—पुनि सजनी दम्पति निकट, जाय करी बलिहार ।
निजमनमें सकुची प्रिया, ढिगकी सखी निहार १७ ॥

श्रीजी वचन सखिन प्रति ।

राग सारङ्ग ।

तुम सम को जानत चतुराई ॥ आस्ताई ॥ मोहि अकेली छांडि भवनमें, आप सभी वन विरहन आई ॥ मैं आई यहां तुमें खोजिबे, इत उत हेरत डगर भुलाई ॥ नारायण कछु भाग भले जो, मिले विपिनमें कुँवरकन्हाई ॥ १८ ॥

वार्तिक ।

सखियनने मुसिक्यायके कही ये हमसों भूल भई फिरि सब मिलिके गायवे लगीं ॥ १९ ॥

राग कानरा।

आज बँशीवट वरषत रङ्ग ॥ आस्ताई ॥ यमुना तीर समीर सुहावन, बोलत विविध विहंग ॥ कीरतिकुँवरि लाल नन्दजीको, झूलि रहे इक संग ॥ रूपसिन्धु के अङ्ग अंग ते, छबि की उठत तरंग ॥ बजत बीन ताऊस सरंगी, बंशी झांझ मृदंग ॥ नारायण गावति मिलि सजनी, हियमें बढत उमङ्ग ॥ २० ॥

समाजी वचन।

दोहा—लाल झुलावत लली कूं, झोटा दियो बढाय।
तासों पिय पै रिस भई, भृकुटी लई चढाय॥ २१॥

लालजी वचन श्रीजी प्रति।

राग सोरठ।

कौन समो रूठन को प्यारी झूलो ललित हिंडोरे ॥ आस्ताई ॥ रंग बरंग घटा नभ छाई, बिच बिच चपला चमक सुहाई, परत फुहार परम सुखदाई, चलत समीर झकोरे ॥ विविध भाँति पक्षी बन बोलें, मृगिन सहित मृग बिहरत डोलें, जलजन्तू जिमि करत कलोलें, यही अचरज मन मोरे ॥ कुसुम चीर पहरें ब्रजनारी, साज समाज आज है भारी, नारायण बलिजाऊं तिहारी, प्रीतम करत निहोरे ॥ २२ ॥

वार्तिक।

पासतें सखियननें कही हे प्यारी! प्रीतम को कछु दोष नहीं इनको झुलायबो नहीं आवै, अब आप दोउ झूलौ और हम झुलावें गावें ॥ २३ ॥

राग मलार।

सघन बन झूलें दोऊ सुकुमार ॥ आस्ताई ॥ हिय हरषत छबि निरखि परस्पर, छिन छिन बाढत प्यार ॥ कबहुँ

मुदित मन तान लेत मिलि, होत सखी बलिहार ॥ नारायण द्रुम बेलि सुहावनि, हरा कियो शृंगार ॥ २४ ॥

वार्तिक ।

श्रीजीने कही सखी ! कछु औरहू गाओ, जो आज्ञा ॥२५॥

राग गौड मलार ।

बादरवा गहरे आये ॥ आस्ताई ॥ उमड़ि घुमड़ि घन गरजि गरजिके, बरषन को उठि धाये ॥ बरन बरन के अति सुन्दर घन, नभमण्डल में छाये ॥ चपला चमकि दुरति पुनि प्रगटति, कंचन अंग सुहाये ॥ नाचत मोर कोकिला बोलत, सबके मन हरषाये ॥ नारायण जित तित हरियाली, मेह नेह रं लगाये ॥ २६ ॥

वार्तिक ।

फिर सखीने विनती करी, सर्कार ! अब तौ मेह बहुत आयो है भवनमें पधारो, मारग में जा सखी ने इनको आवत देख्यो, वाने और सखी सों कही ॥ २७ ॥

रेखता इमन को जिला ।

सुन्दर अनूप जोरी, अति मन की भावती । देखी मैं आज मगमें, कुंजनसों आवती ॥ सुन्दर० १ ॥ अग अंग देत शोभा, भूषण जडाऊं आली । नयन में सोहै काजर, अधरन पै पानलाली ॥ ० २ ॥ प्रीतम के कांधे कर धर, प्यारी अनन्द सों । हँसि हँसि के करत बातैं, मुख ललित चन्द, सों ॥ सुं० ॥ ३ ॥ पग धरत हौलें हौलें, गति देख हंस लाजें। नूपुर परम मनोहर, अति मधुर मधुर बाजें ॥ सुं० ४ ॥ या भाँति सों मगन ह्वै, क्रीडाकरत हैं दोऊ । नारायण रसिक जन बिन, ये रस न जाने कोऊ ॥ सुन्दर० ॥ ५ ॥ २८ ॥

दोहा—लीला मोहनलालकी, सब साधनको सार।
नारायण रुचिसों सुने, उतरे भवसों पार ॥ २९ ॥
इति श्रीनारायणस्वामीजी कृत वनझूलनलीलासंपूर्ण ॥ २४ ॥

अथ वसन्तलीलाप्रारम्भ ।

समाजी वचन ।

दोहा—नारायण वृन्दाविपिन, निशिदिन रहत वसन्त ।
पियप्यारीमिलिमुदितमन, क्रीडाकरतअनन्त ॥ १ ॥
वन बिहरनके कारने, लली हिये हरषाय ।
सखी पठाईं लाल ढिग, लावो संग लिवाय ॥ २ ॥

वार्तिक ।

आज्ञानुसार जब सखी गई, तब रसिकराज बोले,सखी! तू चल हम नेक देर में आवें ॥ ३ ॥

सखी वचन श्रीजी प्रति ।

दोहा—आवेंगे कछु देर में, मोसों भयो मिलाप ।
यह सुनिके कीरति कुमरि, बैठिरही चुपचाप ॥ ४ ॥

समाजी वचन ।

दोहा—फूलन के गहने रचत, लालहिं लगी अवार ।
पुनि यह सुनि कि लाडिली, बैठी रिस उर धार ॥५॥
आन उपाव न बनि सक्यो, मालिन भेष बनाय ।
चले प्रियाके भवनकूं, मनहीं मन हरषाय ॥ ६ ॥

समाजी वचन ।

पद राग सारंग ।

मालनि भेष बने पिय प्यारे ॥ आस्ताई ॥ फूल शृँगार धरें डलिया में भूषण पटसों अंग सँवारे ॥ सकुच सहित मग चलत मन्दगति, पग बिछिया बाजत हैं न्यारे ॥ नारायण अद्भुत शोभासों, पहुँचे भानुकुमरिके द्वारे ॥ ७ ॥

सखी वचन श्रीजी प्रति ।

राग बसन्त बहार ।

मान सखी जिन मान बढावै ॥ आस्ताई ॥ नवपल्लव विकसे वन बागन, नवबहार सबके मन भावै ॥ नयो रूप नवयौवन तेरो, देखत बने कहत नहिं आवै ॥ नारायण इतनो धन पाके, फिरि गोरी तू न क्यों इतरावै ॥ ८ ॥

वार्तिक ।

तब प्यारीजी न बोलीं तब फिरि सखियनने कही ॥ ९ ॥

राग बसन्तबहार ।

री तू नेक किंवार उघार देख ॥ आस्ताई ॥ द्वार ठाढे प्रीतम मालिनियां भेख ॥ आयो तेरे काजाऋतुराज आज फूले फूल मूल फल दल विशेष ॥ नारायण कह्यो मानिलै सजनी यामें नहीं कछु मीन मेष ॥ १० ॥

दोहा—सखी वचन सुनि लाड़िली, उठी कछुक मुसिक्यात ।
जाय द्वार प्रीतम लखे, सखी सामरे गात ॥ ११ ॥

दोहा—लली लालसों हँसि कहत, तुम्हें न आवत लाज ।
लाज किये ते होय कब, या विधि पूरण काज ॥ १२ ॥

वार्तिक ।

ता पीछे प्रीतमने फूलन के गहने पहराये सखी बडाई करिवे लगीं ॥ १३ ॥

सखी वचन।

ध्रुपद कान्हडा वा सिन्दूरा।

फूलन की चन्द्रकलासीसफूल फूलन को, फूलनके झूमका श्रवण सुकुमारी के॥ आस्ताई॥ फूलन की वन्दनी विशाल नथ फूलन की, फूलन को बिन्दा भाल राजदुलारी के॥ फूलन की चम्पाकली हार गरे फूलन के, फूलनके गजरा ललित करे प्यारीके॥ फूलन की पग में पायल नारायण, फूले फूले भागि सदा लाडिली हमारी के॥ १४॥

किशोरीजी को वचन लालजी प्रति।

राग वसन्त धीमाताल।

चलो लाल खेले वसन्त मिलि, श्रीयमुनाजीके कूल॥आस्ताई॥नव निकुंजवन नई ऋतु आई नये नये फूले फूल॥ द्रुम डारिन बैठे नव पक्षी बोलत अति अनुकूल॥ नारायण उत नई बहार सुख, इतमें तुम सुख मूल॥ १५॥

वार्तिक।

फिरि श्रीकिशोरीजी ने अपने प्रीतम को नागरि भेषबढा यके जब श्रीयमुनाजीके तट मनोहर बाटिकामें जायके जडाऊ सिंहासन पै गलबैहां डारके विराजे तब गन्धर्व सखीको आज्ञा भई, जो तुम कछू गाओ, ताही समय रति मदन मालिनी माली को भेष धारण कर डाली लगायके युगल सर्कार के आगे लाय धरी, तब गन्धर्व सखी भी गायवे लगी॥१६॥

ध्रुपद राग बसन्त।

नवल रंग नवल फूल, नवल शोभा यमुनाकूल, नवल सघन बेलि द्रुम प्रफुल्लित चहुँओर॥ आस्ताई॥ ललित नई गुल्म लता, चटकि चटकि खिलत कली, बिकसे तरुपात नये, नयो

नयो बौर ॥ नवल लली नवल लाल, नवल सखी गावें ख्याल, नयो माली मदन डाली, लायो कर जोर ॥नवसमीर नव सुगन्धि, नये नये नित ह्वै अनन्द, नारायण नवबहार, बीतत निशि भोर ॥ १७ ॥

दोहा–ये लीला नित सुनेते, कृपाकरें घनश्याम ।
निज चरणन की भक्ति दे, अरु वृन्दावन धाम॥ १८॥

इति श्रीनारायण स्वामीजीकृत वसन्तलीला संपूर्ण ॥ २५ ॥

अथ होरीलीलाप्रारम्भ ।

सखी वचन श्रीजी प्रति ।

राग काफी ।

गोरी कुँजन में आज होरी मची, तू कहा बैठी मांग सँवारै ॥ आस्ताई ॥ मेरी कही जो सांच न माने, सुनिलै डफ धुधकारै ॥ उठि सजनी चलि फाग खेलिलै, प्रीतम तोहि पुकारै ॥नारायण तब बात है तोरी, तू जीतै पिय हारै॥ १॥

वार्तिक ।

तब प्रियाजी ने एक नई सखी सों कही अरी ! तू होरी खेलिवे न चलैगी तब वह सखी बोली ॥ २ ॥

होरी रसिया ।

सास ननँद मेरी देखि रहीं, मैं होरी कैसे खेलूं बीर ॥ आस्ताई ॥ मैं अपने मन माँहिं कहूं अब, काह करूं करतार । रसिया नचत बजावत डफ मोहि, टेरत बारहिं बार । द्वारें होय रहीं भीर ॥ लाज भरी गारी गावत, नहिं नेकहु सकुचत छैल । मूठ गुलाल इतै उत फेंकत, रोकि रह्यो है गैल

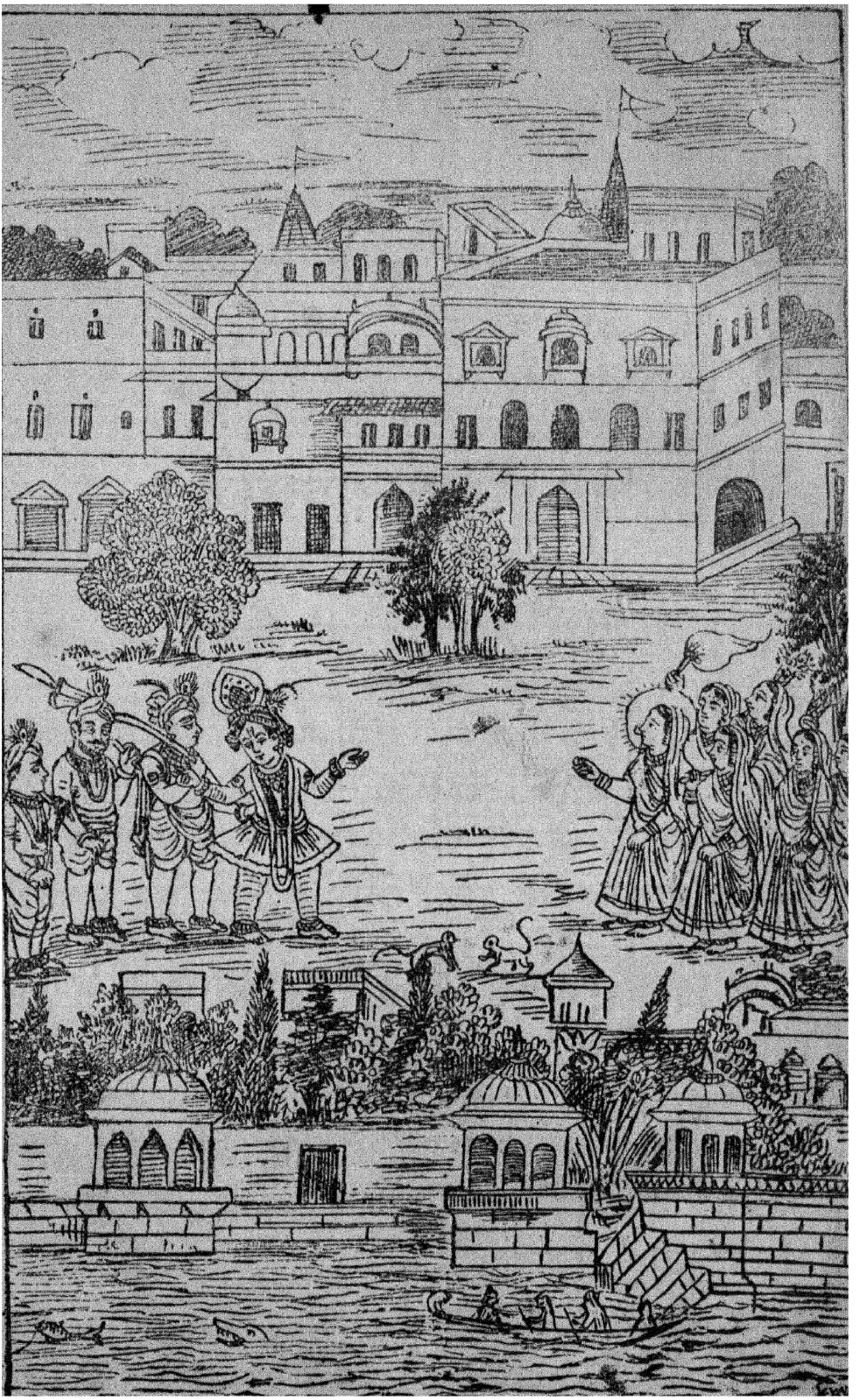

। संग छोहरा अहीर ।। याही सों बाहिर नहिं निकसूं, पिचकारी दे मार । नारायण फिरि बात छिपै कब निरखेंगे नर नार । भीजे रँग सों चीर ॥ ३ ॥

लालजी वचन सखी प्रति ।

सारंगको रसिया ।

होरीमें लाज न कर गोरी,॥आस्ताई॥हम ब्रज के रसिया तुम गोरी, भली बनीहै यह जोरी ।। जो हम सों सूधे नहिं खेलो,यार करेंगे बरजोरी ।। नारायण अब निकसो द्वार पै, छूटौ नहिं बनिके भोरी ॥ ४ ॥

वार्त्तिक ।

पुनि वा सखी सों प्रियाजी ने कही,अरी ! जो तू होरीमें इतनो डरैगी तो ब्रजबास करिचुकी. फिरि सखिन सहित श्रीकिशोरीजी होरी खेलिवे कूं पधारीं ॥ ५ ॥

लालजी वचन सखान प्रति ।

राग भूपाली ।

यह को आवत है गजचाल, संग बहु भीर लिये शोभा विशाल ॥ आस्ताई॥पिचकारी निज वसन छिपाये, झोरिन में दीखत गुलाल ॥ एरे सखा तुम चेत करो अब,ये हैं घनी ब्रजबाल ॥ नारायण कहुं हाथ न ऐहौ, भैय्या तुम थोरेसे ग्वाल ॥ ६ ॥

प्रियाजी वचन लालजी प्रति ।

राग सिन्दूरा ।

एरे लाल फिरि होरी आज खेलन आये, कल कछू थोरे नचेहौ॥ आस्ताई ॥ बेशरमी तुम्हरे वट आई,मोहि तौ ऐसे

जचेहौ ॥ तिहार गुण वरने नहिं जाई. तुमतौ ढीठ सचेहौ ॥ नारायण बलिहारि तुम्हारी, लाज सों तुमहिं बचेहौ ॥ ७ ॥

वार्तिक ।

फिरि तौ होरी होने लगी ॥ ८ ॥

सखी वचन परस्पर ।

राग काफी ।

प्रिय प्यारी आज होरी खेलत यमुना तीर ॥ आस्ताई ॥ हँसि हँसि बदन अरगजा डारत, मारत मूठ अबीर ॥ चलत कुमकुमा रँग पिचकारी, भीज रहे तन चीर ॥ जनु घन दामिनि रूप धरे हैं, गोरे श्याम शरीर ॥ बजत अनेक भांति मृदु बाजे, होय रही अति भीर ॥ नारायण या सुख निरखे बिन, कौन धरै मन धीर ॥ ९

श्रीजी वचन सखी प्रति ।

सारंग रसिया ।

रसिया को नारि बनावौ री ॥ आस्ताई ॥ कटि लहँगा उरमाहिं कंचुकी, चुँदरी सीस उढावौ री ॥ गाल गुलाल दृगन बिच काजर, बेंदी भाल लगावौ री ॥ नारायण तारी बजाय निकट न यशुमति केचावौ री ॥ १० ॥

वार्तिक ।

लालजीने कही हे प्यारी ! नागरी तौ मोहि बनाओगी, परन्तु जो मेरी मैय्याने मोकूं पहिचान लियो तौ फिर आप की चतुराई कहां रहैगी. जासों मैं अपनो शृंगार अपने हाथ सूं करूं, कि फिर कोई भी न पहचाने, और आप की बडाई होइ, तब सब ने कही यही ठीक है. फिरि एक एक आभूषण अपनो सबने इनकूं उतारि दियो, जब लालजी सघन लता-

कुंज के भीतर शृंगार करिबे लगे, झट दूसरी ओर सों निकसि दूर जाय के बोले यार ! तौ अपने घरकू चले, यह कौतुक देखि के सब सखी आपस में कहिवे लगीं, लै बीर ब्रज-भूषण तौ गांठ के भूषण हू लै चल्यो ॥ ११ ॥

दोहा—यह लीला जो नित सुने, गावे चित के चाव।
नारायण भवसिन्धु ते, तुरत पार ह्वै नाव ॥ १२ ॥

इति श्रीनारायणस्वामीजीकृतहोरीलीला सम्पूर्ण ॥ २६ ॥

अथ गलीहोरीलीला प्रारंभ।

समाजी वचन।

दोहा—होरी खेलनके लिये, रसिया श्याम सुजान।
फेंट अबीर गुलाल भरि, गये गली वृषभान ॥ १ ॥

श्रीजी वचन सखी प्रति।

होलीजङ्गले का जिला।

होरी खेलनकेलिये नन्दलाल, मग नाचत आवत मटक मटक ॥ आस्ताई ॥ कर डफली गति मधुर बजावत, ताल देत पग पटक पटक ॥ अंग अंग छबि कहि न जाय कछु, चढचो मदन को कटक कटक ॥ नारायण मन हरत है मेरो, पेच पाग के लटक लटक ॥ २ ॥

सखी वचन सखी प्रति।

राग काफी।

देखि सखी वृषभानु किशोरी ॥ आस्ताई ॥ निज प्रीतम को रूप निहारत, जा विधि चन्द चकोरी ॥ भलो फाग

खेलन को निकसी, बीच भई चितचोरी ॥ नारायण अटके दृग छबि में, भूलिगई सुधि होरी ॥ ३ ॥

सखी वचन श्रीजी प्रति ।

दोहा—कौन समो है ध्यान को, एरी नवब्रजबाल ।
डारि अनोखे लाल पै, रंग अबीर गुलाल ॥ ४ ॥

सखी वचन ।

होरी ।

सखी देखौ आज वृषभानु लली, होरी खेलत अति छबि पावै ॥ आस्ताई ॥ प्रीतम के दृग मार कुमकुमा, सन्मुख ते मुसिक्यावै ॥ कबहूं कहति गिरचो नथ मोती, अब कैसे कर पावै ॥ बातनमें उरझाय लाल को, गाल गुलाल लगावै ॥ जब प्यारो पकरन को लपकत, अधिक अबीर उड़ावै ॥ धूंधरि माहिं कछू नहिं सूझत, आपकूं चतुर बचावै ॥ गौर श्याम मुख भये एक से, शोभा कहत न आवै ॥ नारायण फागुन के सुख में, लोकलाज नहिं भावै ॥ ५ ॥

समाजी वचन ।

दोहा—जब थोरोसो रहि गयो, रंग अबीर गुलाल ।
तब टेरत निज यूथ को, सुघर लाडिली लाल ॥ ६ ॥

होरी काफी धीमा ताल ।

आज दोऊ महमाते खिलारी, नन्दनँदन वृषभानु दुलारी॥ आस्ताई ॥ निज निज यूथ युगलवर टेरत, चोप बढ़ी जीतन की भारी ॥१॥ भवन भवन ते निकसीं सजि सजि, गोरी साँवरी रूप उजारी॥ज्यों अति प्रबल घटा घिर आवत, त्यों मिलके आईं ब्रजनारी ॥ २ ॥ एक ओर लिये लाल सखा सँग, एक ओर सब गोपकुमारी ॥ होन लगी अब होरी पर-

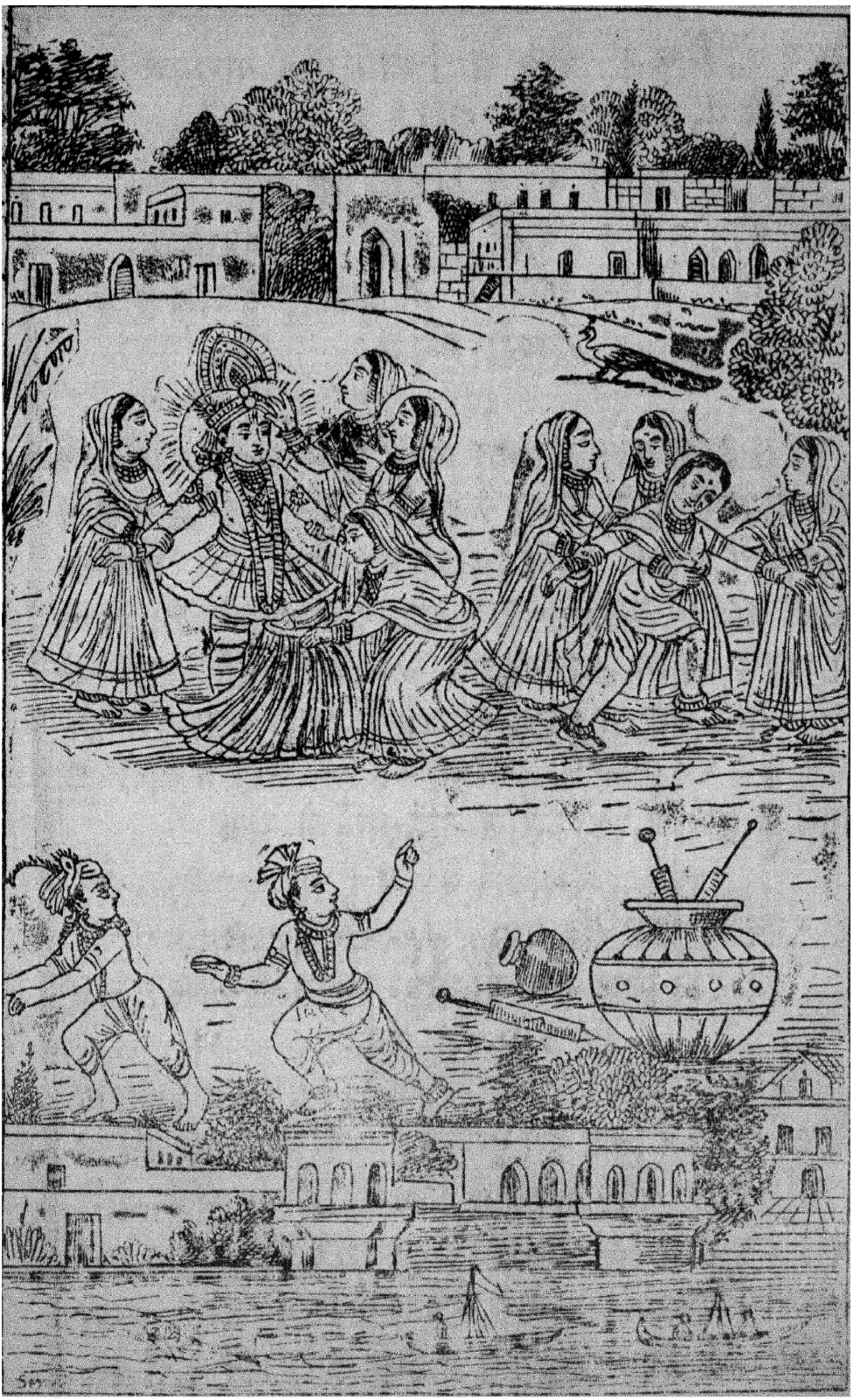

स्पर, चलन लगीं इत उत पिचकारी ॥ ३ ॥ तकि तकि के दृग कुमकुमा मारत, डारि गुलाल देत रसगारी ॥ छिरकत अतर चतुर नवनागर, फूलि रही जोबन फुलवारी ॥ ४ ॥बीन मृदङ्ग सितार सरङ्गी,तूस मुचङ्ग झाँझ डफ न्यारी॥मधुर मधुर सुर साज बजत गति, है अति सुघर बजावनवारी ॥ ५ ॥ सैन चलाय सखी आपस में, सखान के पकरन की विचारी ॥ घबराये सब ग्वाल लाल के, भाग चलैमन धीरन धारी ॥ ६ ॥ घेरि लियो तब नन्द नँदन को, भामिनि भेष बनाय शृँगारी॥ मुतियन मांग भरी दृग अंजन, पग बिछिये नथ भलकाबारी ॥ ७ ॥ दै गुलचा मुख मीडत रोरी, नभ मण्डल निरखत सुरनारी ॥ ताहि नचावत गीत गवावत, ध्यान धरत जाको त्रिपुरारी ॥ ८ ॥ पुनि मिलके लै गईं महरि ढिग, नख शिख लों सब भाँति सँवारी ॥ ब्रजरानी यह मिलिबे आई, नाँते में कछु लगति तिहारी ॥ ९ ॥ जब यशुमति उठि भेटन लागी, ब्रजवनिता मुखिक्यावत सारी ॥ जानि गई तब महहि यशोदा, नारि नहीं है मेरो बिहारी ॥ १० ॥ हँसि हँसि परत देखि मुख सुत को, करि आदर सगरी बैठारी ॥ बडे भाग जो मों मन्दिर में, सहित सखिन यह कुमरि पधारी ॥ ११ ॥भानुलली बोली यशुमति सों, बेगि करो फगुआकी त्यारी ॥ हारि गयो ब्रजभूषण तेरो, देखि लेउ भई जीत हमारी ॥ १२ ॥ आनँद भरे वचन सुनि उनके, मगन भई हरि की महतारी॥ पट भूषण पहिराय प्रीति सों, गोद सबनके मेवा डारी ॥ १३ ॥ लै आज्ञा ब्रजनारि महरि सों, शीश नवायके भवन सिधारी ॥ नारायण धनि धनि वृन्दावन, जहँ विहरत नित प्रीतम प्यारी ॥ १४ ॥ ७ ॥

दोहा–सुख उपजावन दुखहरन, यह लीला ब्रजराज ।
नारायण नित सुनेते, पूरण होवें काज ॥ ८ ॥

इति श्रीनारायणस्वामीजी कृत गलीहोरी लीला
सम्पूर्ण ॥ २७ ॥

अथ छद्महोरीलीलाप्रारंभ ।

समाजी वचन ।

दोहा–लै गागरि गोरी चली, भरिवे यमुना नीर ।
एक सखी मग में मिली, बोली सुन री बीर ॥ १ ॥

सखी वचन पनिहारी प्रति ।

रांग आसावरी ।

तू कित आज चली बनठन के, मनमोहन मग खेलत होरी ॥ आस्ताई ॥ जाने कहा वाके दृग जादू, जो निरखत सोई होत है बोरी ॥ शरद इन्दु सम वदन तिहारो, कोमल अंग ललित अति भोरी ॥ तोहि देखि कब छोड़ैगो रसिया, बैठि भवन हठ जिन करि गोरी ॥ डोलत डगर लियें पिचकारी, फेंट अबीर गुलाल की झोरी ॥ नारायण होरी को मिस करि, मोहन लाल करत चित चोरी ॥ २ ॥

पनिहारी वचन ।

वार्तिक ।

अरी सखी ! मैं यमुना जल भरिवे जाऊंगी ॥ २ ॥

पुनि सखी वचन पनिहारिन प्रति ।

राग झंझोटी ।

आज श्याम मग धूम मचाई, धूम मचाई करत ढिठाई ॥ आस्ताई॥बिन रँग डारैं देत नहिं निकसन, मैं तेरी सों देखिके आई ॥ तू कहुँ भूलिके मति उत जेयो, जाने कहा वह करै लँगराई ॥ नारायण होरी के दिनन में, अपनेहि हाथ है अपनी बडाई ॥ ४ ॥

पनिहारिन वचन सखी प्रति ।

वार्तिक ।

अरी बीर ! तूतौ सांची कहै, पर कहा करूं मेरे घर में पानी की एक बूंदहु नांय ॥ ५ ॥

पुनि सखी वचन ।

कान्हडा ।

आज हरि डगर मचाई धूम ॥ आस्ताई ॥ जो ब्रज नारि गईं जल भरिवे, बीचहिते आई घूम ॥ तू सुंदरि नवयौवन भोरी, गजगति चलति है झूम॥नारायण जो तू बचि आवे, लेउँ तेरे पग चूम ॥ ६ ॥

समाजी वचन ।

दोहा—एक नहीं मानी कहीं, गई हठीली बाल ।
अचक आयके गैल में, घेरि लई गोपाल ॥ ७ ॥

सखी वचन ।

राग काफी ।

मति मारौ पिचकारी श्याम अब देउंगी मैं गारी॥आस्ताई॥ भीजैगी लाल नई मेरी अँगिया चूंदरि बिगरैगी न्यारी॥ देखैगी सासु रिसायगी मोपै, सँगकी ऐसी हैं दारी

हँसेगी दै दै तारी ॥ घाट बाट सब सों अटकत हौ, लै लै रारि उधारी ॥ कहांलों तेरी कुचाल कहूं मैं एक एक ब्रजनारी जानति करतूति तिहारी ॥ मूठी अबीर न डारौ दृगन में दूखेंगी आंखि हमारी । नारायण न बहुत इतरावौ, छाँडौ डगर गिरधारी नये भये तुमही खिलारी ॥ ८ ॥

समाजी वचन ।

दोहा—सराबोर करि रंगमें, बोले यदुकुलभान ।
जा लिवायला तू उन्हें, जिनको तोहि गुमान ॥ ९ ॥

वार्तिक ।

फिरि आप सखी भेष धारण करिके मारगमें आयके ठाढ़े ह्वैरहे और उतमें वा सखी ने अपनी सखीन सों जाय कही ॥ १० ॥

राग काफी ।

सखी री या ब्रज में अब कैसे बसें, अनरीति न जाय सही ॥ आस्ताई ॥ गैल चलत वा छैल नंदके बैयां आय गही ॥ मुख गुलाल मलि रंग भिजोई, सौ सौ बात कही ॥ नारायण मग लोग हँसे सब, आज न लाज रही ॥ ११ ॥

समाजी वचन ।

दोहा—समाचार सुनि सखी मुख, नवयौवन ब्रजबाल ।
होरी खेलनको चलीं, लै लै रंग गुलाल ॥ १२ ॥
दोहा—जब इनसों भइ भेट मग, बोले छलिया श्याम ।
यहकुचालिकरिनन्दसुत, भाजिगयोनिजधाम ॥ १३ ॥

वार्तिक ।

यह सुनिके सब सखी आपस में कहिबे लगीं देखो री या विचारी के नये चीर रंगसों कैसे बिगार गयो है ॥ १४ ॥

पुनि साँवरी वचन ।

राग कान्हडा ।

सब जुरि मिलिके चलो आली ॥ आस्ताई ॥ या बिरियां निज भवन होयगो, वह लंगर वनमाली ॥ हम तुम बस्यो चहें या व्रजमें, कबलों सहे कुचाली ॥ नारायण वा नन्दलाल को, आज बनावो लाली ॥ १५ ॥

समाजी वचन ।

दोहा—हो हो होरी कहत मग, सहित साँवरी नार ।
जाकर घेरचो सबनने, नन्दराय को द्वार ॥ १६ ॥

होरी काफी ।

होरी हो व्रजराज दुलारे ॥ आस्ताई ॥ अब क्यों जाय छिपे जननी ढिग, रे द्वै वापनवारे ॥ के तौ निकसिके होरी खेलौ, कै मुखसों कहौ हारे, जोर कर आगे हमारे ॥ बहुत दिनन सों तुम मन मोहन, फागहि फाग पुकारे ॥ आज देखियो सैल फाग की, पिचकारिन के फुहारे, चलें जब कुमकुमा न्यारे ॥ निपट अनीति उठाई तुमने, रोकत गैल गिरारे ॥ नारायण सब खबरि परैगी, नेक तो आयके द्वारे, सुरति अपनी तू दिखारे ॥ १७ ॥

यशोदा वचन सखी प्रति ।

दोहा—अबलों घर आयो नहीं, मेरो मोहनलाल ।
इत उत खेलत होयगो, संग साथ लै ग्वाल ॥ १८ ॥

सखी वचन साँवरी प्रति ।

दोहा—फिरि आवेगी हे सखी, होरी खेलन काज ।
बदलौ लैंगी आपनो, छैल छलीसों आज ॥ १९ ॥

साँवरी वचन ।

राग काफी ।

यासों बिन होरी खेलें न जाऊँगी सखी, मेरी चूँदरि की करी कैसी कुगति ॥ आस्ताई ॥ जौलों मैं अपनो न बदलो चुकाऊं, तोलों कबू अन जल नहिं पाऊं, ऐसो छैलकूं नाच नचाऊं, देखें तमासो सगरो जगत ॥ मटकि मटकि नट कटि लचकावै, कबहुँ दृगन के भाव बतावै, ताहू पै अति मृदु मुसिक्यावै, याही भांति सबही कूं ठगत ॥ जो इतसों इतमें ऊगै भानू, तोउ याकी पगिया रंग सानू, नारायण अब मैं क्यों मानू, मेरो कछू यह बाप लगत ॥ २० ॥

सखी वचन ।

दोहा—चलि बैठो मग रोकिकै, आवत होइगो लाल ।
सखा सहित पुनि घेरिके, डारौ रंग गुलाल ॥ २१ ॥

वार्त्तिक ।

साँवरी बोली यह बात मैं मानी, फिरि गैल में आयके सखीनसों कहिबे लगी, अरी ! तिहारे पास रंग गुलाल तौ थोरोसो दीखै जो कदापि वाके संग अधिक भीर भई तब कैसी करौगी, जब सखीनने कही जैसे तू कहैगी ॥ २२ ॥

साँवरी वचन ।

दोहा—तुम निज निज दृग मूंदिके, बैठो सब ब्रजबाल ।
तनक देर में होयगो, दूनों रंग गुलाल ॥ २३ ॥

सखी वचन परस्पर ।

सोरठा ।

हँसी सकल ब्रजबाल, अब यह दृग मुँदवायके ।
रंग अबीर गुलाल, लावैगी कहुँ अन्त सों ॥ २४ ॥

दोहा—या विधि निज मन समझि के, मुँदै नैन विशाल।
तुरत श्यामने सबन पै, डारचो रंग गुलाल ॥ २५ ॥

समाजी वचन।

दोहा—होरी हो भाभी कहत, हँसे लाल गोपाल ॥
देखि कपट अचरज भई, नवगोरी ब्रजलाल ॥ २६ ॥
यह लीला ब्रजचन्दकी, रसिक जनन के प्रान।
नारायण याके सुने, सदा होय कल्यान ॥ २७ ॥

इति श्रीनारायणस्वामीजीकृत छद्महोरीलीला सम्पूर्ण ॥ २९ ॥

अथ प्रेमपरीक्षालीलाप्रारम्भ।

वार्तिक।

प्रात समय श्री लाडिलीजी सहज सुभाव निज भवन द्वार पै आयके ठाडी भईं, तब एक खञ्जन को देखिके वाके नेत्रन की बडाई करिबे लगीं, पासतें सखी बोली हे प्यारी! याके नेत्रकी चपलता तौ ब्रजचन्दके नेत्रनकी छटाहू नायँ?॥

राग कान्हड़ा।

ब्रजचन्द के ऐसे नैन ॥ आस्ताई ॥ अति छबि भरे नाग के छौना, तुरत डसें करि सैन ॥ इन सम साँवरि मन्त्र न होई जादू जन्त्र तन्त्र नहिं कोइ, एक दृष्टि में मन हरि लेवे, करि देवे बचैन॥ चितवनि में घायल करि डारें, इन पै कोटि बाण लै वारें, अति पैने तिरछे हिय कसके, श्वास न देवें लैन ॥ चंचल चपल मनोहर कारें, खञ्जन मीन लजावनहारे, नारायण सुन्दर मतवारे, अनियारे सुख दैन ॥ २ ॥

वार्त्तिक।

तब श्रीजीने बूझी अरी सखी! सांची कहौ, फिर सखीने कही ॥ ३ ॥

राग मलार ।

मनमोहन सम सुन्दर को है॥आस्ताई ॥ मैं अपने अनुमान कहूं अब, उन की पटतर और न सोहै ॥ चितवन चपल रूप उजियारो,जाको मुख नित चन्दहूं जोहै ॥नारायण जो एक दृष्टि में, सुर नर नाग सकल को मोहै ॥ ४ ॥

समाजी वचन ।

दोहा—सखी कहीं जब प्रियासों, या विधि शोभा लाल ।
तब सुनिके मोहित भई, नवल छबीली बाल ॥ ५ ॥

श्रीजी वचन सखी प्रति ।

जैजैवंती ।

आज सखी प्रीतम जो पाऊं, तौ अपने बड भाग मनाऊं ॥ आस्ताई ॥ साँवरी सूरति नयन विशाला, चन्दवदन गल मुतियन माला, रूप मनोहर चाल मराला, सुन्दरता पर बलिबलि जाऊं ॥ जो प्यारो इन गलियन आवै, मोविरहनि कू दरश दिखावै, बैठी निकट मृदु वचनसुनावै, मैं उनको हँसि कण्ठ लगाऊं ॥ नारायण जीवन गिरधारी, कब लैंगे सुधि आय हमारी, जब मोसों वो कहेंगे प्यारी, तब मैं फूली अंग न समाऊं ॥ ६ ॥

दोहा—यह वृत्तान्त सुनि लालसों, कह्यो सखी तब जाय ।
प्रीतमतो निरखे बिना, रही कुमरि मुरझाय ॥ ७ ॥

सोरठा ।

सुनत सखीके बैन, हिय हरषे सुन्दर वदन ।
प्रेमपरीक्षा लन, चले तुरत तिय भेष धरि ॥ ८ ॥

साँवरी वचन प्रियाजी प्रति ।

राग जैजैवंती ।

आज अकेली भवन द्वार पै कौन काज ठाढी सुकुमारी॥ आस्ताई ॥ के काहू की बाट निहारत के कितहूं चलिबे की

त्यारी ॥ मुख उदास कछु देखि तिहारो मोहि उपजी चिन्ता अति भारी ॥ नारायण अब नेक बतावो मैं तिहारी जाऊं बलिहारी ॥ ९ ॥

प्रियाजी वचन।

वार्तिक।

हे सखी! जबसों मैंने श्रीलालजीकी शोभा सुनीहै तबसों बिना देखे कल नहीं परै. साँवरी बोली हे प्यारी! वह तिहारी कहा बरोबरी करैगो; गुणनमें मंगता और चोर रंग में कारो, तब आप रिस ह्वैके बोली, अरी! तू मुँह सम्हार के बोल, मैं उनके एक एक अंग की शोभा सुनिके चकितहूँ १०॥

दोहा–मैं उनकी पटतर कहां, वह तो शोभाधाम।
अंग अंग लखि लाल को, लाजत कोटिक काम ११

समाजी वचन।

दोहा–मगन भये श्रीलालजी, लखि प्यारी को नेह।
परुष वचन बोले प्रकट, भूलिगई सुधि देह ॥ १२ ॥

लालजी वचन प्रियाजी प्रति।

सोरठा।

बिधिना चतुर सुजान, रचतो वदन अनूप अति।
रचो कछुक सामान, तासों मोतन निर्मयो ॥ १३ ॥

समाजी वचन।

दोहा–जानि गई तब लाडिली, है यह नन्दकुमार।
सहित सखी हँसिबे लगी, प्रीतम भेष निहार॥ १४॥

प्रियाजी वचन।

जैजैवंती।

आवो सखी मिलि मंगल गावो, मेरे पधारे कुँवरकन्हाई ॥ आस्ताई ॥ मोसम आज कौन बड भागिनि, घर बैठे

ऐसी निधि पाई ॥ सुन्दर वदन मदन मनमोहन, मधुर मधुर बोलन सुखदाई ॥ नारायण इनके दरशनसों, मुरझी बेलि हरी ह्वै आई ॥ १५ ॥

वार्तिक।

तापीछे श्रीलालजीने जब नागरी भेष बढायके निज स्वरूप प्रगट कियो वाही समय मधुमंगल सुखाहू ढूँढतो आयगयो ॥ १६ ॥

मधुमंगल वचन।

सारंग।

लाल तोहि जननी हेर रही ॥ आस्ताई ॥ चन्दपौर पै नाम तिहारो, लै ल टेर रही ॥ जेंवन काज बुलावत तुमको, सांची बात यही ॥ नारायण या विधि मधुमंगल, हरिसों आय कही ॥ १७ ॥

वार्तिक।

तब प्रियाजीने कही हे प्यारे! अब मैं बिना जिमाये, आपको कैसे जायबे देऊंगी? याते सखा को बिदा करो; अरु आप हमारे संग विराजके रसोई आरोगो ॥ १८ ॥

राग सारङ्ग।

जेंवन दोऊ मिलि रूपनिधान ॥आस्ताई॥ षटरस भोजन रुचिर बनाये,ललिता परम सुजान॥हँसि हँसि बूझत प्रियासों प्रीतम, सुनो भानुकुल भान ॥ या व्यञ्जन को नाम कहा है, कीजै आप बखान ॥ कबहुँ ग्रास मुख देत परस्पर, करत मधुर मुसिक्यान ॥ नारायण छबि निरखत सजनी, भाग्य बडे निज मान ॥ १९ ॥

राग सारङ्ग ।

अचवन करि बैठे दोउ चन्द ॥ आस्ताई ॥ पान चबावत मृदु मुसिक्यावत, गौर श्याम सुखकन्द ॥ ललिता ललितहि सेज बिछाई, हियमें परम अनन्द॥नारायण मन भ्रमर लुभानो, चरणकमल मकरन्द ॥ २० ॥

लालजी वचन श्रीजी प्रति ।

राग मलार ।

प्यारी नित ऐसेही तुमें निहारूं ॥ आस्ताई ॥ तृण तोरूं या चन्दबदन पै, राई नोन उतारूं ॥ निजकर करूं शृंगार तिहारो, मुख पै भ्रमर बिडारूं ॥ नारायण जब तुम कछु गावो, मैं ढिग साज सँवारूं ॥ २१ ॥

वार्तिक ।

श्री लालजीने कही हे प्राणप्यारी ! आपके गायबे की प्रशंसा तौ बहुत सुनी है, परन्तु निज श्रवणन सों कभी गानों नहीं सुन्यो. तब श्री प्रियाजी प्रीतम की रुचि जानके प्रसन्न ह्वैके गायबे लगीं ॥ २२ ॥

कान्हड़ा झपताला ।

आज ब्रजराजकी देख शोभा नई, गई तन भूलि सुधि भई हूं बावरी ॥ आस्ताई ॥ अधर रङ्ग पान मुसिक्यान जादू भरी, ताहू पै चित हरन दृगनके भाव री ॥ कुण्डलनकी हलन छलन मनःमदनकी. चलत गज चाल बसि करन के चाव री ॥ निरखिके रूप नारायण हरष्यो हियौ, कौनसे भागि सों लग्यो है दाँव री ॥ २३ ॥

वार्तिक ।

श्रीलालजीने बहुत बडाई करी, तापीछे सखीन ने आरती करिके, परदा छोड़ि दियो ॥ २४ ॥

दोहा–श्रीराधा गोपालकी, लीला परम विशाल ॥
नारायण गावै सुनै, परै न यमके जाल ॥ २९ ॥

इति श्रीनारायणस्वामीजीकृत प्रेमपरीक्षालीला सम्पूर्णा ॥ १९ ॥

अथ श्रीरासपञ्चाध्यायीलीलाप्रारंभ ।

समाजी वचन ।

अरिल्ल ।

शरद रैन सुखदैन, मैन मन मोहन हारी ॥ नारायण चहुँ ओर, परम सुन्दर उजियारी ॥ १ ॥ शीतल मन्द सुगन्ध चलत अति पवन त्रिविध बर ॥ फूलिरही बनराय निरख भये मुदित हिये हर ॥ २ ॥ बंशीबट पै जाय श्यामसुंदर मनभावन ॥ बंशी में लै नाम लगे ब्रजबाम बुलावन ॥ ३ ॥ १ ॥

राग मलार ।

बंशी श्रवन सुनि गोपकुमारी ॥ आस्ताई ॥ अति आतुर ह्वै चलति श्याम पै, तन मन की सब सुरति बिसारी ॥ गलको हार पहरि निज कटि में, कटिकी किंकिनी गल में डारी ॥ पग पायक लै धारत करमें, करकी पहुँचिया पगन मँझारी ॥ कान बुलाक कपोल पै बेंदी, नाक में पहिरी कान की बारी ॥ एक नैन अंजन बिन सोहैं, एक नयन में काजर धारी ॥ कोउ भोजन पति परसत दौरी, कोउ जेंवत कर ग्रास सिधारी ॥ नारायण जो जैसे हुतीघर, तैसेही उठि विपिन पधारी ॥ २ ॥

विरहिनी वचन ।

कुण्डलिया ।

ज्यों भादों सरिता उमड़ि, चलति सिन्धुको धाय ॥ त्यों गोपी हरि के निकट, तुरतहि पहुँचीं जाय । तुरतहि पहुँचीं जाय तिन्हें हरि लखि हरषाने ॥ प्रेम परीक्षा लैन श्याम यों वचन बखाने ॥ तजि निज पति ऐसे समय, तुम आई यह विपिन क्यों ॥ नारायण सुधि तन नहीं, निपट बावरी फिरत ज्यों ॥ ३ ॥

लालजी वचन ।

दरबारी कान्हडा ।

या बिरियां तुम यहां क्यों आई ॥ आस्ताई ॥ अर्द्ध रैन अति सघन विपिन में, डोलत हैं वनमृग समुदाई ॥ कै ब्रज प्रबल भूप चढि आयो, कै तुमसों घर भई लराई ॥ कै कहुँ त्याग दई पतियन नें, कै बन बिरहन को उठि धाई ॥ जो तुम कहौ तुम्हारे दरशन, येहु हमें नहिं बात सुहाई ॥ नारायण निज निज गृह जावो, याही में कुलधर्म बड़ाई ॥ ४ ॥

समाजी वचन ।

दोहा–निठुर वचन सुनि श्यामके, ह्वै ब्रजबाल निरास ।
पग नखसों धरती लिखत, लै लै ठंढे श्वास ॥ ५ ॥

गोपिका वचन लालजी प्रति ।

छप्पय ।

जब बोली इक चतुर, सुनो तुम नंददुलारे ॥ श्रवण करत यह वचन, कढत हैं प्राण हमारे ॥ कढत हमारे प्राण,

दया करि इनको राखौ ॥ ऐसे वचन कठोर, लाल मति हमसों भाखौ ॥ अति व्याकुल घर बार तजि, हम आईं या बेरतब ॥ नारायण तुम नाम लै, वंशी में दई टेर जब ॥६॥

गोपिका वचन ।

राग परज ।

ऐसी न चहिये तुमें चितचोर ॥ आस्ताई ॥ नेक समझिके बात कहो तुम, नागर नन्दकिशोर ॥ प्रथम बुलाय लईं हम बनमें, करि मुरली की घोर ॥ अब हमसों कहौ जाओ भवन में, प्रीतम निपट कठोर ॥ तात मात पति भ्रात जगत में, जहाँ लग नाते ओर । अब उनसों कहा काज हमारो, हम आई तृण तोर ॥ कोटि भाँतिसों समझावो तुम, जितौ तुम्हारो जोर ॥ नारायण अब तुम्हें त्याग पग, परत न घरकी ओर ॥ ७ ॥

लालजी वचन ।

राग बिहाग ।

अब तुम मानो बात हमारी ॥ आस्ताई ॥ घर में जाय करो पति सेवा, परखत हैहैं बाट तिहारी ॥ सोइ पतिव्रत वेद विदित है, सुनि लीजै नवगोपकुमारी ॥ नारायण अपने भर्ता बिन, सकल जगतको जाने नारी ॥ ८ ॥

गोपिका वचन ।

राग देश ।

प्रीतम अब यह प्राण बचावौ ॥ आस्ताई ॥ हम दासिन को बेर बेर जिन, वचन कठोर सुनावौ ॥ हमें निराश न करौ

प्राणपति, हँसिकर कंठ लगावौ ॥ नारायण कर कमल फेरि उर, मन भवताप मिटावौ ॥ ९ ॥

लालजी वचन।

दोहा—हम तुमसों हितकी कहैं, सुनो सकल ब्रजबाम।
अब इतनो हठ जिन करो, जावो अपने धाम ॥ १० ॥

गोपिका वचन।

दोहा—प्राणनाथ या जगत में, सो अभागिनी नार।
तुम्हैं त्याग पुनि चहै जो, सुख कुटुम्ब परिवार ११॥

राग जङ्गला।

प्रीतम जाओ जाओ मति भाखो ॥ आस्ताई ॥ यह जो नेम धर्म की पोथी, बांधि निकट धरि राखो ॥ कहो का हुसों अमी त्यागिके, तुम अरिण्ड फल चाखो ॥ नारायण वह कब मानत है, लोभ दिखावो लाखो ॥ १२ ॥

लालजी वचन।

वार्तिक।

हे गोपियो ! या समय हमारे पास तिहारो आयबे को कछू प्रयोजन नहीं ॥ १३ ॥

गोपिका वचन।

राग देश सोरठ।

प्रीतम ऐसे निठुर जिन बोलो ॥ आस्ताई ॥ श्रवण करायके चवन सुधासम, अब कहा विषरस घोलौ ॥ तजि परिवार शरण लई तुमरी, नेकतौ मनमें तोलौ ॥ नारायण तजि प्रीति डगरकूं, क्यों अनीति मग डोलौ ॥ १४ ॥

लालजी वचन।

राग मलार।

जो तिय अपनो धर्म नसासत ॥ आस्ताई॥ ताहि न कोऊ भलो कहै जग में, उभय लोक में अपशय पावत ॥ नहिं शुभगति न मिलै सुख सम्पति, योंहीं वृथा वह जनम गँवावत ॥ नारायण ऐसी मनमुखिया, निजकुल माहिं कलङ्क लगावत ॥ १५ ॥

गोपिका वचन।

राग शहानो।

वेद विरुद्ध कहा हम कीनों ॥ आस्ताई ॥ जामनसों कीजै पति सेवा, सो मन तो तुमने हरि लीनो ॥ जो तुम फल सब नेम धर्म को, ता तुमरे चरणन चित दीनों ॥ नारायण जो सार निगम करि, सो हमने तुमहीं को चीनों॥ १६॥

लालजी वचन।

राग जैजैवन्ती।

नारी को निज पतिही देवा ॥ आस्ताई ॥ मूरख वृद्ध रंक अति रोगी, ताही की कीजै रुचि सेवा॥ सुपनेहू परपुरुष न ध्यावै, मनमें धर्म विचारै। तनक विषैरस भोग कारनै, परमारथ न बिगारै ॥ तासों तुम अपने गृह जावो, करो जो वेद बखाने ॥ नारायण नहिं झूँठ कहैं हम, धर्म भलीविधि जाने ॥ १७ ॥

गोपिका वचन।

राग जैजैवन्ती।

हम बन आयके धर्म कमायो॥आस्ताई॥सों पति तो झूँठे या जगमें, साँचो पति तुमहीं कूं पायो॥ प्राण जाओ पै भवन

न जैहैं, यह जिय माहिं समायो ॥ नारायण ऐसो को मूरख, मणिको पाय पुनि चहत गिरायो ॥ १८ ॥

सखी वचन सखी प्रति ।

दोहा–देखि सखी निदईपन; अजहूँ तजत नहिं श्याम ।
पहले हमें बुलायके, अब कहें जावो धाम ॥ १९ ॥

सखी वचन ।

दोहा–सुनो लाल ऐसे वचन, फिर जिन करो बखान ।
नतु सगरी ब्रजगोपीका, अबहिं तजेंगी प्रान ॥२० ॥

समाजी वचन ।

दोहा–जब जानी निज हियेमें, अतिव्याकुल ब्रजवाम ।
हँसि बोले तब प्रेमवश, परमकौतुकी श्याम ॥ २१ ॥

लालजी वचन ।

राग मलार ।

यह बात बडे अचरज की भई॥ आस्ताई ॥ हमतौ सहज सुभाव कही हँसि, तुम साँची जिय मान लई ॥ आओ गोपियो रास करें अब, शरद रैन अति मोदमई ॥ नारायण तातत्थेई कहि, लैन लगे गति श्याम नई ॥ २२ ॥

समाजी वचन ।

दोहा–सुनतवचनअतिहरषमन, निरततमिलिब्रजबाल ।
उभय उभय नवगोपिका, बीच बीच नँदलाल॥२३॥

नाईकी कान्हडा ।

आज रचो रस रास विहारी ॥ आस्ताई ॥ जे सोई वृन्दा विपिन सुहावन, तैसहि शरद रैन उजियारी ॥ यमुना तीर पुलिन की शोभा, फूलि रही चहुँदिशि फुलवारी ॥ चलत

पवन मन्द मोद बढावन, शीतल मन्द सुगन्धित प्यारी ॥ निरतत लाल सहित ब्रजबाला, चपल चतुर लै लै न्यारी ॥ बजत अनेक भाँति मृदु बाजे, परम प्रवीन बजावनवारी ॥ कोऊ सखी सुर दुगुन अलापत, करत बडाई लाल गिरिधारी॥ नाचत सुमन झरत हैं शीसतें, मुख श्रम बिन्दु देत छबि न्यारी ॥ कबहूँ श्याम बिलग ह्वै नाचत, ताल देत मिलि गोपकुमारी ॥ नारायण नभते सुर निरखत, बरषत फूल सहित निज नारी ॥ २४ ॥

राग भैरों ।

वंशीवट यमुनातट निरतत बनवारी ॥ आस्ताई ॥ अति सुगन्ध मन्द मन्द पवन चलत प्यारी ॥ चन्द्र वदन श्याम रसिक, मुकुटचंद शीश लसत, चन्द्र मुखी प्रिया शरद चांदकी उजारी॥बाजे बाजत विशाल गति मति सुर अधिक ताल, राग रंग विविध भांति नूपुर धुनि न्यारी ॥ नारायण शिव सुजानगोपिका को भेष ठान, निरखि निरखि नृत्य गान, भये चित्रकारी ॥ २५ ॥

दोहा—प्रिय प्रीतमके गुण ललित, निगमागम को सार ।
नारायण गावै सुने, निश्चय हो भवपार ॥ २६ ॥

इति श्रीनारायणस्वामीजी कृत रासपंचाध्यायीलीला सम्पूर्णा॥ ३०॥

अथ सखीअनुरागलीलाप्रारंभ ।

सखी वचन सखी प्रति ।

राग जोगिया ।

निशि सोवत मैं अँगना में सखी, हरि आयके द्वारपै टेर दई ॥ आस्ताई ॥ सुनि वचन मनोहर चौंक परी, दृग

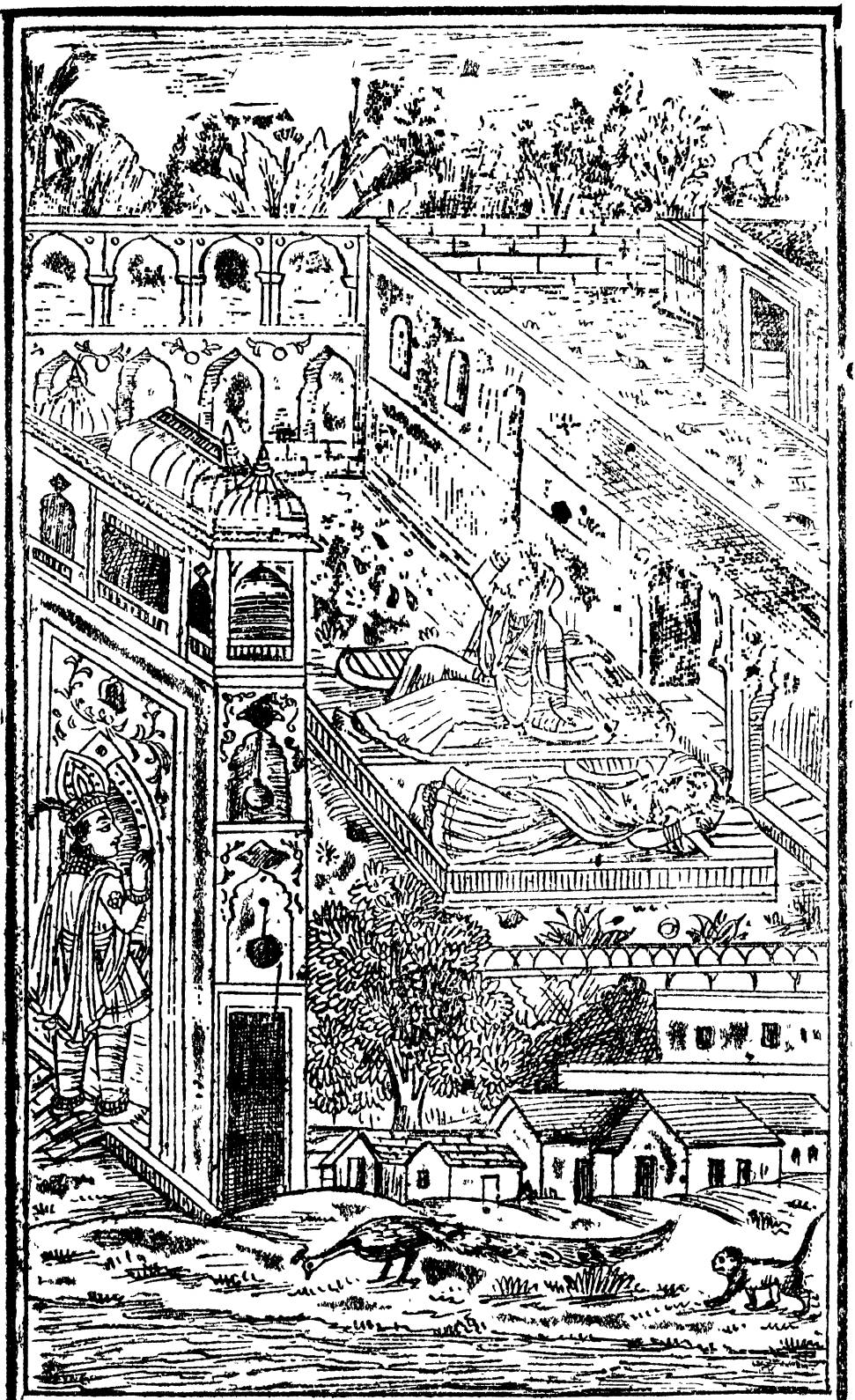

नींद नजाने कहां कूं गई ॥ निज सास के त्रास न बोल स की, उन अपने भवन की गैल लई ॥ निधि पाय के हाथसों जात रही, तबसों नारायण बिकल भई ॥ १ ॥

अनुरागवती वचन।

राग काफी।

अब वाकी चरचा जिन कर री ॥ आस्ताई ॥ जाकी टेर सुनत भई व्याकुल, रूप देखि त्यागैगी घर री ॥ यह हम जानि चुकीं अपने मन, गयो लाज को खेल बिखर री ॥ नारायण जहाँ प्रगट भयो है, मोहनि मूरति नन्दकुमर री २॥

अनुरागवती वचन।

काफी धीमाताल।

या साँवरे सों मैं प्रीति लगाई ॥ आस्ताई ॥ कुल कलङ्कते नाहिं डरूंमी, अबतौ करूं अपने मन भाई ॥ बीच बजार पुकार कहूं मैं, चाहे करौ तुम कोटि बुराई ॥ लाज मर्याद मिली औरनकूं, मृदु मुसिक्यान मेरे बट आई ॥ बिन देखे मनमोहन को मुख, मोहि लागत त्रिभुवन दुखदाई ॥ नारायण तिनकूं सब फीको, जिन चाखी यह रूप मिठाई ॥ ३ ॥

दोहा—ताही छिन वा ठौर पै, आय गये ब्रजचन्द।
निरखि सखी के हियेमें, भयो परम आनन्द ॥ ४ ॥

इति श्रीनारायणस्वामीजीकृत सखीअनुरागलीला सम्पूर्णा ॥ ३१ ॥

अथ साँझीलीलाप्रारंभ।

प्रियाजी वचन सखीन प्रति ।

दोहा–हे ललिते चंपकलते, चलौ विपिनमें आज ।
फूल बीन लावें सखी, निज साँझीके काज ॥ १ ॥

वार्तिक ।

सखी बोलीं जो आज्ञा–फिर वनमें जाय फूल बीनने लगीं ॥ २ ॥

समाजी वचन ।

दोहा–ये सुधि पाय गये तहां, मोहन गुनन प्रवीन ।
सखिनसहित श्रीलाडिली, सुमन रहीं जहँ बीन॥ ३॥

लालजी वचन ।

आसावरी ।

फूल यहां को बीतत है चोरी ॥ आस्ताई ॥ करत प्रकाश फिरत या वनमें, गजगामिनि तनगोरी ॥ हिये माहिं छल बल चतुराई,देखत में अति भोरी ॥ नारायण या ठौर काहुकी चलत नहीं बरजोरी ॥ ४ ॥

प्रियाजी वचन लालजी प्रति।

राग भैरवी ।

फूल हम बीनति बिपिन हमारो ॥ आस्ताई ॥ तुम ऐसे बोलत कोउ जाने, मानो बन है तिहारो ॥ हटौ वृथा क्यों रारि बढावो, सूधे भवन पधारो ॥ नारायण मन के लड्डुवन सों, भूँख न होय सहारो ॥ ५ ॥

लालजी वचन प्रियाजी प्रति ।

दोहा—सुनत लली मुखके वचन, बिहँसे नदकुमार ।
बोले अजी हम बीनदें, फूल अनेक प्रकार ॥ ६ ॥

वार्त्तिक ।

प्रियाजी बोलीं बस तुम्हारी कृपा ही चाहिये, ऐसे कह हँसती खेलती हुई निज भवन में आय के साँझी की रचना में तत्पर हुई, उतमें श्रीलालजी को और जहां तहां सखियनको सांझी निरखवे को न्योतो पठवायो, जब श्रीलालजीने आयके सांझी निहारी, तब अति प्रसन्न ह्वै के, प्रियाजीकी चतुराई की बडाई करवे लगे ॥ ७ ॥

सखी वचन ।

यमन कल्याण ।

आज प्रियाजू ने सांझी बनाई ॥ आस्ताई ॥ निज कर कमल रची यह रचना, को बरने इनकी सुघराई ॥ कहुँ गिरिराज कहूँ बरसानों, कहुँ वृन्दावन छबि अधिकाई ॥ कहुँ यमुना तट घाट मनोहर, विविध कुंजवर गाखे सुहाई ॥ कहुँ द्रुमलता कहूँ फुलवारी, बरनबरन खग मृग समुदाई ॥ नारायण लखि प्रीतमप्यारो, पुनि पुनि हरषत करत बडाई ॥ ८ ॥

दोहा—विविध कथा गोपाल की, नारायण सुख रास ।
गति पावें सुन भक्तजन, दुष्ट करें उपहास ॥ ९ ॥

इति श्रीनारायणस्वामीजीकृत सांझीलीला सम्पूर्ण ॥ ३२ ॥

अथ फुटकर पद प्रारंभ ।

राग धनाश्री ।

रथपर राजत दोऊ महाराज ॥ आस्ताई ॥ मणि मय कलश पताका सोहैं, सुन्दर चारों बाज ॥ अद्भुत छत परदा पिछवाई

रतनको सब साज ॥ नारायण सजनी ढ़िग गावत, धन्य दिवस है आज ॥ १ ॥

कालिंगडा ।

मोहन दीजै हमारे चीर ॥ आस्ताई ॥ हम कबसों कांपत हैं ठाढी, शीतल यमुना नीर॥बिना वसन अति लाज लगत है, किहि विधि निकसें तीर ॥ नारायण तुम कैसे पुरुष हो, निरखत नगिन शरीर ॥ २ ॥

फुटकर-दोहा ।

नारायण संझा समय, चढी अटा ब्रजनार ।
कृष्ण पाख शशिको उदय, यह अचरज करतार॥३॥

होरी कूट ।

एरी उठि देखि सखी होरी मच रही तेरे द्वार ॥ आस्ताई ॥

चन्द्रमा मृग गज चाल कंवल

दधिसुत वाहन दृग, करि गामिनि, सरसुत सों मुखसार ॥

बलदेव श्रीकृष्ण भीर गुरु

वीर अनुज टेरत हैं तोको, डर लिये साथ अपार ॥ गुरुको

लाल शेर मांस

आदि लाल पद पूरण, ले प्रीतम मुख डार ॥ हरि भोजन

ग्यारह सोना

नवदोयपै आवै, ताहुम दिन गये चार ॥ नारायण हाटक

श्याम

तजि सजनी, भ्रमरको रङ्ग निहार ॥ ४ ॥

होरी कूट ।

कल होरी गये हार श्याम आज फिर तुम आये ॥ आस्ताई॥

अक्रूर कंस देवकी वसुदेव नन्द यशोदा

सुफलकसुत स्वामी भगिनी पति, मीत की नारि पठाये ॥

मेघनाद मन्दोदरि रावण राम रंगजी

मेघशब्द जननी पति रिपु कुलदेव नाम संग लाये ॥

नृसिंह हिरण्य होरी कमल
नरकेहारि रिपु की भगिनी को, नाम लेत न लजाये॥ सरसुत
सूर्य राहु केतु चन्द्रमा गौ
मित्र शत्रु भ्राता अरी, सो मुख पान चबाये॥ नारायण सुरभी
कुल
कुल अस्थल, क्यों अब चहत हँसाये ॥ ५ ॥

राग जोगिया ।

आज सखीसुपनों मैं देख्यो रैन॥ आस्ताई ॥ जबही सों जियभईअतिव्याकुल,पल छिन परत न चैन॥ श्यामवरण इक पुरुषमनोहर, नवयौवन छबि ऐन ॥ शीश मुकुट कुंडल गल माला,सुंदर बाँकेनैन॥मैं उनसों कछु कहन न पाई, सुनेनउनके बैन ॥ नारायण तब आँख उघर गई, ना कछु लैन न दैन॥६॥

राग सारङ्ग ।

करौ तुम गोवरधनकी पूजा ॥ आस्ताई ॥ मूँग भात को परवत रचिके, बीच लगावौ गूँजा ॥बोले लाल नन्दसोंबाबा, प्रथम पूजिबे तूजा ॥ नारायण ऐसो त्रिभुवन में, देव नहीं है दूजा ॥ ७ ॥

गजल ।

जहां व्रजराज कल पाये, चलौ सखी आज वा बनमें ॥ बिना वा रूप के देखें, विरह की दों लगी तन में ॥ न कल परती है बेकलको, न जी लगता है बिन जानी ॥ भई फिरती हूं जोगन सी, सरे बाजार गलियनमें ॥ करूं कुरबान जी उस पर, जनमभर गुन न भूलूँगी ॥ मेरा महबूब जो लाके,बिठावे मेरे आँगना में ॥ नहीं कछु गरज दुनियासे, न मतलब लाज सों मेरा ॥ जो चाहो सो कहो कोई, बसा अबतौ वही मनमें ॥ तेरी यह बात सांची है, नहीं शक इसमें नारायण ॥ जो सूरत का है मस्ताना, वह परचे कैसे बातन में ॥ ८ ॥

गजल ।

किया बिसमिल मुझे उसकी, अदां के हाथ क्या आया ॥ तडफता छोडकर तेगे, कजाके हाथ क्या आया ॥ दिखा कर टुक जमाल अपना, मुझे तो करदिया शैदा ॥ भला पूछे कोई उस, महिलका के हाथ क्या आया ॥ मेरे इस गुंचये दिलको, कभी उसने न आ खोला ॥ गई बालाईवाला, उस सबा के हाथ क्या आया ॥ लगाना खून दिल चाहा, था मैंने उसके पाऊँसे ॥ वले इस पेशकदमीसे, हिना के हाथ क्या आया ॥ फिरा शहरों वियाबाँ, तालि बे दीदार नारायण ॥ बिठाया उसको परदेमें, हयाके हाथ क्या आया ॥९॥

राग सारङ्ग ।

फूलन के बँगले में राजैं पिया प्यारी हो ॥ आस्ताई ॥ फूलनके भूषण बिचित्र सोहैं अंग अंग, फूलनके वसन वदन छबि न्यारी हो॥फूल से मुखारविन्द वचन फूलनसम, फूलि सखी तन मन शोभा लखि भारी हो ॥ जैसोही समाज साज आज नारायण, मानों कुंजभवनमें फूली फुलवारी हो॥१०॥

राग शहानो ।

करत आरती नवब्रजनारी ॥ आस्ताई ॥ अगर कपूर सुगंधित बूका, विविध भाँतिकी सोंझ सँवारी ॥ घंटा झालर शंख नृसिंहा, विजैघंट धुनि परम सुखारी ॥ बंशी बीन मृदंग तँबूरा, सहनाई बाजत है न्यारी ॥ बर्षत फूल गगन सों सुरगण, देववधू नाचत दै तारी॥हर्षत सखी करत नौछावर, नारायण होवै बलिहारी ॥ ११ ॥

इति श्रीब्रजविहार श्रीवृन्दावन निवासी श्रीनारायण स्वामीजी कृत सम्पूर्ण ॥ ३३ ॥

॥ श्रीः ॥

श्रीयुतमहाराजमुकुन्दस्वामीजीके चरणकमलेभ्यो.

श्रीवृन्दावननिवासीपरमानुरागी-

श्रीनारायणस्वामीजी कृत-

श्रीअनुरागरस ।

दोहा—प्रगट भये पंजाब में, सारस्वत द्विज वंश ।
संन्यासी ब्रजरसगमन, सारग्रहण जिमि हंस ॥

जिसमें श्रीकृष्णचंद आनन्दकन्द श्रीब्रजचन्द पूर्णब्रह्मकी
विचित्र लीला वर्णित है.

जिसको

रसिकजनोंके आनंदार्थ-

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बम्बइ

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-मुद्रणयन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रकाशित किया ।

संवत् १९७९, शक १८४४.

रजिस्टरीके सब हक्क यन्त्रालयाधिकारीने स्वाधीन रक्खे हैं।

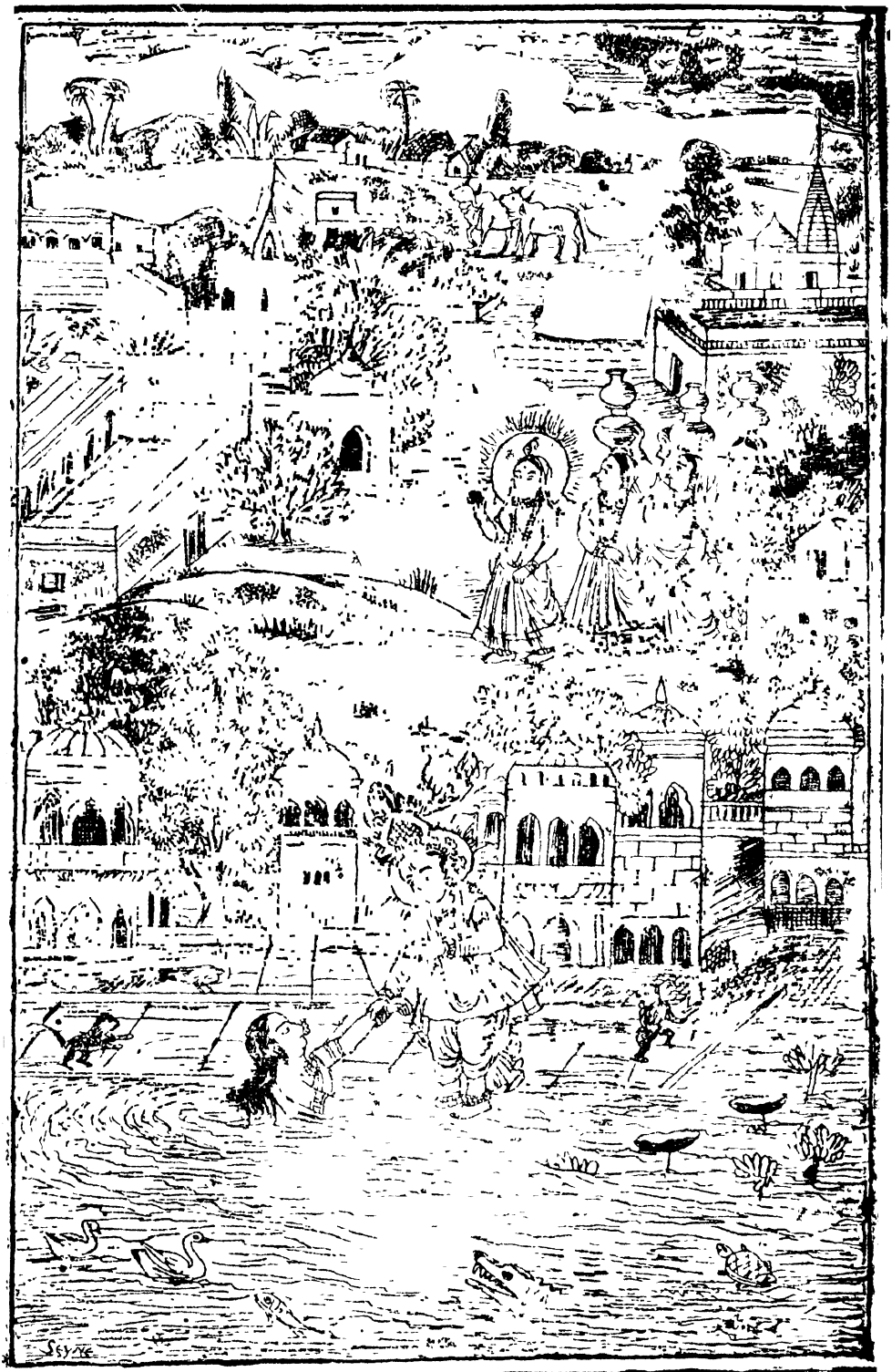

श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ।

श्रीनारायणस्वामीजीकृत-

अनुरागरस.

श्रीगुरु वन्दना ।

दोहा-श्रीगुरुचरण सरोजरज, वन्दौं बारम्बार ।
नारायण भवसिन्धु हित, जे नवका सुखसार ॥ १ ॥
कृपा करो मो दीन पै, हरौ तिमिर अज्ञान ।
नारायण अनुरागरस, निजमति करूं बखान ॥ २ ॥

श्रीराधागोपालवन्दना ।

श्रीराधा गोपाल पद, कर प्रणाम उरधार ।
नारायण अनुरागरस, कहूं बुद्धि अनुसार ॥ ३ ॥
दयासिन्धु अति सुखसदन, सदा रहो अनुकूल ।
नारायण जिन उरधरो, मो पामर की भूल ॥ ४ ॥

श्रीवृन्दावन वन्दना ।

धनि वृन्दावन धाम है, धनि वृन्दावन नाम ।
धनि वृन्दावन रसिक जन, सुमिरे राधे श्याम ॥ ५ ॥
वृन्दावन जे वास कर, शाक पात नित खायँ ।
तिनके भागिन को निरख, ब्रह्मादिक ललचायँ ॥ ६ ॥
हम न भये व्रज में प्रगट, यही रही मन आस ।
नितप्रति निरखत युगल छबि, कर वृन्दावनवास ॥ ७ ॥

नारायण व्रज भूमिकूं, सुरपति नावें माथ।
जहां आय गोपी भये, श्रीगोपेश्वर नाथ ॥ ८ ॥

चेतावनी पुनि गुणदोष लक्षण।

बहुत गई थोरी रही, नारायण अब चेत।
काल चिरैया चुग रही, निशिदिन आयू खेत ॥ ९ ॥
नारायण सुख भोग में, तू लम्पट दिन रैन।
अंतसमय आयो निकट, देख खोलके नैन ॥ १० ॥
धन यौवन यों जायगो, जा विधि उडत कपूर।
नारायण गोपाल भजि, क्यों चाटे जग धूर ॥ ११ ॥
रम्भक शुम्भ निशुम्भ अरु, त्रिपुर आदि लै शूर।
नारायण या कालने, किये सकल भट चूर ॥ १२ ॥
हिरण्याक्ष जगमें विदित, हिरण्यकशिपु बलवान।
नारायण क्षणमें भये, यह सब राख मसान ॥ १३ ॥
सगर नहूष ययाति षट, और अनेक महीप।
नारायण अब वह कहां, भुजबल जीते द्वीप ॥ १४ ॥
कुंभकरण दशकंठसे, नारायण रणधीर।
भये सकल भट काल वश, जिनके कुलिश शरीर १५
दुर्योधन जग में प्रगट, जरासन्ध शिशुपाल।
नारायण सो अब कहां, अभिमानी भूपाल ॥ १६ ॥
नारायण संसार में, भूपति भये अनेक।
मैं मेरी करते रहे, लै न गये तृण एक ॥ १७ ॥
भुजबल जीते लोक सब, निरभय सुख धनधाम।
नारायण तिन नृपन को, लिख्यो रहगयो नाम ॥ १८ ॥

हाथ जोरि ठाढो रह्यो, जिनके सनमुख काल ।
नारायण सोऊ बली, परे काल के गाल ॥ १९ ॥
नारायण नवखण्ड में, निरभय जिनको राज ।
ऐसे विदित महीप जग, ग्रसे काल महराज ॥ २०॥
गज तुरंग रथ सेन अति, निशि दिन जिनके द्वार ।
नारायण सो अब कहां, देखौ आंख पसार ॥ २१ ॥
नारायण निज हाथ पै, जे नर धरत सुमेर ।
सोऊ वीर या भूमि पै, भये राखके ढेर ॥ २२ ॥
जिनके सहजहिं पग धरत, रजसम होत पषान ।
नारायण तिनको कहूं, रह्यो न नाम निशान ॥२३॥
नारायण जिनके भवन, विधि सम भोग विलास ।
अन्त समय सब छाँडिके, भये कालके ग्रास॥२४॥
जिनको रूप निहारके, रवि शशि रथ ठहरात ।
नारायण ते स्वप्न सम, भये मनोहर गात ॥ २५ ॥
रे मन क्यों भटकत फिरत, भज श्रीनन्दकुमार ।
नारायण अबहू समझ, भयो न कछू बिगार ॥२६ ॥
नारायण तू भजन कर, कहा करेंगे कूर ।
स्तुति निन्दा जगत की, दोउनके शिर धूर ॥ २७ ॥
नारायण शुभकाज ते, या विधि आवै लाज ।
जो ऐसे अघ सों करे, फिर क्यों होय अकाज॥२८॥
चार दिननकी चांदनी, यह संपति संसार ।
नारायण हरि भजन करि, जासों होय उबार ॥२९॥
उर भीतर अति चाहना, बाहर राखत त्याग ।
नारायण वा त्याग पै, परो भारकी आग ॥ ३० ॥

मान बडाई ईरषा, मनमें भरीं अनेक ।
नारायण साधू बने,देखो अचरज एक ॥ ३१ ॥
तेरे भावें कछु करौ, भलो बुरौ संसार ।
नारायण तू बैठिके, अपनो भवन बुहार ॥ ३२ ॥
बात बनावै ज्ञानकी, भोगनको ललचात ।
नारायण कलिकालके, कौतुक कहे न जात ॥ ३३ ॥
नारायण सतसंग कर, सीख भजन की रीति ।
काम क्रोध मद लोभ में, गई आयुबल बीति॥३४॥
तनक बडाई पायके, मनमें अधिक गरूर ।
नारायण जिन बैठ मग, साहब को घर दूर ॥३५॥
यह शोभा संसारकी, ज्यों टेसूके फूल ।
नारायण फल आश तजि,ललित देख जिन भूल॥३६॥
धन विद्या गुण और बल, यह न बडप्पन देत ।
नारायण सोई बडो, जाको हरिसों हेत ॥ ३७ ॥
सो दुख भोगत आपही, जो दुख अपनी टांट ।
नारायण भवरोग को, को लेवैगो बांट ॥ ३८ ॥
निज स्वारथ के मित्र सब, यही जगत की चाल ।
नारायण बिन स्वारथी, हितू नंदको लाल ॥ ३९ ॥
तात मात त्रिय भ्रात सुत, और सकल परिवार ।
नारायण अपनो वही, जाको हरिसों प्यार ॥ ४० ॥
नारायण हरिभजन में, तू जिन देर लगाय ।
का जाने या देर में, श्वास रहै कै जाय ॥ ४१ ॥
नारायण बिन बोधके, पण्डित पशू समान ।
तासों अति मूरख भलो, जो सुमिरै भगवान ॥४२॥

ज्ञान कथा सीखी घनी, प्रश्न करत अति गूढ।
नारायण बिन धारणा, वृथा बकत है मूढ ॥ ४३ ॥
पुण्य पाठ पूजा प्रगट, करत सहित हंकार।
नारायण रीझे नहीं, चतुरनको सरदार ॥ ४४ ॥
नारायण जाकी विभौ, तन धन धरा निकेत।
तेहिं हित कौडी देत में, कर भरकर जल लेत ॥४५॥
भाव भक्ति सत्संग की, स्वप्नेहू नहिं सार।
नारायण समझे बडी, सुत दारा की लार ॥ ४६ ॥
पगसों नाव निहारके, पुनि गज होय अरूढ।
भोगनते तरिबो चहै, नारायण मति मूढ ॥ ४७ ॥
चटक मटक नित छैलबन, तकत चलत चहुँ ओर।
नारायण यह सुधि नहीं, आज मरैं कै भोर ॥४८॥
नारायण जब अंतमें, यम पकरेंगे बाँह।
तिनसों भी कहियो हमें, अभी सोफतो नाँह ॥ ४९ ॥
कोऊ नहींअपनो सगो, बिन राधा गोपाल।
नारायण तू वृथा मति, परै जगतके जाल ॥ ५० ॥
मन लाग्यो सुख भोग में, तरन चहै संसार।
नारायण कैसे बने, दिवस रैन को प्यार ॥ ५१ ॥
काम क्रोध मद लोभ की, लगी हिये में आग।
नारायण वैराग भट, सहित ज्ञान गए भाग ॥ ५२ ॥
विद्यावंत स्वरूप गुण, सुत दारा सुख भोग।
नारायण हरिभक्ति बिन, यह सबही हैं रोग ॥ ५३ ॥
नारायण निज हिये में, अपने दोष विचार।
तापीछे तू और के, औगुण भलें निहार ॥ ५४ ॥

संत सभा झांकी नहीं, कियो न हरिगुण गान ।
नारायण फिर कौन विधि, तू चाहत कल्याण॥५५॥
जिन संतनके दरश सों, नारायण अघ जात ।
तिनें कहत ये फिरत हैं, घर घर टुकडे खात ॥ ५६ ॥
बहु विधि पूजा दान व्रत, करत गरीबके साथ ।
नारायण बिन दीनता, द्रवैं न दीनानाथ ॥ ५७ ॥
नारायण मैं सत्य कहुँ, भुज उठायके आज ।
जो जियबने गरीब तू, मिलें गरीब निवाज ॥ ५८ ॥
विद्या पढ़कर तौ फिरै, औरन को अपमान
नारायण विद्या नहीं, ताहि अविद्या जान ॥ ५९ ॥
कथा सुनत गइ आयुबल, भयो न मन अनुराग ।
नारायण तिन श्रवणसों, भवन भले हैं नाग ॥ ६० ॥
कथनी कथ केते गये, कर्म उपासन ज्ञान ।
नारायण चारों जुगन, करनी है परमान ॥ ६१ ॥
भीतरसों मैलो हियो, बाहर रूप अनेक ।
नारायण तासों भलो, कौआ तन मन एक ॥ ६२॥
नारायण ऐसे घने, बके अनाप सनाप ।
दोष लगावें सन्त को, आप पापके बाप ॥ ६३ ॥
अपनो साखी आप तू, निज मनमाहिं विचार ।
नारायण जो खोट है, ताकूं तुरत निकार ॥ ६४ ॥
जिनको मन निज वश भयो, तजकर विषै विलास ।
नारायण ते घर रहो, चाहें करो वनवास ॥ ६५ ॥
नारायण सुख भोग में, मस्त सभी संसार ॥
कोऊ मस्त वा मौज में, देख्यो आंख पसार ॥६६॥

छबि निहार गोपाल की, जिहिं न होय आनंद।
नारायण तिहिं जानिये, यही चौथ को चंद ॥ ६७॥
नारायणते धन्य नर, जिन वश कीये पांच।
साहिब सों मुख ऊजरे, जग की लगी नआंच ॥६८॥
एक नारि औगुण भरी, एक तिया गुणवन्त।
नारायण सोई भली, जापै रीझत कन्त ॥ ६९ ॥
रूप रंग सुन्दर घनो, चतुर कुलवती नार
नारायण तौ का भयो, प्रीतम करत न प्यार ॥७० ॥
चंद्रवदन मृग सम नयन, गति गयंद मृदुबोल।
नारायण हरि भक्ति बिन, यह कौडी के मोल ॥७१॥
नारायण तौ का भयो, पाये नैन विशाल।
नैन वही जिन में बसे, श्रीराधा गोपाल ॥ ७२ ॥
लखी न जिन छबि श्याम की, कियोनपलभरध्यान।
नारायण ते जगत में, प्रगट निपट पाषान ॥ ७३ ॥
नारायण या जगत में, यह दो वस्तू सार।
सब सों मीठो बोलिबो, करबो पर उपकार ॥ ७४ ॥
नारायण परलोकमें, यह दो आवत काम।
देना मुष्टी अन्न की, लेना भगवत नाम ॥ ७५ ॥
बांट खाय हरिको भजे, तजे सकल अभिमान।
नारायण ता पुरुष को, उभय लोक कल्यान॥ ७६ ॥
कियो न मानत और को, परहित करत न आप।
नारायण ता पुरुषको, मुख देखे सो पाप ॥ ७७ ॥
रक्षा करी न जीव की, दियो न आदर दान।
नारायण ता पुरुष सों, रूख भलो फलवान ॥ ७८ ॥

देत फूल फल पात दल, तनक नीर तरु पाय ।
नारायण तासों गयो, खीर खाँड़ नित खाय ॥ ७९ ॥
नारायण दो बात को, दीजै सदा बिसार ।
करी बुराई और ने, आप कियो उपकार ॥ ८० ॥
दो बातन को भूलि मति, जो चाहत कल्यान ।
नारायण इक मौतकूं, दूजे श्रीभगवान ॥ ८१ ॥
वशीकरणके मन्त्र हैं, नारायण यह चार ।
रूप राग आधीनता, सेवा भलीप्रकार ॥ ८२ ॥
नारायण कीजै सदा, दुष्ट संग को त्याग ।
जिमि लुहार के ढिग परै, वदन चिंगारी आग ॥ ८३ ॥
फूली लता करीलकी, खिले मनोहर फूल ।
नारायण ताके निकट, भ्रमर न बैठत मूल ॥ ८४ ॥
नारायण ढिग सन्त के, गये न होत बिगार ।
ज्यों बिन मोल सुगन्धिता, मिलै समीप अतार ॥ ८५ ॥

सन्त लक्षण ।

तजि पर औगुण नीरको, क्षीर गुणनसों प्रीति ।
हंस सन्तकी सर्वदा, नारायण यह रीति ॥ ८६ ॥
तनक मान मनमें नहीं, सबसों राखत प्यार ॥
नारायण ता सन्तपै, बार बार बलिहार ॥ ८७ ॥
अति कृपालु संतोषवृति, युगल चरण में प्रीति ॥
नारायणते सन्त बर, कोमल वचन विनीति ॥ ८८ ॥
उदासीन जग सों रहै, यथा मान अपमान ।
नारायणते सन्तजन, निपुण भावना ध्यान ॥ ८९ ॥

मगन रहैं नित भजन में, चलत न चाल कुचाल।
नारायणते जानिये, यह लालनके लाल ॥ ९० ॥
परहित प्रीति उदार चित, विगत दंभ मद रोष।
नारायण दुखमें लखे, निज कर्मनको दोष ॥ ९१ ॥
भक्ति कल्पतरु पात गुण, कथा फूल बहु रंग।
नारायण हरिप्रेम फल, चाहत सन्त विहंग ॥ ९२ ॥
सन्त जगतमें सो सुखी, मैं मेरी को त्याग।
नारायण गोविन्द पद, दृढ राखत अनुराग ॥ ९३ ॥
जिनको पूरण भक्ति है, ते सब सों आधीन।
नारायण तजि मान मद, ध्यान सलिलके मीन ९४॥
नारायण हरि भक्तिकी, प्रथम यही पहँचान।
आप अमानी ह्व रहै, देत और को मान ॥ ९५ ॥
कपट गाँठि मनमें नहीं, सब सों सरल सुभाव।
नारायण ता भक्तकी, लगी किनारे नाँव ॥ ९६ ॥
जिनको मन हरिपद कमल, निशिदिन भ्रमर समान।
नारायण तिनसों मिले, कबूँ न होवै हान ॥ ९७ ॥
नारायण जो कृपाकरि, सन्त पधारें धाम।
आगे ते उठि प्रीति सों, कीजै दण्ड प्रणाम ॥ ९८ ॥
सन्त दरशकी लालसा, नारायण जो होय।
रीते कर नहिं जाइये, फूल पत्र फल तोय ॥ ९९ ॥
अजा पुत्रमें में कहत, दिये आपने प्रान।
नारायण मैना भली, खाय मलीदा सान ॥ १०० ॥
नारायण दुख सुख उभै, भ्रमत यथा दिन रात।
बिन बुलाय ज्यों आरहैं, बिना कहें त्यों जात १०१

नारायण हरिकृपाकी, तकत रहै नित बाट ।
जानहार जिमि पार को, निरखत नौका घाट॥ १०२॥

कृपानिधानकी शोभा ।

रतिपति छबिनिन्दितवदन, नीलजलजसमश्याम ।
नवयौवन मृदु हास वर, रूपराशि सुखधाम॥ १०३॥
ऋतु अनुसार सुहावने, अद्भुत पहरे चीर ।
जो निज छबिसों हरत हैं, धीरजहूको धीर॥ १०४ ॥
मोरमुकुटकी निरखि छबि, लाजत मदन किरोर ।
चन्द्रवदन सुख सदन पै, भावक नैन चकोर॥ १०५॥
जिन मोरन के पंख हरि, राखत अपने शीस ।
तिनके भागिनकी सखी, कौन करसके रीस॥ १०६ ॥
घुघरारी अलकावली, मुख पै देत बहार ।
रसिक मीन मनके लिये, कांटे अति अनियार १०७॥
मकराकृत कुण्डल श्रवण, झाईं परत कपोल ।
रूपसरोवर माहिं द्वै, मछरी करत कलोल॥ १०८ ॥
शुक लजात लखि नासिका, अद्भुत छबिकीसार ।
तामें इक मोती परयो, अजब सुराही दार॥ १०९ ॥
दशन पाँति मुतियन लरी, अधर ललाई पान ।
ताहू प हँसि हेरबो, को लखि बचै सुजान ॥ ११० ॥
मृदुमुसिक्यान निहारिके, धीर धरत है कौन ।
नारायण के तन तजैं, कै बौराके मौन ॥ १११ ॥
अधरामृत सम अधर रस, जानत बंशी सार ।
सप्त सुरन सो सप्त कर, कहत पुकार पुकार॥ ११२॥

रतनन की कंठी गरें, मुक्तमाल वनमाल।
त्रिविध ताप तीनों हरें, जो निरखत नँदलाल॥ ११३॥
हस्त कमल पै मणी मय, जगमगात कर फूल।
जिनकीछबिलखिशम्भुरिपु, गयोसकलसुधिभूल११४
उदर माहिं त्रिवली सुभग, नाभि रुचिर गंभीर।
छबि समुद्र के निकट अति, भई त्रिवेणी भीर११५॥
गजमुक्ता की लरी द्वै, अति अमोल छबिकन्द।
सो अद्भुत कटि कोंधनी, पहिर रह्योब्रजचन्द ११६॥
गोल गुलफ पै सजि रहे, नूपुर शोभा ऐन।
जिनकी धुनि सुनि जगतसो,मिटैलैन अरुदैन११७॥
युगल चरण दश अँगुरियां, दशधा भक्ति सुहाय।
नखनज्योतिलखिचन्द्रमा,गयो अकाशउडाय ११८॥
तरुवनकी लखि अरुणता, कविजन मन सकुचात।
इनकी उपमा का कहैं, पटतर नाहिं दिखात ११९॥
ब्रजबीथिन जब साँवरो, चलत सुचाल मतंग।
पग पगमें छबिकी झरी, होत चलै इकसंग॥ १२०॥
जे रसिकन उर नित बसें, निगमागमको सार।
नारायण तिन चरणकी, बार बार बलिहार॥ १२१॥
नन्दलाल कीरति कुमरि, कहिबेकूं यह दोय।
ज्यों तनकी छाया प्रगट, तनसे बिलग न होय१२२
याविधिसों जो रसिकजन, धरत दिवसनिशि ध्यान।
नारायण ताकूं सदा, गावत वेद पुरान॥ १२३॥
चलत फिरत बैठत उठत, लगी रहै यह आस।
श्याम राधिका निरखिबो, वृन्दाविपिन निवास१२४

नारायण होवै भलें, जो कछु होवनहार ।
हरिसों प्रीति लगायके, अब कहा सोच विचार १२५
नारायण अति कठिन है, हरि मिलिबेकी बाट ।
या मारग तब पग धरै, प्रथम शीश दे काट ॥ १२६ ॥

अथ प्रेमलक्षण ।

नारायण मनमें बसी, लोकलाज कुलकान ।
आशक होना श्याम को, हाँसी खेल न जान १२७ ॥
नेह डगरमें पग धरै, फेरि विचारै लाज ।
नारायण नेही नहीं, बातन को महराज ॥ १२८ ॥
चौंसर बिछी सनेहकी, लगे शीशके दाँव ।
नारायण आशक बिना, को खेलै चितचाव ॥ १२९ ॥
गढि गढि के बातें कहे, मन में तनक न प्रीत ।
नारायण कैसे मिले, साहब सांचे मीत ॥ १३० ॥
जो शिर सांटे हरि मिले, तो पुनि लीजै दौर ।
नारायण ऐसे न हो, गाहक आवे और ॥ १३१ ॥
सो क्यों सेवे बाग वन, गुल्मलता तरु मूल ।
नारायण जाके हृदय, फूल रह्यो वह फूल ॥ १३२ ॥
नारायण प्रीतम निकट, सोई पहुँचनहार ।
गेंद बनावे शीशकी, खेले बीच बजार ॥ १३३ ॥
लगन लगन सबही कहें, लगन कहावे सोय ।
नारायण जा लग्नमें, तन मनदीजे खोय ॥ १३४ ॥

नर संसारी लगनमें, दुख सुख सहैं करोर।
नारायण हरि प्रीतिमें, जो होवै सो थोर ॥ १३५ ॥
नारायण हरि लगन में, यह पांचों न सुहात।
विषय भोग निद्रा हँसी, जगत प्रीति बहुबात ॥१३६॥
नारायण घाटी कठिन, जहां नेहको धाम।
बिकल मूर्च्छा ससकिबो, यह मगमेंविश्राम॥१३७॥
नारायण या डगर में, कोऊ चलत है बीर।
पग पग में बरछी लगै,श्वास श्वासमें तीर ॥ १३८ ॥
लगन लगी गोपालकी, भूली तनकी सार।
नारायण मछली भयो, श्यामरूप जलधार ॥ १३९ ॥
वर्णाश्रम उरझे कोऊ, विधि निषेध व्रत नेम।
नारायण बिरले लखें, जिन मिलि उपजे प्रेम१४०॥
प्रेम नगर प्रीतम वसै, पै नारायण नेत ।
जानहार या ग्राम को, कोउ दिखाई देत ॥ १४१ ॥
प्रेमी छुट या प्रेम की, और न जानत सार।
नारायण बिन जौहरी, जैसे लाल बजार ॥ १४२ ॥
तौलौं यह फांसी गरे, वर्णाश्रम व्रत नेम।
नारायण जौलौं नहीं, मुँह दिखरायो प्रेम ॥ १४३ ॥
प्रेम सहित अँसुवन भरे, धरे युगलको ध्यान।
नारायण ता भक्त को, जगमें दुर्लभ जान ॥ १४४ ॥
नारायण जाके हिये, उपजत प्रेम प्रधान।
प्रथम हि वाकी हरत है, लोकलाज कुलकान॥१४५॥
नारायण या प्रेम को, नद उमड़त जा ठौर।
पलमें लाज मर्य्यादके, तट काटत है दौर ॥ १४६ ॥

विधि निषेध श्रुति वेदकी, मेंड़ देत सब मेट ।
नारायण जाके वदन, लागत प्रेम चपेट ॥ १४७ ॥
नारायण ज्ञाता अगम, सबकी सम्मति येह ।
बिना प्रेम कर्मादि विधि, ज्यों ऊसरमें मेह ॥ १४८ ॥
नारायण जप योग तप, सबसों प्रेम प्रवीन ।
प्रेम हरीकूं करत हैं, प्रेमीके आधीन ॥ १४९ ॥
नारायण यह प्रेम सुख, मुखसों कह्यो न जाय ।
ज्यों गूँगो गुड़ खात है, सैनन स्वाद लखाय ॥ १५० ॥
प्रेम खेल सबसों कठिन, खेलत कोउ सुजान ।
नारायण बिन प्रेम के, कहा प्रेम पहँचान ॥ १५१ ॥
जिने प्रेम-प्यालो पियो, झूमत तिनके नैन ।
नारायण वा रूप मद, छके रहैं दिन रैन ॥ १५२ ॥
नारायण जाके हिये, लगी प्रेमकी रौर ।
ताही को जीवन सुफल, दिन काटें सब और ॥ १५३ ॥
नेम धर्म धीरज समझ, सोच विचार अनेक ।
नारायण प्रेमी निकट, इनमें रहै न एक ॥ १५४ ॥
रूप छके झूमत रहैं, तन को तनक न ज्ञान ।
नारायण दृग जल भरे, यही प्रेम पहँचान ॥ १५५ ॥
है न्यारो सब पन्थ ते, प्रेम पन्थ अभिराम ।
नारायण यामें चलत, वेगि मिलै पिय धाम ॥ १५६ ॥
मन में लागी चटपटी, कब निरखूं घनश्याम ।
नारायण भूल्यो सबी, खान पान विश्राम ॥ १५७ ॥
सुनत न काहू की कही, कहै न अपनी बात ।
नारायण वा रूप में, मगन रहें दिन रात ॥ १५८ ॥

देह गेह की सुधि नहीं, टूटि गई जग प्रीत ।
नारायण गावत फिरै, प्रेम भरे रसगीत ॥ १५९ ॥
धरत कहूं पग परत कित, सुरति नहीं इकठौर ।
नारायण प्रीतम बिना, दीखत नहिं कछु और १६० ॥
भयो बावरो प्रेममें, डोलत गलियन माहिं ।
नारायण हरि लग्नमें, यह कछु अचरज नाहिं १६१ ॥
लतन तरें ठाढौ कबू, कबहू यमुना तीर ।
नारायण नैनन बसी, मूरति श्याम शरीर ॥ १६२ ॥
प्रेम सहित गद गद गिरा, कढत न मुख सो बात ।
नारायण महबूब बिन, और न कछू सुहात ॥ १६३ ॥
कह्यो चहै कछु कहत कछु, नयन नीर सुरभंग ।
नारायण बौरा भयो, लग्यो प्रेमको रंग ॥ १६४ ॥
कबू हँसै रोवै कबू, नाचत करि गुण गान ।
नारायण सुधि तन नहीं, लग्यो प्रेम को बान १६५ ॥
सुरति लगी वा ध्यान में, सुनत और की बात ।
नारायण उत्तर दियो, मृदुल मनोहर गात ॥ १६६ ॥
जाके मन यह छबि बसी, सोवतहू बररात ।
नारायण कुण्डल निकट, अद्भुत अकल सुहात १६७
नारायण जाके दृगन, सुन्दर श्याम समाय ।
फूल पात फल डार में, ताकूं वही दिखाय ॥ १६८ ॥
ब्रह्मादिकके भोग सुख, विष सम लागत ताहि ।
नारायण ब्रजचन्दकी, लगन लगी है जाहि ॥ १६९ ॥
नारायण हरि प्रीतिमें, जाको तन मन चूर ।
ताहि न ममता और सों, निकट रहौ वा दूर ॥ १७० ॥

गुण गावै गोपाल के, भरि लावै दृग नीर ।
नारायण नाहिं कल परै, बिन देखे बलबीर ॥१७१॥
जाके मन में बसि रही, मोहन की मुसिक्यान ।
नारायण ताके हिये, और न लागत ज्ञान ॥ १७२ ॥
जो घायल हरि दृगनके, परे प्रेमके खेत ।
नारायण सुनि श्याम गुण, एक संग रो देत ॥१७३॥
नारायण जाको हियो, बिंध्यो श्याम दृग बान ।
जगके भावें जीवतो, है वह मृतकसमान ॥ १७४ ॥
सुख सम्पति धन धामकी, ताहि न मनमें आस ।
नारायण जाके हिये, निशिदिन प्रेम प्रकाश १७५॥
नारायण जिनके हृदय, प्रीति लगी घनश्याम ।
जाति पांति कुल सों गये, रहै न काहू काम १७६॥
नारायण तब जानिये, लगन लगी या काल ।
जित तित में दृष्टी परै, दीखैं मोहनलाल ॥ १७७ ॥
नारायण ब्रजचन्द के, रूप पयोनिधि माहिं ।
डूबत बहुतै एक जन, उछरत एकौ नाहिं ॥ १७८ ॥
परा भक्ति अरु ज्ञान में, नेक नहीं कछु भेद ।
नारायण सुख प्रेम है, कहैं सन्त अरु वेद ॥ १७९ ॥
परा भक्ति याको कहैं, जित तित श्याम दिखात ।
नारायण सों ज्ञान है, पूरण ब्रह्म लखात ॥ १८० ॥
नन्दलाल दशरथ कुमर, उभय एक सरकार ।
नारायण जो दो कहैं, ते नर बिना बिचार ॥१८१॥

नारायण सब एक हैं, रंग रूप तिल रेख।
उनके दृग गम्भीर हैं, इनके चपल विशेष॥ १८२॥
नारायण दो बात सों, अधिक और नहिं बात।
रसिकनको सत्संग नित, युगलध्यान दिनरात॥ १८३॥
गुण मन्दिर सुन्दर युगल, मंगल मोद निधान।
नारायण निज चरण रति, यह दीजै वरदान॥ १८४॥

इति श्रीवृन्दावननिवासी श्रीनारायणस्वामीजी कृत
श्रीअनुरागरस सम्पूर्ण।

समाप्तोऽयं ग्रन्थः॥

पुस्तकोंके मिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्-प्रेस (बंबई.)

इति

श्रीनारायणस्वामीजीकृत-
अनुरागरस
संपूर्ण ।

यह पुस्तक खेमराज श्रीकृष्णदासने बम्बई खेतवाडी ७ वीं गली
खम्बाटा लैन निज " श्रीवेंकटेश्वर " स्टीम् प्रेसमें अपने लिये
छापकर यहीं प्रकाशित किया ।